11, Aldwych, W. C. 2

THE BHAVISHYA

Telephone : 205
Telegrams 'Bhavishya'

सम्पादक :—
श्री० त्रिवेणीप्रसाद, बी० ए०

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... १२) रु०
छः माही चन्दा ... ६॥) रु०
तिमाही चन्दा ... ३॥) रु०
एक प्रति का मूल्य चार आने
Annas Four Per Copy

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़्री कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़्ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टिपात करना चाहिए।

वर्ष १, खण्ड ३

इलाहाबाद—बृहस्पतिवार : २१ मई, १९३१

संख्या १०, पूर्ण संख्या ३४

सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता—श्री० के० एफ़० नॉरिमन (बम्बई)

एक प्रति का मूल्य
दस आने मात्र !

सम्पादक :—
श्री० त्रिवेणीप्रसाद, बी० ए०, सं० 'भविष्य'

पृष्ठ-संख्या १३२
चित्र-संख्या १००
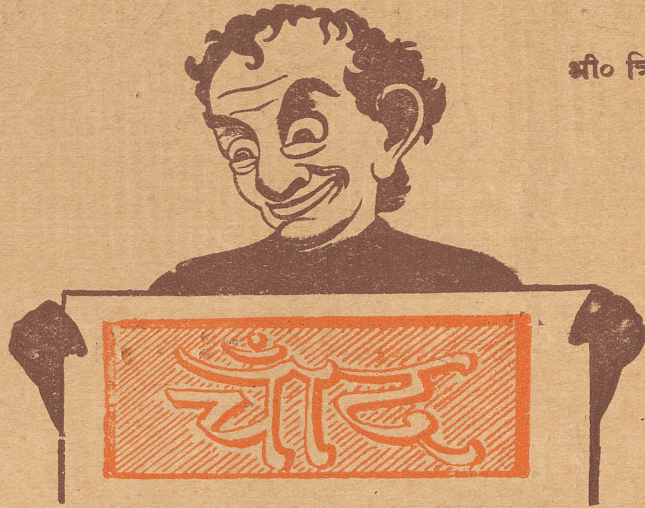
वार्षिक चन्दा ६॥) रु०
छः माही चन्दा ३॥) रु०

आख़िर 'चाँद' में गुण क्या है ?

'चाँद' के ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखाना सद्‌विचारों को आमन्त्रित करना है।

'चाँद' ही समस्त भारत में ऐसा प्रभावशाली पत्र रहा है, जिसने अपने थोड़े से ही जीवन में समाज तथा देश में खल-बली मचा दी है।

'चाँद' की प्रशंसा सभी श्रेणी के विचारशील व्यक्तियों, राजाओं, महाराजाओं, बड़े-बड़े प्रसिद्ध नेताओं और आला अफ़सरों ने की है। सभी भाषा के पत्र-पत्रिकाओं ने जितनी प्रशंसा 'चाँद' की की है, उतनी किसी पत्र को नहीं।

'चाँद' ही समस्त भारत में ऐसा प्रभावशाली एवं भाग्यशाली पत्र है, जो निर्धन की कुटिया से लेकर राजा-महाराजों की अट्टालिकाओं तक आपको मिलेगा।

'चाँद' तथा इस संस्था ने पत्र-पत्रिकाओं तथा अपने प्रकाशनों द्वारा थोड़ी-बहुत—जो भी सेवा भारतीय समाज और देश की की है, वह सहज ही विस्मरण करने की बात नहीं है।

'चाँद' के प्रत्येक अङ्क में आपको गम्भीर से गम्भीर राजनैतिक एवं सामाजिक लेखमालाओं के अतिरिक्त, सैकड़ों एकरङ्गे, दुरङ्गे और तिरङ्गे चित्र तथा कार्टून मिलेंगे, जो किसी भी पत्र-पत्रिकाओं में आपको नहीं मिल सकते।

'चाँद' में प्रकाशित कविताओं के सम्बन्ध में कुछ कहना व्यर्थ है। जिस पत्रिका की उर्दू शायरी का सम्पादन कविवर "बिस्मिल" करते हों और हिन्दी कविताओं का सम्पादन करते हों कविवर आनन्दीप्रसाद जी श्रीवास्तव और प्रोफ़ेसर रामकुमार वर्मा, एम० ए०, जैसे सुविख्यात कवि, उस पत्रिका की कविताओं से कौन टक्कर ले सकता है ?

'चाँद' में प्रकाशित लेखों के सम्बन्ध में पाठकों को स्वयं निर्णय करना चाहिए। हम इस सिलसिले में केवल इतना ही निवेदन करना चाहते हैं, कि सभी सुप्रसिद्ध लेखकों का अभिन्न सहयोग 'चाँद' को प्राप्त है। फिर श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, श्रो० विजयानन्द (दुबे जी) और हिज़ होलीनेस श्री १०८ श्री० जगद्‌गुरु के चुटीले विनोद आपको किस पत्र-पत्रिका में मिलेंगे ??

यदि अभी तक आप 'चाँद' के ग्राहक नहीं हैं, तो इन्हीं पंक्तियों को हमारा निमन्त्रण समझें और इष्ट-मित्रों सहित 'चाँद' के ग्राहकों की श्रेणी में नाम लिखा कर हमें और भी उत्साह से सेवा करने का अवसर प्रदान करें।

विज्ञापनदाता भी भरपूर लाभ उठा सकते हैं

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

वर्ष १, खण्ड ३ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार ; २१ मई, १९३१ | सं० १०, पूर्ण सं० ३४

बर्मा में पुलिस-अफ़सरों की निर्मम हत्याएँ और शस्त्रों की लूट

कलकत्ते के चीनी और जापानियों पर विदेश से शस्त्र मँगाने का सन्देह

फ़ीरोज़पुर ज़िले में पुलिस ने गोलियाँ चला दीं :: काबुल में बम मिले !

गोलमेज़ परिषद का दूसरा अधिवेशन सितम्बर के पहिले सप्ताह से प्रारम्भ होगा

(एसोसिएटेड प्रेस द्वारा २०वीं मई की रात तक आए हुए 'भविष्य' के ख़ास तार)

—शिमला से २०वीं मई का तार है कि श्री० आर० एस० राजवाडे, (भूतपूर्व सम्पादक "कर्मयोगी") जिन्हें शोलापूर मार्शल लॉ के सम्बन्ध में एक लेख लिखने के अपराध में ७ वर्ष का कठिन कारावास दण्ड दिया गया था, रिहा कर दिए गए हैं।

—नैनीताल का २०वीं मई का तार है, कि महात्मा गाँधी ने १९वीं मई की शाम को एक सार्वजनिक सभा में व्याख्यान देते हुए कहा, कि जब तक भारतवासी खद्दर का उपयोग तथा इसका प्रचार नहीं करते, तब तक गोलमेज़ परिषद में जाने से कोई लाभ नहीं हो सकता। क्योंकि बिना इसके भारतवासी अपने उस ध्येय को प्राप्त नहीं कर सकते, जिसके लिए कॉङ्ग्रेस उद्योग कर रही है। यह सभा एक स्थान में हुई थी, जिसके लिए गवर्नमेण्ट ने विशेष रूप से आज्ञा देने की कृपा की थी।

—पेशावर का १९वीं मई का तार है, कि काबुल में कुछ ऐसे विद्यार्थी गिरफ़्तार कर लिए गए हैं, जिनके पास बम बरामद हुए हैं।

—२० मई का सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट का जो तार वॉयसराय के पास आज आया है, उसमें कहा गया है, कि गवर्नमेण्ट ने फ़ेडरल स्ट्रक्चर कमिटी का अधिवेशन आगामी २९ जून को करना स्वीकार कर लिया है और गोलमेज़ परिषद का दूसरा अधिवेशन लन्दन में सितम्बर के पहिले सप्ताह से आरम्भ किया जायगा।

—लन्दन, का ११ वीं मई का समाचार है, कि इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट के हाउस ऑफ़ कॉमन्स में मि० बेन ने अर्ल विण्टरटन से कहा कि भारत-सरकार से कहा जाए कि वह बर्मा-विद्रोह सम्बन्धी सम्पूर्ण विवरण भेज दे, ताकि हाउस को उस पर विचार करने का अवसर मिले। अपूर्ण सूचनाओं के अनुसार सुनने में आया है, कि अब तक एक हज़ार विद्रोही मारे गए हैं और दो हज़ार गिरफ़्तार किए गए हैं।

—रङ्गून की १९वीं मई की एक ख़बर है कि यामथीन में कुछ विद्रोहात्मक पर्चे पाए गए हैं। इन पर्चों में भद्र अवज्ञा आन्दोलन और लगानबन्दी के सम्बन्ध की बातें थीं। कहा जाता है कि तुङ्गू के पुङ्गियों (बर्मन-धर्म-गुरुओं) ने इन पर्चों को मिन्वृ ज़िले में बँटवाया था।

—बर्मा की १८वीं मई की एक ख़बर है कि विद्रोहियों ने सर्वे-विभाग के डाइरेक्टर कर्नल मॉर्शीड को एक जङ्गल में मार डाला है। कहा जाता है, कि वे घोड़े पर सैर करने के लिए गए थे, किन्तु उनका घोड़ा ख़ाली लौटा और उसकी ज़ीन पर ख़ून के दाग़ लगे हुए थे। खोज करने पर कर्नल मॉर्शीड की लाश २४ घण्टे बाद शहर से ४ मील की दूरी पर एक जङ्गल में पाई गई। उनके शरीर पर गोली के चिन्ह थे।

—इनसीन (बर्मा) के समाचारों से पता चलता है कि वहाँ ६ डकैतियाँ डाली गई हैं। विद्रोहियों ने कई पुलिस की चौकियाँ गत सप्ताह में जला डालीं और बन्दूक़ें, रिवॉल्वर तथा गोलियाँ लूट ले गए। कहा जाता है कि विद्रोही ख़ास तौर से शस्त्रों के संग्रह में विशेष तल्लीन हैं।

—थारावड्डी के समीप पुलिस वालों की विद्रोहियों के साथ मुठभेड़ हुई, जिसमें कैप्टेन जोन्स घायल हुए। विद्रोहियों की ओर के कुछ लोग भी घायल हुए तथा मारे गए।

—हाल ही में बर्मा-सरकार ने एक वक्तव्य प्रकाशित किया है, जिससे पता चलता है, कि वहाँ के विद्रोह को शान्त करने में बहुत कुछ सफलता मिली है। किन्तु इसी वक्तव्य में इस बात का भी ज़िक्र आया है, कि वहाँ के प्रधान-सेनाध्यक्ष की सलाह से बर्मा-सरकार भारत से अतिरिक्त सेना मँगाने वाली है।

—शिमला के एक समाचार से पता चलता है कि एक असाधारण गज़ट के द्वारा हेनज़ादा में भी विद्रोह ऑर्डिनेन्स जारी किए जाने की घोषणा की गई है।

—गत १९वीं मई का फ़िरोज़पुर का एक समाचार है कि वहाँ पुलिस और गाँव वालों में एक भयङ्कर मुठभेड़ हो गई, जिसके फल-स्वरूप ५ व्यक्ति मरे और १५ घायल हुए। कहा जाता है कि अधिकारीगण बहुत दिनों से, खुयान सरवर नामक एक गाँव में, पुलिस स्टेशन स्थापित करना चाहते थे। किन्तु उक्त गाँव के कुछ लोग यह बात पसन्द नहीं करते थे। इस कारण, जब पुलिस-स्टेशन वहाँ क़ायम किया गया तो गाँव वालों ने पुलिस को अपने कुओं पर आने देने से इन्कार कर दिया। १६वीं मई को कुछ पुलिस वाले एक कुएँ पर गए। कहा जाता है कि पुलिस वालों की इस धृष्टता पर गाँव वाले नाराज़ हो गए, और क़रीब २५० लठबन्द व्यक्तियों ने उन्हें घेर लिया और उन्हें पीटना शुरू किया। पुलिस वालों ने लाचार होकर फ़ायरें शुरू कर दीं, जिसके फल-स्वरूप ३ व्यक्ति मरे और ७ बुरी तरह घायल हुए। इन घायलों में से दो को और मृत्यु हो गई है। १० व्यक्तियों को हल्की चोट आई हैं। ३० व्यक्ति इस सम्बन्ध में गिरफ़्तार किए गए हैं। मामले की जाँच हो रही है।

—पटने का १९वीं मई का समाचार है, कि पुलिस ने पटना रेलवे-स्टेशन पर दो नवयुवकों को गिरफ़्तार किया है। इनमें से एक के पास से एक रिवॉल्वर मिला है।

—लाहौर का १६वीं मई का समाचार है, कि 'ज़मींदार' पत्र के सम्पादक, प्रकाशक तथा मुद्रक सय्यद ग़ुलाम हुसैन फ़ॉरेनर्स एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार किए गए। कहा जाता है कि यह गिरफ़्तारी 'ज़मींदार' में प्रकाशित उन लेखों के सम्बन्ध में हुई है, जिनमें अफ़ग़ानिस्तान के भूतपूर्व अमीर अमानुल्ला का पक्ष-समर्थन किया गया है और अफ़ग़ानिस्तान की वर्तमान सरकार की कड़ी आलोचना की गई है। शाह साहब को ज़मानत पर रिहा कर दिया गया था, किन्तु शाम को आप फिर गिरफ़्तार कर लिए गए।

—कलकत्ते का १९वीं मई का एक समाचार है, कि वहाँ ७२ व्यक्ति विदेशों से गुप्त रूप से शस्त्र मँगाने के अभियोग में गिरफ़्तार किए गए हैं। इनमें चीनी; जापानी तथा कुछ हिन्दू और मुसलमान भी शामिल हैं।

पुलिस का कहना है कि ये व्यक्ति, अलग-अलग या मिल कर, विदेशों से शस्त्र मँगाते थे, जिन्हें उन्होंने कलकत्ते में छिपा रक्खा है।

सभी ज़मानत पर छोड़े गए हैं।

—पेशावर का १५वीं मई का समाचार है, कि अफ़ग़ानिस्तान के अमीर नादिरशाह ने फ़्रान्स से, १० हज़ार बन्दूक़ें और ७० हज़ार पौण्ड की लागत की एक करोड़ कारतूसें मँगाई हैं। इससे पहले, अफ़ग़ानिस्तान में लड़ाई का इतना सामान एक साथ कभी भी नहीं मँगाया गया था।

—सत्याग्रह आन्दोलन के समय, जलालपुर और बारडोली तालुक़ों में जिन लोगों ने ज़ब्त-शुदा जायदादें ख़रीदी थीं, उनमें से अनेक उन्हें लौटाने के लिए तैयार हो गए हैं। श्री० मानकजी धानजी शा, और श्री० कवासजी बहराम शा ने १८१ एकड़ ज़मीन अपने वास्तविक मालिक के पास लौटा दी है। मि० बी० जी० मेदीवाला नामक एक सज्जन ने भी ५० एकड़ ज़मीन लौटा दी है।

—अहमदाबाद का १६वीं मई के एक समाचार से विदित होता है, कि बालासिनोर स्टेट के १५ गाँवों के पट्टीदारों ने बेगार-प्रथा के प्रतिवाद में, स्टेट छोड़ दिया है। वे इन्दराना नामक गाँव के समीप, पेड़ों के नीचे दिन काट रहे हैं। वे इस प्रथा का प्रतिवाद करने के लिए एक डेपूटेशन बना कर, पोलिटिकल एजेण्ट के पास भी गए थे, किन्तु उन्होंने उस डेपुटेशन को बालासिनोर स्टेट के नवाब के पास जाने के लिए कहा। मोदासा और कपदरञ्ज कॉङ्ग्रेस कमिटियों के सभापति भी इसी मामले में, नवाब साहब से मिलने गए हैं।

—मथुरा की १५वीं मई की एक ख़बर है कि श्री०रामगोपाल आज़ाद, १०वीं मई के अपने एक भाषण के सम्बन्ध में १२४-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—ढाका से दिनदहाड़े एक भीषण डकैती होने की ख़बर आई है। कहा जाता है कि गत १६वीं मई को, एक पोस्ट-ऑफ़िस के इन्स्पेक्टर ४ डाकियों के साथ; लॉरी पर रुपयों के थैले लेकर जा रहे थे। अचानक ४ हथियारबन्द नवयुवकों ने लॉरी घेर ली, और ८००) रुपए का एक थैला लेकर ज़नाना मिशन के कम्पाउण्ड की चहारदीवारी फाँद कर वे चम्पत हो गए। कुछ लोगों ने उनका पीछा किया, किन्तु उन नवयुवकों ने अपनी रिवॉल्वरों से फ़ायर शुरू कर दी, जिससे पीछा करने वालों को उन्हें पकड़ने का साहस नहीं हुआ। किसी को चोट नहीं आई है। अभी तक कोई गिरफ़्तार नहीं किया गया है।

—अमृतसर से ५ बालकों के एक भीषण धड़ाके से घायल होने की ख़बर आई है। घायल बालकों में से एक के कहने से पता चलता है, कि उसने किसी स्थान पर छोटी गोली के समान एक गोल वस्तु पाई और उसे पटाका समझ कर उसने अपने एक साथी को दिखलाया। दोनों ने सलाह कर यह निश्चित किया कि यह पटाका स्कूल में पटका जाय। इस निश्चय के अनुसार वह लड़का उस वस्तु को स्कूल ले गया और एक ईंट पर उसे रख कर दूसरी ईंट से उस पर आघात किया। फलस्वरूप ५ लड़के, जो यह तमाशा देखने के लिए वहाँ इकट्ठे हुए थे, बुरी तरह घायल हुए। लड़के अस्पताल में हैं। कहा जाता है, उस गोली में कुछ विस्फोटक पदार्थ थे। पुलिस इस मामले की जाँच कर रही है।

—कलकत्ते का १५वीं मई का समाचार है, कि कॉर्पोरेशन प्राइमरी स्कूल के दो शिक्षक श्री० धीरेन्द्र-कुमार और श्री० सुकुमार गुह, बङ्गाल क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

—कलकत्ते में महिलाओं ने 'पिकेटिङ्ग बोर्ड' नामक एक नई संस्था खोली है। गाँधी-इर्विन समझौते के बाद, इस संस्था की ३५ महिलाओं ने पहले-पहल बड़ा बाज़ार में पिकेटिङ्ग शुरू की। इस पिकेटिङ्ग से वहाँ के व्यापारियों में बड़ी खलबली मच गई और बहुतों ने विदेशी कपड़े न मँगाने की प्रतिज्ञा की है।

—गौहाटी के एक पेन्शनयाफ़्ता सिविल-सर्जन श्री० एच० के० दास ने गत माह में 'नदौर रैयत-कॉन्फ़्रेन्स' का सभापतित्व ग्रहण किया था। आपने अपने अभिभाषण में भगतसिंह के सम्बन्ध में भी कुछ कहा था।

अब ख़बर मिली है कि आसाम-सरकार के चीफ़ सेक्रेटरी ने उनके पास इस आशय की एक सूचना भेजी है, कि इस 'बदचलनी' के कारण उनकी पेन्शन क्यों न ज़ब्त कर ली जाय?

सीमा-प्रान्त तथा पञ्जाब प्रान्तीय हिन्दू-परिषद

सीमा-प्रान्त और पञ्जाब प्रान्तीय हिन्दू-परिषद ने निर्वाचन के सम्बन्ध में निम्न-लिखित प्रस्ताव पास किया है:—

"यह परिषद पृथक निर्वाचन का विरोध करती है, क्योंकि यह राष्ट्रीयता तथा प्रजातन्त्र-शासन के विरुद्ध है। यदि सारे भारत में संरक्षणरहित संयुक्त निर्वाचन को अपनाया जाय तो यह परिषद उसका हार्दिक स्वागत करेगी। यदि ऐसा न हो सके तो प्रत्येक प्रान्त में संख्या के अनुसार अल्प-मत वालों के लिए संरक्षण की व्यवस्था की जाय। यदि इसमें भी सफलता न मिले तो अल्प-मत सम्बन्धी प्रश्न 'लीग ऑफ़ नेशन्स' के सम्मुख निर्णय के लिए उपस्थित किया जाय।"

—लखनऊ के समाचारों से मालूम होता है कि गत १०वीं मई को सलेमपुर के राजा साहब ने पृथक निर्वाचन-दिवस मनाने के अभिप्राय से एक सभा करने की चेष्टा की थी। बड़ी मुश्किल से, निश्चित समय से ३ घण्टे बाद शम्सुल-उलेमा अब्दुल हमीद के सभापतित्व में सभा शुरू हुई। मुश्किल से ५०० मनुष्य सभा में एकत्रित हुए होंगे। मि० किदवई आदि राष्ट्रीय नेताओं के आ जाने से सभापति ने अपना आसन त्याग दिया, और ख़ाँ बहादुर मेहदी हसन को उनका स्थान ग्रहण करना पड़ा। जब संयुक्त निर्वाचन के विरोध में प्रस्ताव उपस्थित किया गया, तो मि० ज़कीरअली ने उसका विरोध किया। प्रस्ताव का समर्थन करने वाले मि० बशीर अहमद के भाषण से सभा में चारों ओर खलबली मच गई। श्रोताओं ने उनका भाषण सुनने से इन्कार किया और राष्ट्रीय नेता श्री० ख़लिक़ुज़्ज़माँ से भाषण देने के लिए प्रार्थना की गई। श्री० ख़लिक़ुज़्ज़माँ ने संयुक्त निर्वाचन पर ख़ूब ज़ोरदार भाषण दिया। राष्ट्रीयतावादी नेताओं के भाषण के बाद लोग अपने-अपने घर जाने लगे और वोट लेने के समय केवल १०० मनुष्य सभा में उपस्थित रह गए। पृथक निर्वाचन सम्बन्धी प्रस्ताव के विरुद्ध ही अधिक लोगों ने वोट दिया, किन्तु सभापति ने प्रस्ताव पास कर दिया। जब उनसे वोट गिनने के लिए कहा गया, तो उन्होंने सभा भङ्ग कर दी।

ज़मींदार की ज़्यादती

एटा के एक ज़मींदार के घृणित अत्याचार की एक ख़बर मिली है। कहा जाता है कि आगरा के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता श्री० मुन्शीलाल गोस्वामी को, ज़मींदार दलजीतसिंह ने अपने नौकरों द्वारा बुरी तरह पिटवाया। जब इससे भी उसे सन्तोष नहीं हुआ, तो उन्हें अपनी गढ़ी के भीतर ले जाकर स्वयं भी उसने पीटा। कहा जाता है, कि वे जूतों से पीटे गए। यह समाचार पाते ही आस-पास के गाँवों में सनसनी फैल गई और क़रीब ३ हज़ार किसानों ने, काले झण्डों के साथ एक जुलूस निकाला। एक सभा भी की गई, जिसमें ज़मींदार के घृणित कार्य की निन्दा की गई।

कहा जाता है कि ज़मींदार के कोप का कारण यह है, कि श्री० मुन्शीलाल गोस्वामी ने किसानों को सङ्गठित बनाना तथा उनके बीच में स्वयंसेवक भर्त्ती करना शुरू किया था। इस सङ्गठन के कारण वहाँ के किसान, ज़मींदार के अत्याचारों को सहन करने से इन्कार करते थे। कहा जाता है कि गोस्वामी जी अदालती कारंवाई करने का विचार कर रहे हैं।

—मुल्तान का १२वीं मई का समाचार है, कि आज फ़िरोज़दीन नामक एक व्यक्ति ने मॉण्टगुमरी जेल में नूरा नामक एक व्यक्ति की हत्या के सम्बन्ध में अपना बयान दिया।

गवाह ने कहा कि मैं १२४-ए धारा के अनुसार गिरफ़्तार किया गया था, और घटना के समय जेल में ही था। उसने आगे कहा कि जब मैं ६ नं० के बैरक में था, उसी समय मुझे चिल्लाने की आवाज़ सुनाई पड़ी। घटनास्थल पर पहुँच कर मैंने देखा कि एक क़ैदी ज़मीन पर पड़ा हुआ है, और गुरुदत्तसिंह उसकी छाती पर बैठा हुआ है। ७ या ८ अन्य मनुष्य उसे लाठी तथा घूसों से मार रहे थे। दो आदमी नूरा की टाँग पकड़े हुए थे, और एक मनुष्य उसको गुदा में एक डण्डा ठूँस रहा था। यह घटना देख कर मैं अपने बैरक में लौट गया और यह बात मैंने अन्य क़ैदियों से कही। सेशन्स जज ने अभियुक्त को एक वर्ष का कठिन कारावास दण्ड दिया है।

—पाठकों को विदित होगा कि गत १ली मई को मौ० शौकतअली मेरठ गए थे, किन्तु वहाँ वह अपना विष-वमन नहीं कर सके थे; जिस समय मौलाना साहब मेरठ स्टेशन पर उतरे, उसी समय दूसरी गाड़ी से वहाँ के कलक्टर साहब भी उतरे। कलक्टर साहब ने मौलाना का स्वागत करते हुए कहा कि आप यहाँ भाषण नहीं दे सकते। यही कारण था कि मौलाना साहब ने वहाँ से अपना बोरिया-बँधना लेकर चलने में ही ख़ैरियत समझा था।

—गत मास के पिछले सप्ताह लन्दन की एक सभा में भारत के सम्बन्ध में भाषण देते हुए मि० लॉयड जॉर्ज ने कहा था कि भारत की समस्या वर्तमान काल की एक महत्वपूर्ण समस्या है। उसे अपनी स्वतन्त्रता की चिन्ता है और हमें अपने व्यापार की। भारत के राजनीतिज्ञ एक स्वर से औपनिवेशिक शासन-विधान माँग रहे हैं। मैं अनुभव करता हूँ, कि इस माँग में ज़ोर है। परन्तु हमारे मतानुसार औपनिवेशिक स्वराज्य और पूर्ण स्वतन्त्रता, जिसके सम्बन्ध में लाहौर कॉङ्ग्रेस ने प्रस्ताव स्वीकृत किया है, कोई अन्तर नहीं है। मैं ब्रिटिश सरकार को परामर्श दूँगा कि अगर वह भारत को औपनिवेशिक स्वराज्य देना चाहती है तो उचित यह होगा कि पूर्ण स्वाधीनता ही दे दे। क्योंकि संरक्षण के जिस अधिकार को अपने हाथों में रखने के लिए हम पूर्ण स्वतन्त्रता देने से इन्कार करते हैं, वह औपनिवेशिक स्वराज्य देने से भारत के हाथों में चला जाता है!

"कुत्तों और विदेशियों के लिए स्थान नहीं है"

युवक यदि उठ खड़े हों तो वे क्या नहीं कर सकते हैं ?

केरल की छात्र-परिषद में श्री० के० एफ़० नॉरिमन की गर्जना

"हमारे अधःपतन का एकमात्र कारण हमारे शासकों की अर्थ-शोषण नीति है"

केरल की छात्र-परिषद के सभापति श्री० के० एफ़० नॉरिमन ने अभिभाषण देते हुए कहा :—

"युवको, इस समय हमारे सामने एक गम्भीर समस्या उपस्थित है; वह है देश की पूर्ण स्वाधीनता। यदि यह समस्या हल हो जाय तो हमारी अन्य बुराइयाँ भी सहज ही दूर हो जायँगी। युवको, इसलिए आपसे मेरा अनुरोध है कि इस समय पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति के लिए अपने समस्त विवादों को मिटा कर आप अपनी पूर्ण शक्ति स्वाधीनता की प्राप्ति में लगा दें। जब तक देश विदेशी शासन की ज़ंजीर से बँधा है, तब तक आपकी डिग्रियों और सनदों से किसी प्रकार के लाभ की आशा नहीं। जब तक यह ग़ुलामी, आपके अस्तित्व को अपमानजनक सिद्ध कर रही है, आपके दिल और दिमाग़ पर असर कर रही है, तब तक छात्र-वृत्तियों और तमग़ों का मूल्य कुछ भी नहीं है। यह दासता आपके शरीर और आत्मा की तौहीन कर, घर और बाहर यह सिद्ध कर रही है, कि आप पतनोन्मुख हैं! अपढ़, किन्तु स्वतन्त्र रहना अच्छा है, किन्तु विद्वान और पराधीन होना अच्छा नहीं। आप में जो जितना ही अधिक शिक्षित है, वह उतना ही बड़ा ग़ुलाम है। स्वामी विवेकानन्द ने एक बार युवकों को सलाह दी थी कि 'अपनी सारी किताबें, सारी सनदें समुद्र में फेंक दो और निश्चिन्त होकर देश की स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करो।

राष्ट्र और नवयुवक

"युवको! आप ही देश के जीवन और देश की आशा हैं। मेरे इस कथन में ज़रा भी अत्युक्ति नहीं है। देश के वयोवृद्ध नेता सोच सकते हैं, विचार सकते हैं और स्कीमें बना सकते हैं, किन्तु उन विचारों और उन स्कीमों को कार्य-रूप में परिणत करने की शक्ति युवकों में ही है। इसके लिए उन्हें ही आगे बढ़ना पड़ेगा। बिना इनकी सहायता के सारे मनसूबे मिट्टी हो जायँगे।

"किसी भी देश के अर्वाचीन अथवा प्राचीन इतिहास की ओर ग़ौर कीजिए; आयलैंण्ड, रूस, चीन, टर्की, या अन्य किसी भी पूर्वी अथवा पश्चिमी देश को स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए युवकों से ही सहायता लेनी पड़ी है। हमारे देश के युवक भी, अपने देश की स्वाधीनता के लिए अपना बलिदान करेंगे, और अपनी मातृ-भूमि को दासत्व की बेड़ी से मुक्त कर देंगे, इसमें मुझे तनिक भी सन्देह नहीं है।

"इस बात की बहुधा शिकायत की जाती है, कि वर्तमान शिक्षा-प्रणाली इसी विचार से हमारे देश में प्रचलित की गई है कि हम सदा ग़ुलाम बने रहें। यह बात सच है, इस शिक्षा-प्रणाली से राष्ट्रीयता के भावों का उदय नहीं हो सकता। सच्ची राष्ट्रीयता और देश-भक्ति के भावों को कुचलने के लिए, शासकगण किस प्रकार 'राज-भक्तों' और क्लर्कों को ईजाद करते हैं, इसका कुछ क़िस्सा मैं आपको सुनाऊँगा।

"कुछ वर्ष हुए, जब मैं बम्बई की धारा-सभा का सदस्य था। मैंने कौन्सिल में शिक्षा-मन्त्री से एक मार्के का प्रश्न किया। मैंने उनसे पूछा, कि क्या स्कूल और कॉलेज के लड़कों को, इङ्गलैण्ड के राजा-रानियों की फ़िज़ूल क़िस्सा-कहानियों की अपेक्षा, अपने देश के महापुरुषों की जीवनियों को पढ़ाना श्रेयस्कर नहीं होगा? हेनरी ने कितने विवाह किए थे, या एलिज़ाबेथ कौन-कौन कपड़े पहनती थी, उसके कितने प्रेमी थे, सर वाल्टर रैले कैसा रसिक था, आदि कथाओं से भारतीय विद्यार्थियों को क्या लाभ पहुँचता है? बेचारे शिक्षा-मन्त्री बड़े घबड़ाए। उन्होंने बहुत देर तक कोई उत्तर नहीं दिया। अन्त में यूरोपियन होम-मेम्बर उनकी सहायता को आए। होम-मेम्बर के बताने पर मिनिस्टर साहब ने ग्रामोफ़ोन के रेकार्ड की तरह, उत्तर दिया कि भारतीय नेताओं के भाषण, उनके लेख और उनकी जीवनियाँ भारतीय विद्यार्थियों के लिए ख़तरनाक हैं, इसलिए उन्हें छोड़ देना ही अच्छा है! तात्पर्य यह कि इङ्गलैण्ड के बाद-

श्री० के० एफ़० नॉरिमन

शाहों की झूठी गौरव-कहानी, और उनके दरबारों की बाहरी तड़क-भड़क भारतीय विद्यार्थियों के लिए अध्ययन की अच्छी सामग्री है, क्योंकि इससे ब्रिटिश साम्राज्य को कुछ हानि नहीं पहुँच सकती है। यदि हमारे विद्यार्थी गाँधी और तिलक के जीवन-चरित्र का अध्ययन करें और उनका अनुसरण करने लगें तो शासकों के लिए ख़ैरियत कहाँ? एक गाँधी यदि सारे ब्रिटिश साम्राज्य की जड़ को हिला सकते हैं, तो अनेक गाँधियों के उत्पन्न हो जाने पर तो हमारे शासकों को अपना बोरिया-बँधना लेकर भागना ही पड़ेगा। ऐसा भी सम्भव है कि बोरिया-बँधना भी ले जाने की तकलीफ़ उन्हें नहीं उठानी पड़े, क्योंकि वह भी तो हमारा ही है।

"यही हमारे देश की शिक्षा-प्रणाली का उद्देश्य है। यहाँ अङ्गरेज़ों का यह सिद्धान्त काम में लाया जा रहा है कि 'पहले अपनी रक्षा का उपाय करना चाहिए और उसके बाद दूसरों की भलाई करनी चाहिए।'

दूसरी कहानी

"बम्बई के टेकनिकल कॉलेज की एक घटना है, जिससे उक्त सिद्धान्त चरितार्थ होता है। उक्त कॉलेज में हर साल, विद्यार्थियों को किसी मनुष्य की आकृति का बूटा काढ़ना पड़ता था। यह कहने की आवश्यकता नहीं, कि केवल यूरोपियनों की आकृति के ही बूटे काढ़े जाते थे। किसी हिन्दुस्तानी की अपेक्षा, प्रिन्सिपल साहब, या उनकी मेम साहबा अथवा कोई इञ्जिन-ड्राइवर की आकृति काढ़ना ही श्रेयस्कर समझा जाता था। एक बार किसी देशभक्त लड़के ने महात्मा गाँधी की आकृति के सम्बन्ध में प्रस्ताव किया। प्रिन्सिपल साहब तुरन्त बिगड़ उठे। ऐसे मनुष्य की आकृति भला उन्हें कब पसन्द आ सकती थी? उन्होंने महात्मा गाँधी की आकृति के सम्बन्ध में चट निषेधाज्ञा निकाल दी। विद्यार्थियों ने क़रीब दो वर्षों तक इस पर आन्दोलन किया। अन्त में यह निषेधाज्ञा हटा ली गई।

"ऊपर जिस टेकनिकल कॉलेज का ज़िक्र आया है, उसके सभी छात्र हिन्दुस्तानी थे और वह हिन्दुस्तानियों के ही चन्दे से चलता था। किन्तु तो भी विद्यार्थियों पर इस प्रकार की बाधाएँ उपस्थित की जाती थीं!

"सभी जगहों की ऐसी ही हालत है। क्या आपको याद नहीं, कि स्कूल और कॉलेजों में राष्ट्रीय गान तक रोक दिए गए थे? यदि कोई 'Rule Britannia' अर्थात् 'ऐ ब्रिटेन हम पर शासन करो' यह गान गाए तो गवर्नर और मिनिस्टर साहब भी तान में तान मिलाएँगे, और 'इनकोर! इनकोर!!' की ध्वनि करेंगे; किन्तु यदि आप एक सीधा-सादा 'बन्देमातरम्' गीत गाएँ तो अधिकारी अपने कान मूँद लेंगे, उन्हें इससे क्रान्ति की बू आएगी, और वे गाने वाले को सज़ा देंगे, अथवा निकाल देंगे! जिस गाने को वे चाहते हैं उसको अगर आप गाएँ भी तो उसमें इतना अन्तर अवश्य कर दें—'ऐ ब्रिटेनिया तुम शासन करो, तुम समुद्र की लहरों पर शासन करो, किन्तु भारतवासी कभी तुम्हारे दास होकर नहीं रहेंगे।'

भारतीय सभ्यता

"मेरे नौजवान दोस्तो! एक क्षण के लिए ज़रा ग़ौर तो करो, तुम्हारे बाप-दादे कौन थे और कैसे थे और सदियों पहले—अङ्गरेज़ों के आने के पूर्व—आपका देश कैसा था? अपने देश की गौरव-कहानी जानने के लिए आपको झूठे इतिहासकारों की पुस्तकें पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। मैं मोहनजादड़ो से आपके लिए, बहुत ही सनसनीपूर्ण और कारुणिक सन्देशा लाया हूँ। शायद आपने मोहनजादड़ो का नाम सुना होगा। हमारे विरोधी वैज्ञानिकों का भी कहना है कि मोहनजादड़ो भारत की कम से कम ५ हज़ार वर्ष की गौरव-कहानी है!

"अपने देश के प्राचीन कीर्त्ति-स्तम्भों को देख कर प्रत्येक देशभक्त भारतीय की आँखें सजल हो आती हैं।

देश- विदेश से सैकड़ों-हज़ारों यात्री यहाँ आते हैं और विस्मय के सागर में डूब जाते हैं। हमारे वर्तमान शासकों का देश, जिस समय उजड़ और वीरान पड़ा था, जिस समय वहाँ लोग अर्द्धनग्नावस्था में रहते थे, उस समय हमारा देश गौरव के उच्च शिखर पर आसीन था। ७ हज़ार वर्ष पहले ग्रेट-ब्रिटेन का जन्म भी नहीं हुआ था और इसके बहुत दिनों बाद तक वहाँ के लोग, मनुष्य की अपेक्षा बन्दरों से कहीं अधिक मिलते-जुलते थे। हमारी ही प्राचीन सभ्यता ने उन्हें पहले-पहल मानवोचित रहन-सहन के तरीक़े बतलाए। और यह कितने आश्चर्य की बात है, कि आज हमारा ही देश विदेशियों के शासन की ज़ञ्जीर में बँधा हुआ है। भारत दिन-ब-दिन अधःपतन की ओर झुकता जा रहा है। प्राचीन गौरव की कोई निशानी इसमें अब शेष नहीं रह गई है। यदि यही दशा रही तो सम्भव है, कुछ दिनों में संसार के नक़्शे में भारत का नक़्शा नहीं दिखाई पड़े !!!

ब्रिटिश-शासन और भारत

"यदि आप भारत के आर्थिक इतिहास पर ध्यान दें, तो आपको पता चल जायगा, कि ब्रिटिश-शासन और भारत से क्या सम्बन्ध है। आप श्री० रमेशचन्द्र दत्त की किताबों को पढ़ें, श्री० दादाभाई नौरोजी का अध्ययन करें, तब आपको पता चलेगा, कि यह सुवर्णमयी भारत-भूमि एकाएक गौरव के उच्च गिर-शिखर से रसातल को कैसे पहुँच गई है ? आप सच मानिए, कि भारत के इस महान अधःपतन का एकमात्र कारण, हमारे शासकों की अर्थ-शोषण नीति ही है। यही विषय आपके अध्ययन की उपयुक्त सामग्री है। स्कूल और कॉलेजों में आप इस सम्बन्ध में कुछ नहीं जान सकते।

"युवको, आप शहरों में रहते हैं। आपको अपने हज़ारों क्षुधा-पीड़ित और रोग-ग्रस्त भाइयों के सम्बन्ध में कुछ भी ज्ञान नहीं है। आप गाँवों में जाइए, और ब्रिटिश शासन का सच्चा रूप वहाँ आपको दिखलाई पड़ेगा। दीन-हीन कृषक, टूटे झोपड़े में पड़े रहते हैं; उनके खाने का ठिकाना नहीं है, उनके पहरने का ठिकाना नहीं है; न वे शिक्षित हैं, और न यही जानते हैं, कि शिक्षा क्या वस्तु है; वे दिहाती कुत्तों की भाँति रहते हैं और शहरी चूहों की मौत मरते हैं ! वे रोगी हैं, उनके गाँव में अस्पताल नहीं है, किन्तु हमारी सरकार की दया से वहाँ भट्टीख़ाने की कमी नहीं है !!

चीन के युवक

"अपना भाषण समाप्त करने के पहले मैं चीन के सम्बन्ध में आपको कुछ सुनाऊँगा। चीन और भारत में बहुत-कुछ समानता है। विदेशी महाप्रभुओं ने उसके किनारे के सभी अच्छे-अच्छे सामुद्रिक स्थान हथिया लिए थे। हाल की बात है, कि कुछ चीनी युवक जो अमेरिका से लौटे थे, सङ्घाई गए। आप जानते होंगे कि सङ्घाई में अङ्गरेज़ों की बस्ती थी। वहाँ की एक बस्ती में एक बोर्ड टँगा हुआ था, जिस पर लिखा था:—

'चीनियों और कुत्तों के लिए यहाँ आना मना है।'

यह देख कर उन चीनी युवकों के हृदय पर बड़ा भारी आघात पहुँचा। यह उनकी सहनशक्ति के बाहर की बात थी। उन्होंने उसी समय वहाँ पर यह प्रतिज्ञा की, कि चाहे जो कुछ हो इस अन्याय और अत्याचार का अन्त करना होगा। उसी समय से वहाँ युवकों का आन्दोलन शुरू हुआ और इतने थोड़े समय में उसने जो आशातीत सफलता प्राप्त कर ली है, वह प्रत्यक्ष है। उन्हीं युवकों ने उसी स्थान पर फिर एक बोर्ड लगा दिया, जिस पर लिखा था कि—'कुत्तों और विदेशियों के लिए स्थान नहीं है।'

"युवकों की अन्तरात्मा पर आघात पहुँच जाने से वे क्या कर सकते हैं, ऊपर के उदाहरण से इसका साफ़-साफ़ पता चल जाता है। भारत के युवक भी जब जग जायँगे, तो कितना ही अत्याचार और दमन क्यों न हो, उनकी गति अबाध रहेगी। उस समय सम्मेलनों और परिषदों की कोई आवश्यकता नहीं होगी। वे स्वयं अन्य देश के युवकों की भाँति अपना निर्दिष्ट ध्येय प्राप्त कर लेंगे।"

* * *

जेल के अत्याचार

अमृतसर, १२ मई। आज जब श्री० त्रिपाठी, गुरुदयाल, चमन, चिराग़दीन और अन्यान्य राजनीतिक क़ैदी अपने मुक़दमे के सम्बन्ध में उपर्युक्त अदालत में आए, तो श्री० त्रिपाठी ने एक नीला जाँघियाँ, जिस पर पाख़ाना लगा हुआ था, अदालत में पेश किया और अदालत का ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, कि सिविल सर्जन ने मुझे तथा मेरे साथियों के स्वास्थ्य पर ध्यान देकर, ज़मानत पर छोड़ देने की सिफ़ारिश की थी, परन्तु हमारी ज़मानतें मञ्ज़ूर नहीं की गईं। परन्तु अदालत ने मेहरबानी करके हमें बी० क्लास में कर दिया था। जिस दिन अस्वस्थता के कारण हमें बी० क्लास दिया गया था, उसी दिन जब कि हम जेल वापस गए, तो जाते ही हमें बेड़ियाँ पहनने की आज्ञा, सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ने दी। और मुझे 'डण्डा-बेड़ी' पहना दी गई। श्री० त्रिपाठी ने कहा कि मेरा स्वास्थ्य इतना ख़राब है कि मैं चल-फिर तक नहीं सकता और मेरी नाक से ख़ून भी गिरता है। यहाँ तक कि कभी अर्द्ध-बेहोशी भी हो जाती है। परन्तु इन बातों की कोई सुनवाई नहीं हुई। मुझे एकान्त कोठरी में रहने का आदेश दिया गया। कमज़ोरी और डण्डा-बेड़ी के कारण मैं चल-फिर नहीं सकता था!

श्री० त्रिपाठी ने अदालत का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा—यह वह जाँघिया है, जिसमें आज सवेरे मुझे पाख़ाना हो गया। बेड़ी के कारण तथा कमज़ोरी के कारण मैं चल नहीं सकता था, इसलिए पाख़ाना जाने के समय रास्ते में ही मेरी जाँघिया ख़राब हो गई।

जिस समय श्री० त्रिपाठी यह बातें अदालत से कह रहे थे, उस समय उनकी आँखों में आँसू भर आया था। इस घटना से अदालत में सनसनी फैल गई। अदालत ने इस सम्बन्ध में उन्हें आज्ञा दी कि अपनी तमाम शिकायतों के सम्बन्ध में एक दरख़्वास्त लिख कर अदालत में दें।

लॉर्ड वैलिङ्गडन से महात्मा गाँधी की भेंट

वॉयसराय के गार्ड ने बन्दूक़ झुका कर महात्मा जी का सम्मान किया !

शिमला का १९वीं मई का समाचार है, कि ४ बजे के लगभग महात्मा गाँधी वॉयसराय-भवन को गए। वहाँ पहुँचने पर वायसराय के गार्ड ने अपनी बन्दूक़ झुका कर महात्मा जी के प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। वॉयसराय से १ घण्टे तक बातचीत कर जब आप बाहर निकले तो पत्र-प्रतिनिधियों ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी। महात्मा जी ने केवल यही उत्तर दिया कि बातचीत आशाजनक है; अब दुबारा, लॉर्ड विलिङ्गडन से मिलने की आवश्यकता नहीं है।

किसी ने महात्मा जी से पूछा—"क्या आप शिमला को स्वराज्य सरकार की राजधानी बनाना पसन्द करेंगे?" उन्होंने उत्तर दिया कि "हमें पाँच हजार मञ्जिलों से नीचे जाना होगा, क्योंकि स्वराज्य सरकार जनता की होगी और जनता में ही रहेगी।"

आपका विश्वास है कि केन्द्रीय सरकार सन्धि की शर्तों का पालन करने की कोशिश कर रही है।

भूपाल में, डॉ० अन्सारी और मौ० शौकतअली की बहसों को आपने आशाजनक बतलाया है।

शिमला १७ मई—आज महात्मा जी नैनीताल पहुँचे। यहाँ ५ दिनों तक रह कर आप बोरसद के लिए रवाना हो जाएँगे।

"द्विविधा में दोऊ गए—माया मिली, न राम !!"

मातहतों को सु० पुलिस का आदेश

"खुद गोली न खाकर, क्रान्तिकारियों पर गोली चला दिया करो"

एक मुख़बिर सी० आई० डी० विभाग का आदमी निकला !

बम बनाने के लिए जर्मनी से नाइट्रिक-एसिड आता था !

अभियुक्तों के बच्चों तक को पुलिस कठघरे के पास से उठा ले गई !!

६३७ नम्बर के टाँगे पर पुलिस वाले दिन में तीन-तीन बार मुख़बिरों से मिलने जेल जाते थे

अभियुक्तों ने अदालत में "विश्वासघातियों का नाश हो" के नारे लगाए !

देहली का १२ मई का समाचार है, कि आज दिल्ली षड्यन्त्र केस के मामले में अभियुक्तों की ओर से सी० आई० डी० के स्पेशल सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० पील से जिरह की गई।

मि० आसफ़अली के एक प्रश्न के उत्तर में मि० पील ने कहा, कि मैंने कल की गवाही में यह नहीं कहा था कि झण्डेवालाँ की तलाशी में जो कुछ चूड़ियों के टुकड़े मिले थे वे इस षड्यन्त्र से सम्बन्ध रखने वाली किसी स्त्री के नहीं हैं। मैंने कहा था—"मैं नहीं कह सकता कि चूड़ियों के ये टुकड़े इस षड्यन्त्र से सम्बन्ध रखने वाली किसी ख़ास स्त्री के हैं।" मेरा आशय यह था, कि चूड़ियों के ये टुकड़े इस षड्यन्त्र से सम्बन्ध रखने वाली किसी न किसी स्त्री के ज़रूर ही हैं।

मि० एस० एन० बोस के प्रश्न के उत्तर में मि० पील ने कहा, कि सी० आई० डी० के इन्स्पेक्टर मि० मुमताज हुसेन ने मेरे पास कैलाशपति के बयान का संक्षिप्त विवरण भेजा था। इसकी मूल लिपि ख़ुफ़िया विभाग के अफ़सरों के पास लौटा दी गई थी। पता नहीं कि वह उनके पास मौजूद है या नहीं।

इसके बाद सबूत की ओर से दिल्ली तथा लाहौर षड्यन्त्र केस के फ़रार अभियुक्तों के चित्रों की एक पुस्तिका ट्रिब्यूनल के सामने पेश की गई। चित्रों के साथ अभियुक्तों की हुलिया भी दर्ज थी।

मि० पील ने कहा कि मैं नहीं कह सकता कि पुलिस ने इन चित्रों को कब और कहाँ से प्राप्त किया।

अन्य प्रश्नों के उत्तर में आपने कहा, कि अभियुक्त बाबूराम की दूकान, यूनिवर्सल ड्रग स्टोर्स की तलाशी मेरी आज्ञा से हुई थी। दूकान के कुछ रजिस्टर मुझे दिखलाए गए थे। मुझे नहीं मालूम कि दिल्ली के बाज़ारों में सलफ़्यूरिक तथा नाइट्रिक एसिड की विशेष खपत है। परन्तु पुलिस विभाग की जाँचों से मालूम हुआ है, कि यूनिवर्सल ड्रग स्टोर्स की तरफ़ से जर्मनी की किसी कम्पनी के नाम बहुत अधिक एसिड के लिए ऑर्डर भेजा गया था।

इसके बाद आपने बतलाया कि वॉयसराय की स्पेशल ट्रेन वाली बम-घटना की खोज में हिन्दुस्तान भर की ख़ुफ़िया पुलिस लगी थी। इस मामले में पञ्जाब के सी० आई० डी० विभाग से मेरे पास अक्सर ख़बरें पहुँचा करती थीं।

मि० बलजीतसिंह के प्रश्न के उत्तर में आपने कहा कि सम्पूर्ण हिन्दुस्तान के षड्यन्त्र-अपराधों का भार मेरे ज़िम्मे नहीं है। मैं केवल अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के कार्यों के लिए उत्तरदायी हूँ। आपने कहा कि अभियुक्त धनवन्तरि का चित्र मिसिल में दर्ज है। यह चित्र विज्ञापन-पत्रों में प्रकाशित हो चुका है और उसकी प्रतियाँ पञ्जाब तथा अन्य प्रान्तों में वितरित भी हो चुकी हैं।

इस मामले में रघुवीरसिंह नाम का एक व्यक्ति गिरफ़्तार किया गया था। मुझे रघुवीरसिंह की गिरफ़्तारी का विवरण नहीं मालूम, कि रघुवीरसिंह रायबहादुर और ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट मि० पारसदास का भतीजा है।

एक दूसरे प्रश्न के उत्तर में गवाह ने कहा कि "क्रान्तिकारी दल के लोग किसी भी पुलिस अफ़सर को अच्छी निगाह से नहीं देखते। परन्तु केवल कैलाशपति ही ऐसा व्यक्ति था, जिसने मुझसे बतलाया कि षड्यन्त्रकारियों की तरफ़ से मेरे ऊपर आक्रमण होने का प्रबन्ध किया जा रहा है।

प्रश्न—क्या कैलाशपति के बतलाने पर आपने अपनी रक्षा का कोई प्रबन्ध किया?

उत्तर—हाँ, पहले की अपेक्षा घर और दफ़्तर के पहरों को अधिक मज़बूत कर दिया।

प्र०—क्या अब भी आपको क्रान्तिकारियों द्वारा गोली से उड़ा दिए जाने का भय बना हुआ है?

अदालत ने इस प्रश्न के पूछने की इजाज़त नहीं दी। मि० बलजीतसिंह ने कहा, कि इस प्रश्न के द्वारा मैं यह साबित करना चाहता हूँ कि गवाह डरा हुआ है।

इसके बाद गवाह ने कहा कि मैं उस अवसर पर उपस्थित था, जब सरकार की ओर से पुलिस-अफ़सरों को वॉयसराय द्वारा तमग़े दिए गए थे। वीरभद्र तिवारी के सम्बन्ध में आपने कहा, कि उनकी गिरफ़्तारी काकोरी-केस में हुई थी, परन्तु मामला नहीं चलाया गया। मैं यह नहीं कह सकता कि वे इस शर्त पर छोड़े गए थे, कि वे पुलिस को षड्यन्त्रकारियों की ख़बरें बतलाया करेंगे। मेरे विभाग का कोई भी आदमी तिवारी से मिलने के लिए फ़ैज़ाबाद जेल नहीं गया था। सी० आई० डी० की प्रार्थना पर तिवारी फ़ैज़ाबाद जेल से हटा कर इलाहाबाद लाए गए थे।

मि० बलजीतसिंह ने कहा कि तिवारी सी० आई० डी० से सम्बन्ध रखते हैं और वे पुलिस के गुप्तचर हैं।

सी० आई० डी० ने ज़मानत दी

प्र०—क्या यह बात सच है, कि तिवारी को छुड़ाने के लिए शम्भूनाथ, सी० आई० डी० के अफ़सर, ने उनकी ज़मानत की थी?

उ०—मैं नहीं जानता।

आगे एक प्रश्न के उत्तर में गवाह ने कहा, कि मुझे यह नहीं मालूम कि तिवारी फ़रार अभियुक्तों के पते बताने की शर्त पर छूटे थे।

गोली मारने के लिए आदेश

प्र०—क्या यह बात सच है, कि आप अपने मातहतों को यह आदेश दे चुके हैं कि रात के समय यदि क्रान्तिकारी या फ़रार अभियुक्त कहीं मिल जायँ तो वे उन्हें गोली से उड़ा दें?

उ०—मैंने अपने मातहतों को यह आदेश दिया है, कि जहाँ तक हो, वे ख़ुद गोली न खायँ, बल्कि उन्हीं पर चला दें।

आपने कहा, कि मैंने ऐसा आदेश अपने कर्मचारियों को, षड्यन्त्रकारियों के आक्रमणों से बचे रहने के लिए दिया है। एलफ़्रेड पार्क में चन्द्रशेखर आज़ाद की घटना का समाचार मैंने सुना था। शालामार बाग़ में मारे गए जगदीश की पञ्जाब के किसी षड्यन्त्र केस में ज़रूरत थी। शालिगराम शुक्ल, जो कानपुर में मारे गए थे, उनकी भी पिकेटिङ्ग-ऑर्डिनेन्स के एक केस में ज़रूरत थी।

गवाह ने कहा, कि मेरी समझ से एलफ़्रेड पार्क में जो व्यक्ति मारा गया था, वह वास्तव में चन्द्रशेखर आज़ाद ही था। मैंने उसका मिलान एक फ़ोटो से किया था।

सफ़ाई के वकील ने गवाह से अदालत में फ़ोटो पेश करने के लिए कहा। सरकारी वकील ने इसका विरोध किया। सफ़ाई के वकील मि० बलजीतसिंह ने कहा कि सफ़ाई के लिए फ़ोटो का पेश होना अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि आज़ाद इस मामले का मुख्य पात्र है। सम्भव है कि सफ़ाई की ओर से वह गवाह बना कर पेश किया जाय। अदालत ने फ़ोटो पेश करने की इजाज़त नहीं दी।

एक दूसरे प्रश्न के उत्तर में गवाह ने कहा कि सम्भवतः आज़ाद, विशेश्वरनाथ, जगदीश आदि षड्यन्त्रकारी इसलिए मारे गए, कि वे पुलिस-अफ़सरों को गोली मारना चाहते थे।

एक प्रश्न के उत्तर में गवाह ने कहा, कि मुझे नहीं मालूम कि खड़बावली के असली घी स्टोर्स वाले चम्पालाल को सी० आई० डी० में जगह दी गई है। मुझे यह भी नहीं मालूम कि उसने अभी हाल ही में पुलिस अफ़सरों को कोई पार्टी दी थी।

कमलावती इस मामले की कोई अभियुक्त नहीं है। उसे पुलिस की हिरासत में रखने का कारण यह था, कि वह कैलाशपति के साथ ही एक ही घर में पाई गई थी।

मुझे नहीं मालूम कि उसके पति राजबलीप्रसाद की पहले लाहौर षड्यन्त्र केस में गिरफ़्तारी हुई थी।

प्र०—क्या कैलाशपति को उसकी 'सेवाओं' के लिए १५०) रु० मासिक पेन्शन देने का वचन दिया गया है? उसमें से ३०) रु० मासिक कैलाशपति की 'प्रेमिका' को भी देने के लिए कहा गया है, यदि वह भी सबूत की तरफ़ से गवाह बन जाय?

उ०—जहाँ तक मुझे मालूम है, कोई रक़म देने का वचन नहीं दिया गया।

प्र०—इस समय उसका भरण-पोषण कौन करता है।

उ०—मेरा ख़्याल है कि जेल के अधिकारीगण।

प्र०—क्या पुलिस की तरफ़ से उसे कोई भत्ता भी मिलता है?

उ०—न्यायालय की हिरासत में रक्खे जाने के पहले पुलिस उसका भरण-पोषण करती थी।

इन्स्पेक्टर का दुर्व्यवहार

गवाह ने कहा, यह बात ठीक है कि चेतरामसिंह इन्स्पेक्टर ने अभियुक्त बिमल के साथ दुर्व्यवहार किया है। मैंने चेतरामसिंह इन्स्पेक्टर को अब आगे से ऐसी बात न करने की चेतावनी दे दी है।

प्र०—क्या आपने अभियुक्त बिमल से यह कहा था कि "मैंने अपने मातहतों से सुना है डी० एस० पी० नन्दकिशोर का व्यवहार कुछ अभियुक्तों के प्रति पशुतापूर्ण था?

उ०—नहीं, मैंने नहीं कहा था।

इसके बाद अदालत जलपान के लिए स्थगित हो गई।

अदालत के फिर बैठने पर अभियुक्त श्री० विद्याभूषण ने शिकायत की, कि कोर्ट-इन्स्पेक्टर सरदार भागसिंह का मि० पील के पास, जिनकी गवाही अभी समाप्त नहीं हुई है, जाना अनुचित है। अदालत ने सरदार भागसिंह को मि० पील के पास जाने से मना कर दिया।

अभियुक्त श्री० विद्याभूषण के प्रश्न के उत्तर में मि० पील ने कहा कि मैं यह नहीं कह सकता कि इन्स्पेक्टर चेतरामसिंह जाँच के सिलसिले में कितनी बार नीलगढ़ गए थे। मैंने उन्हें कैलाशपति के कथनानुसार ब्रह्मानन्द को गिरफ़्तार करने के लिए भेजा था। परन्तु ब्रह्मानन्द गिरफ़्तार नहीं किया गया।

प्र०—क्यों गिरफ़्तार नहीं किया गया?

उ०—इसका जवाब इन्स्पेक्टर चेतरामसिंह अपनी गवाही में बतलाएगा।

प्र०—क्या उसने आपसे कुछ बतलाया था?

उ०—हाँ।

प्र०—क्या बतलाया था?

उ०—उन्होंने मुझसे बतलाया था कि मैंने ब्रह्मानन्द से बातचीत कर ली है, उसने मेरे पास आने के लिए कहा है।

प्र०—क्या ब्रह्मानन्द ने फ़रार-अभियुक्त रामचन्द्र को गिरफ़्तार करा देने का वचन दिया था और क्या इसीलिए वह गिरफ़्तार नहीं किया गया?

अदालत ने इस प्रश्न के पूछने की इजाज़त नहीं दी। परन्तु मि० आसफ़अली के यह कहने पर, कि प्रश्न बिल्कुल उचित और प्रासङ्गिक है, अदालत ने उस प्रश्न के पूछने की इजाज़त दे दी।

मि० पील ने उत्तर में कहा, कि ब्रह्मानन्द कोई वचन देने के कारण नहीं छोड़ दिया गया था।

इसके बाद आपने कहा, कि हरद्वारीलाल तथा कैलाशपति एक साथ ही गिरफ़्तार किए गए थे, परन्तु मैं यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकता कि कमलावती कैलाशपति के साथ गिरफ़्तार हुई थी, या नहीं। मैंने उसकी गिरफ़्तारी या उसके छुटकारे के मामले में कोई हस्तक्षेप नहीं किया। मुझे मालूम है कि हरद्वारीलाल एक बार छोड़ दिए जाने के बाद फिर गिरफ़्तार कर लिया गया था।

जॉनबुल का कार्यक्रम

प्र०—वह पहले क्यों छोड़ दिया गया था?

अदालत ने यह कह कर इस प्रश्न के पूछने की इजाज़त नहीं दी, कि गवाह को इस विषय में कोई व्यक्तिगत जानकारी नहीं है।

गवाह ने कहा कि कैलाशपति से ख़बर मिलने पर उसको फिर से गिरफ़्तार करना आवश्यक समझा गया।

ग़ैर-क़ानूनी हिरासत

गवाह ने कहा यह मैं मानता हूँ, कि बिमल, हरकेश, भागीरथलाल, बाबूराम, विद्याभूषण आदि अभियुक्त लगभग दो-दो महीने तक पुलिस की हिरासत में बन्द रहे हैं। बाबूराम का कोई भी सम्बन्धी मेरे पास अभियुक्त से मिलने की इजाज़त लेने नहीं आया। मुझे यह नहीं मालूम कि हिरासत के समय अभियुक्त बाबूराम से कोई व्यक्ति मिल नहीं पाया।

प्र०—क्या आपने पुलिस को यह आज्ञा नहीं दी थी, कि अभियुक्तों के सम्बन्धी उनसे मिलने न पाएँ?

उ०—इस विषय में मैंने कोई आम हुक्म नहीं निकाला था।

प्र०—तो ख़ास हुक्म क्या थे?

उ०—मुझे याद नहीं, कि मैंने कोई ख़ास हुक्म जारी किया था!

इसके बाद आपने कहा कि मुझे अपने डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट तथा इन्स्पेक्टर पर पूर्ण विश्वास है। अभियुक्तों की तरफ़ से यदि किसी तरह की शिकायत होती, तो अवश्य ही वे मुझसे कहते। मैं अभियुक्तों के पास, उनकी शिकायतों को जानने के लिए सब के पास, व्यक्तिगत रूप से जाने की आवश्यकता नहीं समझता!

"मुझे याद नहीं"

गवाह ने कहा कि मुझे यह याद नहीं कि किस ने टेलीफ़ोन द्वारा सदर बाज़ार से ख़बर दी थी कि अभियुक्त हरकेश पीटे जाने के कारण अनशन कर रहा है। मुझे नहीं पता, कि अभियुक्त रुद्रदत्त को पिस्तौल दिखला कर धमकाया गया था।

प्र०—क्या आपने पिस्तौल दिखा कर उसे धमकाया था?

उ०—नहीं।

गवाह ने कहा कि मुझे यह नहीं मालूम, कि हरकेश को पीटते-पीटते बेहोश कर दिया गया था।

प्र०—यह आपसे किसने कहा कि एक अभियुक्त के सम्बन्ध में आज जो मैंने "प्रेमिका" शब्द का प्रयोग किया है, उस पर आपत्ति की गई है।

उ०—मैं नाम नहीं बतला सकता।

प्र०—क्या आप अपनी गवाही के सम्बन्ध में और किसी से भी बातें करते हैं?

उ०—हाँ, मैं इस विषय में ख़ाँन अब्दुल समद, डी० एस० पी० और मि० ब्लिस से बातें करता हूँ।

प्र०—क्या "प्रेमिका" शब्द पर मुख़बिर कैलाशपति ने आपत्ति की है?

उ०—जहाँ तक मुझे मालूम है कैलाशपति ने तो सुना भी नहीं है कि "प्रेमिका" शब्द का व्यवहार किया गया है।

प्र०—क्या आपको मालूम है, कि आपके सी० आई० डी० विभाग के अफ़सर कैलाशपति से न्यायालय की हिरासत में अक्सर ही मिलते रहे हैं?

उ०—मैं अपने मातहतों को उनसे या किसी अभियुक्त से मिलने के विषय में मना कर चुका हूँ।

प्र०—लेकिन क्या आपको मालूम है, कि आपके आदेशों को मातहतों ने पालन नहीं किया और वे बराबर मुख़बिरों से जाकर मिलते रहे हैं?

उ०—नहीं।

इसके बाद एक प्रश्न के उत्तर में गवाह ने इस बात को क़बूल किया कि जहाँ मुख़बिर रहते हैं वहाँ जेल के पीछे वाली दीवार में एक नया दरवाज़ा बनाया गया है।

प्र०—क्या यह बात ठीक है, कि एक पुलिस-अफ़सर बदल कर जेल-अफ़सर बना दिया गया है?

उ०—एक पेन्शन-प्राप्त सब-इन्स्पेक्टर मुख़बिरों की देख-रेख करने के लिए अतिरिक्त-जेलर बना दिए गए हैं।

प्र०—क्या यह भी सच है कि मुख़बिरों वाले वार्ड के पहरेदार पुलिसमैन हैं?

उ०—वार्डरों की नियुक्ति पुलिस के सीनियर सुप-

रिपटेण्डेण्ट की सहायता से हुई थी। स्पेशल पुलिस के कुछ पुलिसमैन, जो कि शीघ्र ही बरख़ास्त किए जाने वाले थे, बरख़ास्त करके जेल-वार्डर नियुक्त कर दिए गए थे।

मुख़बिरों के लिए भोजन-प्रबन्ध

एक प्रश्न के उत्तर में आपने कहा, कि मुझे नहीं मालूम कि मेरे स्पेशल स्टाफ़ के आदमी अब भी मुख़बिरों के पास जेल में भोजन-सामग्रियाँ लेकर जाया करते हैं। मि० आसफ़अली ने बतलाया, कि उस ताँगे का नम्बर ६३७ है, जिसमें स्पेशल पुलिस के आदमी नित्य-प्रति तीन-तीन बार जेल जाया करते हैं और वहाँ यूरोपियन वार्ड के पास ठहरते हैं। मैं समझता हूँ कि ये सब काम साधारण पुलिस के आदमी नहीं करते।

प्र०—क्या यह बात आप से डी० एस० पी० अब्दुल समद ने कही थी, कि कैलाशपति कमलावती के लिए "प्रेमिका" शब्द प्रयोग किए जाने का विरोध करेगा ?

गवाह ने कहा कि डी० एस० पी० ने कैलाशपति पर इस शब्द-प्रयोग का क्या प्रभाव पड़ेगा, इसका उतना ख़्याल नहीं किया, जितना कि इस बात का ख़्याल किया, कि "प्रेमिका" शब्द एक स्त्री के लिए प्रयोग करना कलङ्कजनक होगा।

स्त्री की चूड़ियाँ

स्त्री की चूड़ियों के विषय में प्रश्न करने पर गवाह ने कहा कि मेरा विश्वास है, कि तलाशी में जो चूड़ियाँ मिली थीं वे किसी स्त्री-अभियुक्त की हैं—मेरा यह अनुमान है; हो सकता है यह अनुमान ग़लत हो।

प्र०—क्या आपने इस बात का पता लगाने का कोई प्रयत्न किया कि ये चूड़ियाँ किसकी हैं ?

उ०—मैंने प्रयत्न किया है।

इसके बाद सफ़ाई की ओर से यह पूछने पर, कि क्या आपके इस अनुमान का, कि ये चूड़ियाँ किसी स्त्री-अभियुक्त की हैं, कोई प्रमाण है ? आपने कहा कि मेरे पास कोई प्रमाण नहीं है, परन्तु मैं समझता हूँ कि इस मामले में अभियुक्तों के साथ स्त्री-अभियुक्त भी रही हैं।

जिस मकान में क्रान्तिकारी दल के लोग रहते थे वह सितम्बर महीने में ख़ाली हो गया था।

यह प्रश्न करने पर, कि सितम्बर महीने से लेकर जब तलाशी हुई है, उस समय तक के बीच में क्या आपको मालूम है कि मकान में कौन-कौन लोग आकर रहे ? गवाह ने कहा, कि मुझे नहीं मालूम !

मुख़बिर, सी० आई० डी० का आदमी

सरकारी वकील ज़फ़रुल्ला ख़ाँ के प्रश्न के उत्तर में गवाह ने कहा, कि मुख़बिर रामलाल तैलङ्ग अक्टूबर सन् १९३० के चार महीने पहले सी० आई० डी० विभाग में नियुक्त था।

एक दूसरे प्रश्न के उत्तर में, जिस पर सफ़ाई-पक्ष के वकील मि० बोस ने आपत्ति की, गवाह ने कहा, कि अभियुक्त से वार्तालाप करने के बाद मैं इस निश्चय पर पहुँचा, कि कमलावती द्वारा डी० एस० पी० नन्दकिशोर पर लगाया गया दोषारोपण बिल्कुल निराधार और झूठा था।

इसके बाद अदालत स्थगित हो गई।

* * *

दूसरे दिन की बैठक में मुख़बिर कैलाशपति के बयान हुए। स्पेशल ट्रिब्यूनल की अदालत के अन्दर और बाहर आज पुलिस का असाधारण प्रबन्ध किया गया था। दर्शकों की गैलरियाँ स्त्री और पुरुष दर्शकों से खचाखच भरी हुई थीं।

प्रारम्भ में मि० आसफ़अली ने अदालत से शिकायत की, कि उत्तमप्रकाश नाम का एक सबूत का गवाह दर्शकों की गैलरी में बैठा हुआ है। अदालत के पूछने पर अभियुक्त धन्वन्तरि ने उसकी ओर इशारा करते हुए कहा, कि यह वही गवाह है, जिसने जेल में हम लोगों की शनाख़्त की थी। उसे अपनी गवाही हो जाने के पहले दर्शक की गैलरी में बैठने का कोई अधिकार नहीं है। उत्तमप्रकाश ने कहा, कि मुझे मालूम नहीं था, कि मैं गवाह हूँ। अदालत ने उसे कमरे के बाहर हो जाने का हुक्म दिया और कहा, कि आगे से अब कोई भी गवाह दर्शकों की गैलरी में न बैठने पाए।

सी० आई० डी० का झुण्ड

अभियुक्त वात्स्यायन ने अदालत से कहा, कि सी० आई० डी० विभाग के बहुत से आदमी दर्शकों की गैलरियों में बैठे हुए हैं, परन्तु अभियुक्तों के सम्बन्धी जगह की कमी के कारण कमरे के बाहर खड़े हुए हैं। इस पर अदालत ने सम्बन्धियों को कमरे के अन्दर आने की इजाज़त दे दी।

११ बज कर ४० मिनट पर मुख़बिर कैलाशपति अपनी गवाही देने के लिए खड़ा हुआ।

सबूत की ओर से मुख़बिर के बयान की नक़लें अभियुक्तों में वितरित कर दी गईं। इसके बाद मुख़बिर से अदालती शपथ लेने के लिए कहा गया। परन्तु सफ़ाई के वकील मि० आसफ़अली ने बीच ही में आपत्ति करते हुए कहा, कि मुख़बिर पहले अभियुक्त रह चुका है, इसलिए उससे शपथ नहीं ली जा सकती, जब तक कि यह न प्रमाणित कर दिया जाय, कि उसे क़ानून से क्षमा-प्रदान हो चुकी है।

सरकारी वकील—कैलाशपति अभियुक्त नहीं है।

मि० आसफ़अली—क्या आपका यही कथन है ?

सरकारी वकील—उपस्थित गवाह को ९ जनवरी को सिटी-मैजिस्ट्रेट मि० ईसर के सामने क्षमा-प्रदान की जा चुकी है। इसलिए अब वह मुख़बिर है।

मि० आसफ़अली—कैलाशपति अभियुक्त था, इसलिए उसकी गवाही गवाह की हैसियत से तब तक नहीं हो सकती, जब तक कि उसके क्षमा-प्रदान का अदालती सबूत न पेश कर दिया जाय।

इस पर सरकारी वकील ने मैजिस्ट्रेट की अदालत की लिखित कार्यवाही पेश की और कहा कि उपस्थित गवाह वास्तव में मुख़बिर है।

मि० आसफ़अली ने ट्रिब्यूनल का ध्यान क्रिमिनल प्रोसीजर कोड की दफ़ा ३३७ की तीसरी उपधारा की ओर आकर्षित करते हुए कहा, कि सरकारी वकील का यह कहना, कि मुख़बिर अभियुक्त नहीं है, अत्यन्त आश्चर्यजनक है। यदि वह अभियुक्त नहीं है तो ज़मानत पर छोड़ क्यों नहीं दिया गया ? क्षमा-प्रदान का यह स्पष्ट मतलब है कि कैलाशपति अभियुक्त था।

ट्रिब्यूनल के एक सदस्य, रायबहादुर कुँवरसेन—क्या मैजिस्ट्रेट की अदालत की मिसिल जो ट्रिब्यूनल के सामने अभी पेश की गई है, क्षमा-प्रदान प्रमाणित करने के लिए यथेष्ट नहीं है ?

मि० आसफ़अली—नहीं, जब तक कि मि० ईसर न प्रमाणित कर दें।

अभियुक्त प्रो० निगम—क्षमा-प्रदान में कोई शर्त रक्खी गई है या नहीं ?

मि० आसफ़अली—अभी इस प्रश्न के उत्तर के लिए ठहरिए, अभी तक तो क्षमा-प्रदान की ही बात प्रमाणित नहीं हुई।

सरकारी वकील मि० ज़फ़रुल्ला ख़ाँ ने एविडेन्स एक्ट की १३३वीं धारा की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, कि मुख़बिर की हैसियत गवाह की तरह है।

ट्रिब्यूनल के अधिकार के बाहर

ट्रिब्यूनल के प्रेज़िडेण्ट ने कहा, कि हमें चीफ़ कमिश्नर द्वारा बताए गए कुछ निश्चित अभियुक्तों को छोड़ कर, दूसरे किसी व्यक्ति पर विचार करने का अधिकार नहीं है। यदि मुख़बिर अपने बयान में बदल जाय और सबूत-पक्ष उस पर मामला चलाना चाहे, तो भी हमें अधिकार नहीं है कि हम उस पर विचार कर सकें।

मि० आसफ़अली ने कहा कि मेरा विरोध मिसिल में दर्ज कर लिया जाय, क्योंकि अपील में यह बात बहुत महत्वपूर्ण होगी। मेरे कहने का सारांश यह है, कि कैलाशपति की हैसियत केवल अभियुक्त की है जब तक कि उसके क्षमा-प्रदान की बात क़ानून से प्रमाणित न कर दी जाय।

अदालत ने इस विषय में अपना निर्णय देते हुए कहा, कि मुख़बिर अभियुक्त नहीं है और उससे शपथ ली जा सकती है। ट्रिब्यूनल को ट्रिब्यूनल के विधान के अनुसार किसी को अभियुक्त घोषित करने का अधिकार नहीं है।

शाबाश बहादुर !!

इस पर कैलाशपति ने शपथ लेकर अपना बयान प्रारम्भ कर दिया। उसने कहा, कि मैं आज़मगढ़ का निवासी हूँ और २८ या २९ दिसम्बर को दिल्ली में गिरफ़्तार हुआ था। सिटी मैजिस्ट्रेट मि० ईसर ने मुझे क्षमा प्रदान की थी।

एक अभियुक्त—शाबाश बहादुर !

इसके बाद उसने क्रान्तिकारी दल से अपने सम्बन्ध स्थापित होने का इतिहास बतलाया। उसने कहा कि इलाहाबाद के दरियागञ्ज (दारागञ्ज ?) स्कूल में पढ़ते समय शैलेन्द्रनाथ चक्रवर्ती से मेरा परिचय हुआ था। शैलेन्द्रनाथ चक्रवर्ती मुझे क्रान्तिकारी ढङ्ग की पुस्तकें पढ़ने के लिए दिया करता था। तीन-चार महीने के बाद उसने मुझे हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का छपा हुआ एक पीला पर्चा दिया था। उसने मुझसे पूछा, कि "क्या इन नियमों का पालन कर सकते हो ?"

सरकारी वकील—वे कैसे नियम थे ?

मि० आसफ़अली—यह पूछने की आवश्यकता नहीं है।

सरकारी वकील—चक्रवर्ती का तुमसे यह पूछने का मतलब क्या था ?

गवाह—मेरी समझ से उसका मतलब मुझे अपने क्रान्तिकारी दल का सदस्य बनाने का था। दल का मुख्य कर्तव्य भारत को स्वाधीन बनाना था ?

सरकारी वकील—किन उपायों से ?

मि० आसफ़अली ने इस प्रश्न पर आपत्ति करते हुए कहा, कि वह पीला पर्चा, जो कि कैलाशपति को दिया गया था, वही क्यों न उपस्थित कर दिया जाय ?

मि० ज़फ़रुल्ला ख़ाँ ने कहा कि पहले के लाहौर षड्यन्त्र केस की मिसिल मँगाई गई है, उसके आ जाने पर पर्चा पेश किया जायगा।

गवाह ने कहा—दल का उद्देश्य सशस्त्र क्रान्ति के द्वारा भारत को आज़ाद करना था।

इसके बाद गवाह ने कहा कि चक्रवर्ती ने मुझे सभा का सदस्य बना लिया।

मि० आसफ़अली ने कहा—यह कोई गवाही नहीं है। चक्रवर्ती कोई षड्यन्त्रकारी नहीं था।

गवाह ने कहा कि हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन का सङ्गठन अखिल भारतीय पैमाने पर किया गया था।

विजयकुमार सिन्हा से मुलाक़ात

सन् १९२९ में चक्रवर्ती ने ३०) रु० तथा एक पत्र देकर मुझे कानपुर भेजा। कानपुर रेलवे-स्टेशन पर

विजयकुमार सिन्हा मिले। सिन्हा मुझे अपने घर कराचीख़ाना ले गए। मैंने उन्हें वह पत्र और २५) रु० दे दिए। ५ रुपए अपने ख़र्च में लगे। तीसरे दिन सिन्हा ने मुझे उन्नाव भेजा। उनके आदेशानुसार मैंने वहाँ एक मकान किराए पर ठीक किया। उसके बाद मैं कानपुर लौट आया। कानपुर में सिन्हा और मैंने, लखनऊ जेल से एक क़ैदी को छुड़ाने के लिए उपाय सोचे। परन्तु हमारे उपाय सफल न हुए।

मि० आसफ़अली ने इस कथन पर आपत्ति की। आपने कहा, कि इस बात का अदालत में पेश करना मामले से कोई सम्बन्ध नहीं है। ट्रिब्यूनल ने आपकी बात स्वीकार कर ली।

गवाह ने कहा कि इसके बाद मैं इलाहाबाद चला गया और वहाँ से तीन-चार महीने के बाद गोरखपुर चला गया। गोरखपुर में मैंने रेलवे के ऑडिट ऑफ़िस में नौकरी कर ली। तीन-चार महीना काम करने के बाद मैं पोस्ट ऑफ़िस विभाग में नौकर हो गया। इस बीच में मैं चक्रवर्ती से इलाहाबाद में तीन दफ़ा मिला। चक्रवर्ती ने मुझसे, गोरखपुर के एम० पी० अवस्थी के द्वारा कानपुर के विजयकुमार सिन्हा से बराबर सम्बन्ध

श्री० विजयकुमार सिन्हा

बनाए रखने के लिए कहा था। अवस्थी के नाम उन्होंने मुझे एक परिचय-पत्र भी दिया था।

अवस्थी से मुलाक़ात

सरकारी वकील—क्या आपने चक्रवर्ती से क्रान्ति सम्बन्धी बातें की थीं?

मि० आसफ़अली—मैं इस प्रकार के प्रश्नों का घोर विरोध करता हूँ।

सरकारी वकील—तुमने अवस्थी से क्या बातें कीं?

गवाह ने कहा कि अवस्थी से मेरी कोई बातचीत नहीं हुई थी। उसने एक दिन कहा था, कि पोस्ट-ऑफ़िस का रुपया लेकर भाग जाओ। वह क्रान्तिकारियों के उपयोग में आएगा।

मि० आसफ़अली—क्या अवस्थी भी कोई अभियुक्त या फ़रार है?

सरकारी वकील—नहीं।

मि० आसफ़अली—तो इस सम्बन्ध की गवाही कैसे प्रासङ्गिक हो सकती है?

आपने कहा कि अब तक मुख़बिर की जितनी गवाही हुई है, वह सब अप्रासङ्गिक है। गवाही तो इस बात की होनी चाहिए कि षड्यन्त्र क्या था?

ट्रिब्यूनल के प्रेज़िडेण्ट ने कहा कि जो विषय चल रहा है वह प्रासङ्गिक है।

अदालत में साइकिल

गवाह ने अपनी गवाही के सिलसिले में कहा कि एम० पी० अवस्थी ने मुझे, पोस्ट ऑफ़िस का रुपया लेकर भाग जाने के लिए एक साइकिल दी थी। लेकिन रुपया लेकर भाग जाने का अवसर नहीं मिला। इसी बीच मैं बरहालगञ्ज ब्राञ्च पोस्ट-ऑफ़िस में बदल दिया गया। वहाँ मैं सन्, १९२८ के जून महीने तक रहा। जून के आख़ीर में सुरेन्द्र पाण्डेय विजयकुमार सिन्हा के यहाँ से पत्र लेकर मुझसे मिले। पत्र में रुपया लेकर शीघ्र कानपुर आने के लिए कहा गया था।

सफ़ाई-पक्ष के वकील मि० बलजीतसिंह ने सुरेन्द्र पाण्डे के नाम लिए जाने का विरोध किया। आपने कहा, कि वे लाहौर ट्रिब्यूनल द्वारा बरी किए जा चुके हैं। इस सम्बन्ध में आपने लाहौर हाईकोर्ट की एक नज़ीर
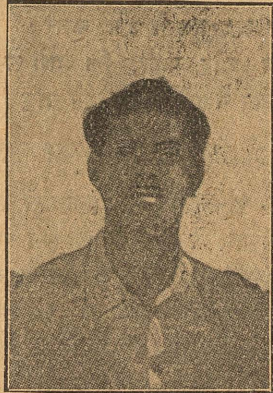
श्री० शिववर्मा

भी पेश की—परन्तु अदालत ने उनकी बात को नहीं माना और गवाह के बयान का कुछ अंश मिसिल में दर्ज कर लिया।

गवाह ने कहा कि इसके एक सप्ताह बाद मैं कानपुर सिन्हा से मिलने के लिए गया। सिन्हा ने मुझसे पोस्ट-ऑफ़िस को लूट लेने और साइकिल द्वारा कानपुर चले आने के लिए कहा।

२६ जून को ११ बजे सुबह मैं पोस्ट-ऑफ़िस का सब रुपया साइकिल पर लेकर रवाना होगया।

मि० आसफ़अली—क्या इस जुर्म के लिए भी मुख़बिर को क्षमा-प्रदान किया जा चुका है?

सरकारी वकील—हाँ, उन सभी जुर्मों के लिए उसे क्षमा मिल गई है, जो कि उसने हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन के सदस्य की हैसियत से किए हैं।

इसके बाद गवाह ने कहा कि मैं साइकिल पर लार-रोड स्टेशन पहुँचा। मेरे पास उस समय ३,२००) या ३,१००) रुपए थे।

* * *

अभियुक्त के बच्चे का रुदन

इसी बीच अदालत के एक पुलिसमैन ने अभियुक्त हरद्वारीलाल की पाँच वर्षीया बालिका को, जो कि अपने पिता के पास जाना चाहती थी, ज़बरदस्ती खींच कर अलग कर दिया। बालिका ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। अभियुक्तों ने इसका तीव्र विरोध किया।

इसके बाद अदालत जलपान के लिए स्थगित हो गई। कैलाशपति के जाते समय अभियुक्तों ने "विश्वासघातियों का नाश हो" के नारे लगाए।

अदालत के फिर बैठने पर अभियुक्त वात्सायन ने ट्रिब्यूनल के प्रेज़िडेण्ट से कहा कि अभियुक्तों के बच्चे अभियुक्तों से क्यों नहीं मिलने दिए जाते? हममें से अधिकतर अभियुक्त अविवाहित हैं, इसलिए मिलने वाले बच्चों की संख्या अधिक न होगी।

प्रेज़िडेण्ट—आप लोगों में कितने अभियुक्त विवाहित हैं?

उ०—तीन।

प्र०—सब मिला कर कितने बच्चे हैं?

उ०—सात।

मि० आसफ़अली ने भी अदालत से कहा कि अभियुक्तों के बच्चों को उनसे मिलने की इजाज़त दे दी जाय।

अदालत ने इस बात पर सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से विचार करने का वचन दिया।

इसके बाद गवाह ने अपनी गवाही प्रारम्भ की। उसने कहा कि लार रोड स्टेशन पर साइकिल छोड़ कर रेल-द्वारा मैं बनारस होता हुआ कानपुर पहुँचा। कानपुर में वाजपेयी के मकान पर गया। ५००) वाजपेयी और शेष सब रुपया पाण्डे को दे दिया। शिववर्मा और विजयकुमार सिन्हा बराबर मिलते थे। डी० ए० वी० कॉलेज-होस्टल में सुखदेव से भी मुलाक़ात हुई, जिनको मैं एक ग्रामीण समझता था। चन्द्रशेखर आज़ाद और गयाप्रसाद से भी वहीं भेंट हुई। हरदोई में शिववर्मा और प्रताप मिले। शिववर्मा ने प्रताप को मेरे अधिकार में सुपुर्द कर दिया। हम लोग लाहौर पहुँचे लाहौर स्टेशन पर सुखदेव हम लोगों को लेने आए थे। स्टेशन के बाहर सरदार भगतसिंह मिले। सरदार भगतसिंह हम लोगों को गोलबाग़ ले गए। फिर हम चारों यशपाल के घर गए। पहली रात को हम पाँचों आदमी वहीं सोए थे। दो-तीन दिन के बाद एडवर्ड होस्टल में एक कमरा किराए पर लिया गया। वहाँ मैं तीन महीने तक रहा। डॉ० गयाप्रसाद भी एक महीना साथ रहे थे। सुखदेव से मालूम हुआ कि क्रान्तिकारी दल का नाम बदल कर सोशलिस्ट रिपब्लिकन

डॉक्टर गयाप्रसाद

ऐसोसिएशन कर दिया गया था। उन्हीं से मालूम हुआ था कि दल का सम्पूर्ण सङ्गठन-कार्य प्रान्तों में विभक्त कर दिया गया है। यू० पी० के नायक सिन्हा और शिववर्मा, पञ्जाब के भगतसिंह और सुखदेव, राजपूताना के कुन्दनलाल और बिहार के फनीन्द्रनाथ बनाए गए थे। चन्द्रशेखर आज़ाद सम्पूर्ण भारत के प्रधान सेनापति बनाए गए थे।

मि० आसफ़अली—गवाही में कही हुई उपरोक्त बातें सुनी हुई हैं, गवाह को उनका व्यक्तिगत ज्ञान नहीं है।

प्रताप भारत मोटर ट्रेनिङ्ग कॉलेज में मोटर चलाना सीख रहा था। उसने बतलाया कि उसका असली नाम महावीरसिंह था। अमृतसर में मैं एक महीना ठहरा था। शिववर्मा इलाहाबाद के मासिक पत्र "चाँद" के "फाँसी-अङ्क" के लिए लेख लिखने में बहुत अधिक व्यस्त थे।

रुपए की ज़रूरत

नवम्बर महीने में सुखदेव ने मुझसे कहा, कि दल को रुपए की सख़्त ज़रूरत है।

मैं लाहौर गया। वहाँ स्टेशन पर महावीरसिंह मिले। बाद में जयगोपाल, राजगुरु, कुन्दनलाल, आज़ाद, भगतसिंह और सुखदेव भी मिले। किशोरीलाल से भी पहले-पहल भेंट हुई। एक रोज़ सभा की गई। आज़ाद ने मुझसे कहा कि कल पञ्जाब नेशनल बैङ्क लूटा जायगा, इसके लिए सब लोग तैयार रहो।

इसके बाद अदालत स्थगित हो गई।

(क्रमशः)

* * *

केरल प्रान्तीय राजनीतिक परिषद में श्री० सेन गुप्त की गर्जना

"आगामी गोलमेज़-परिषद एक तमाशा होगी"

"पूर्ण स्वाधीनता से कम कुछ भी हमें स्वीकार नहीं हो सकता"

"आगामी संग्राम में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ हमारी शक्ति की परीक्षा हो जायगी"

"जब तक आर्थिक और सामाजिक अन्याय की भित्ति चकनाचूर न हो जाय, तब तक देश को शान्ति नहीं मिल सकती"

गत ३री मई को श्री० जे० एम० सेन गुप्त के सभापतित्व में केरल प्रान्तीय परिषद हुई। गत सत्याग्रह आन्दोलन में भारतवासियों ने किस उत्साह और लगन से भाग लिया था, उसका उल्लेख करते हुए आपने अपने अभिभाषण में कहा—"बारह महीनों तक ऐसा जान पड़ता था, मानो सूखी हड्डियों में फिर नए जीवन का सञ्चार हो आया हो। औरतों और बच्चों तक के हृदयों में देश के प्रति अपूर्व प्रेम जागृत हो उठा था। उनकी भोली आँखों में देश की व्यथा और अपमान का प्रतिविम्ब खिंचा हुआ था, उनके नेत्रों से देश को विदेशी शासन से स्वतन्त्र करने की महत्वाकांक्षा भी फूटी पड़ती थी। जब हम गत वर्ष के इतिहास की ओर ग़ौर करते हैं, तो हमारा हृदय अभिमान से परिप्लावित हो उठता है। आज भारत में ऐसा कौन बच्चा है, जिसकी छाती डण्डी (जहाँ महात्मा गाँधी ने पहला धावा किया था) का नाम सुन कर गर्व से फूल न उठती हो और कॉङ्ग्रेस के गौरव को स्मरण कर जो आनन्दातिरेक से सिहर न उठता हो?

सत्याग्रह आन्दोलन और उसके बाद

सज्जनो, गाँधी-इर्विन समझौते ने कुछ दिनों के लिए आन्दोलन को स्थगित कर दिया है। सम्राट के प्रतिनिधि ने, एक विद्रोही और अर्द्धनग्न-नेता की सलाह के लिए एक आसन पर आमन्त्रित कर ब्रिटेन और भारत के सम्बन्ध के इतिहास में एक नई घटना उपस्थित कर दी है। इसमें लॉर्ड इर्विन की तारीफ़ नहीं है। लॉर्ड इर्विन की सरकार भी इसके लिए प्रशंसा की पात्र नहीं है। तारीफ़ है इसमें आपकी और तारीफ़ है उन औरतों और बच्चों की, जिनके लिए मातृभूमि के स्वातन्त्र्य युद्ध में बड़ा से बड़ा त्याग भी तुच्छ है। उन लोगों ने ऐसी परिस्थिति उत्पन्न कर दी, कि सरकार उसकी अवहेलना न कर सकी। लॉर्ड इर्विन अच्छी तरह जानते थे कि इस फ़क़ीर के पीछे कितनी बड़ी शक्ति है। वे यह भी अच्छी तरह जानते थे कि ऑर्डिनेन्सों से राज्य नहीं चल सकता। उन्हें इस बात का भी पता था, कि जब तक महात्मा गाँधी सरकार का विरोध करते रहेंगे, तब तक अङ्गरेज़ों का राज्य-सञ्चालन एक तमाशा ही रहेगा। यह समझौता दोनों ओर के वैमनस्य को दूर करने के लिए ही किया गया है। किन्तु यह समझौता अस्थायी-सन्धिमात्र है। यदि सन्धि की शर्तें पूरी न की गईं, तो दोनों पक्ष को युद्ध छेड़ने का अधिकार है। महात्मा गाँधी ने साफ़-साफ़ शब्दों में कहा है, कि "आगामी कुछ महीनों में या तो हम पूर्ण स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे या मैं और सरदार पटेल फिर जेल जायँगे।" अभी विजय प्राप्त नहीं हुई है। हमारा उद्देश्य अभी सिद्ध नहीं हुआ है।

समझौते की शर्तों में ऐसी कोई बात नहीं है, जो कॉङ्ग्रेस-प्रतिनिधियों को पूर्ण-स्वाधीनता की माँग पेश करने से रोक सके। स्वतन्त्र भारत ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत रहेगा या उससे बाहर, इस बात का निश्चय भारतवासी ही कर सकेंगे। भारत अपने आन्तरिक शासन में तथा अपनी परराष्ट्र सम्बन्धी नीति में पूर्ण स्वाधीनता चाहता है। जनता या कॉङ्ग्रेस इससे कम में सन्तुष्ट नहीं हो सकती। इस प्रकार की राजनैतिक स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में भारत ज़रा भी नहीं दब सकता।

भावी गोलमेज़-परिषद में अनेक समस्याएँ उपस्थित होंगी। संरक्षणों और सङ्घ-सरकार के अधिकारों के सम्बन्ध में अनेक विवाद उपस्थित होंगे। शासन-विधान में संरक्षणों का होना कोई नई बात नहीं है। इङ्गलैण्ड और अमेरिका के शासन-विधान में इस प्रकार के संरक्षण मौजूद हैं। किन्तु उनका रूप कुछ दूसरा ही है।

भारत के भावी शासन-विधान में उपस्थित किए जाने वाले संरक्षणों को, मि० मैकडॉनल्ड ने तीन भागों में विभाजित किया है। इनमें एक संरक्षण तो शासक-मण्डली के लिए है। मि० रेमज़े मैकडॉनल्ड शासकों के हाथ में कुछ सुरक्षित अधिकार, इसलिए देना चाहते हैं, कि जब शासन-विधान भङ्ग हो जाय, या ऐसा होने की सम्भावना हो, उस समय शासकवर्ग अपने सुरक्षित अधिकारों द्वारा शासन-विधान की रक्षा कर सकें।

श्री० सेन गुप्त

इसके बाद दूसरे प्रकार के संरक्षण की बारी आती है। मि० मैकडॉनल्ड आर्थिक और ऋण सम्बन्धी नीति में भी संरक्षण रखना चाहते हैं। आप इस प्रकार के संरक्षण पर अधिक ज़ोर देते हैं। आपका कहना है कि इससे लाभ इङ्गलैण्ड को नहीं, बल्कि भारत को है। किन्तु प्रधान-मन्त्री यह नहीं कह सकते कि इङ्गलैण्ड ही भारत के आर्थिक और ऋण सम्बन्धी कार्यों के सञ्चालन में दक्ष है। वास्तव में अङ्गरेज़ों ने भारत में जिस आर्थिक नीति का अवलम्बन किया है, वह संसार के इतिहास का एक कलङ्कपूर्ण अध्याय है। अङ्गरेज़ों ने अपने व्यापार के लाभ के लिए ही आर्थिक नीति को अपने हाथ में रक्खा है। किसी भी स्वतन्त्र देश ने अपनी आर्थिक स्वतन्त्रता को विदेशियों के हाथों नहीं सौंपा है!

मि० मैकडॉनल्ड का तीसरा संरक्षण है, अल्प-मत वालों के सम्बन्ध में। मैं समझता हूँ कि अङ्गरेज़ व्यापारियों के अधिकार के सम्बन्ध में यह संरक्षण क़ायम किया गया है।

अब प्रश्न यह उठता है, कि क्या हम भविष्य में यूरोपियनों को अपना देश इस प्रकार लूटने देंगे? भारतवर्ष की इस समय जैसी सामाजिक अवस्था है, उसके अनुसार भारत में रहने वाले यूरोपियनों को अपने शासनाधिकार से हम वञ्चित नहीं कर सकते। आज तक अङ्गरेज़ सरकार, भारतवासियों की कोई परवाह न कर, केवल अङ्गरेज़ों तथा यूरोपियनों की ही भलाई की दृष्टि से कार्य करती आ रही है! अब हमें इस भेद को दूर करना होगा। म्युनिसिपल-लॉ का यह सिद्धान्त है, कि प्रत्येक नागरिक के साथ समानता का व्यवहार किया जाय। हम इस नियम को भङ्ग नहीं करना चाहते।

महिलाओ और सज्जनो! लक्षणों से यह स्पष्ट विदित होता है कि सरकार अपने अधिकार को नहीं छोड़ना चाहती। व्यापारिक संरक्षणों से जहाँ तक सम्बन्ध है, अङ्गरेज़ आत्म-समर्पण करने के लिए ज़रा भी तैयार नहीं हैं। मेरी यह धारणा कि आगामी गोलमेज़-परिषद केवल एक तमाशा होगी। अङ्गरेज़ अपने व्यापारिक हितों को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होंगे, और भारतवासी अपने जातिगत हितों के सम्बन्ध में आत्मसमर्पण नहीं करेंगे। मैं आपसे कह चुका हूँ, कि यह सन्धि चिरस्थायी नहीं है। हाँ, इसे चिरस्थायी बनाना अङ्गरेज़ों के हाथ में है। मेरी यह दृढ़ धारणा है कि संसार में ऐसी कोई भी शक्ति नहीं है, जो भारतवासियों को संसार के राष्ट्रों की पंक्ति में स्थान ग्रहण करने में बाधा पहुँचा सके। हमारी स्वतन्त्रता की यात्रा में, ऐसी कोई भी विघ्न-बाधा नहीं है, जो हमें अग्रसर होने से रोक सके। मैं अपने सामने स्वतन्त्र और संयुक्त भारत का चित्र देख रहा हूँ। इस चित्र के साथ ही मैं उस संग्राम का भी चित्र देख रहा हूँ, जिसमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के साथ हमारी शक्ति की परीक्षा हो जायगी।

केरल के नागरिको, मैं आप से और आप ही के द्वारा समस्त भारतीय जनता से अनुरोध करता हूँ, कि कमर कस कर तैयार हो जाओ। मैं कॉङ्ग्रेस के निर्भय और वीर कार्यकर्त्ताओं से तथा किसानों के दुख में काम आने वाले भाइयों से अनुरोध करता हूँ, कि अपनी शक्ति का सञ्चय करो और न्याय, समानता तथा भ्रातृत्व के लिए अपना बलिदान करने के लिए तैयार रहो, जब तक स्वतन्त्रता प्राप्त न हो जाय—जब तक आर्थिक और सामाजिक अन्याय की भित्ति चकनाचूर न हो जाय—तब तक देश को शान्ति नहीं मिल सकती। पूर्ण स्वाधीनता से कम कुछ भी हमें स्वीकार नहीं हो सकता। इसी सिद्धान्त को अपना सहचर बना कर हमें निर्भीक भाव से अग्रसर होना चाहिए!!"

* * *

मेरठ षड्यन्त्र-केस के अभियुक्तों के सनसनीपूर्ण बयान

विश्व-व्यापी विप्लव में भारत का स्थान

"क्रान्ति की ओर बढ़े चलो"

श्रमजीवी क्रान्ति का समर्थन :: कॉङ्ग्रेस के सिद्धान्तों की निन्दा

मेरठ षड्यन्त्र केस के अभियुक्त श्रीयुत जोशी ने अदालत के सामने अपना बयान देते हुए राष्ट्रीय क्रान्ति के सम्बन्ध में कहा, कि "ब्रिटिश साम्राज्यवाद का असर भारतवासियों के जीवन में बहुत अन्दर तक प्रवेश कर गया है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद निर्बलों के अर्थ-शोषण करने का एक अत्यन्त जटिल और सङ्गठित यन्त्र है। इसका अन्त सैनिक ढङ्ग के षड्यन्त्रों या किसी दल-विशेष के विप्लव से नहीं हो सकता। जन-समूह से अलग किए जाने वाले प्रयत्न व्यर्थ प्रमाणित होते हैं। दलगत विप्लवों से केवल इस बात का पता चलता है, कि लोग साम्राज्यवाद से असन्तुष्ट हैं और उसके विरुद्ध युद्ध करना चाहते हैं। ब्रिटिश साम्राज्यवाद के मुक़ाबले में लड़ाई छेड़ने के लिए साधारण जन-समूह का ज़बरदस्त सङ्गठन करना होगा। ब्रिटिश साम्राज्यवाद एक प्रकार की सङ्गठित समाज-व्यवस्था है और राष्ट्रीय क्रान्ति उसके विरुद्ध राष्ट्र की भली-भाँति सङ्गठित श्रेणियों का सामूहिक संग्राम है। अतः राष्ट्र की स्वाधीनता-प्राप्ति के लिए संस्थाओं का सङ्गठन अत्यन्त आवश्यक है।"

मज़दूरों तथा किसानों के यूनियनों के विषय में श्रीयुत जोशी ने कहा, कि "इन सामूहिक सङ्गठनों का ध्येय मज़दूरों तथा किसानों के हितों की रक्षा करना है। ये सङ्गठन उनकी दैनिक शिकायतों को दूर करने के साथ ही साथ अर्थ-शोषण प्रणाली को नष्ट कर देना चाहते हैं। ये दोनों ही कार्य उनके युद्ध के दो हिस्से हैं। शान्ति-मय अवसरों पर वे रक्षात्मक उपायों से युद्ध करते हैं और क्रान्ति के समय आक्रमणात्मक उपायों का प्रयोग करते हैं। श्रमजीवी दल इन्हीं सङ्गठनों के द्वारा पूँजीवादियों की साम्राज्यवादिता से रक्षात्मक या आक्रमणात्मक प्रकार का युद्ध करता है। सुधारवाद श्रमजीवी आन्दोलन के विपरीत है, इसलिए हम लोग उसके विरुद्ध लड़े और अपने आन्दोलन से उसे दूर हटा दिया।"

मि० जमनादास मेहता, श्री० सुभाषचन्द्र बोस और श्री० रुइकर-सरीखे राष्ट्रीय सुधारवादियों ने चाहा, कि क्रान्तिकारी श्रमजीवी आन्दोलन उन पूँजीपति सुधारवादियों के आन्दोलन के अधीन हो जाय, जिन पूँजीपति सुधारवादियों ने श्रमजीवियों की दैनिक आर्थिक स्थिति के सुधार का कभी कोई प्रयत्न नहीं किया। राष्ट्रीय सुधारवादी लोग पूँजीपतियों के एजेण्ट हैं। उनका उद्देश्य एक तरफ़ क्रान्तिकारी श्रमजीवी आन्दोलन की बाढ़ को रोकना और दूसरी ओर ब्रिटिश साम्राज्यवाद के मुक़ाबले में पूँजीपतियों की शक्ति को बढ़ाना है।

सामाजिक सुधारवादी

जोशी तथा बखेल सरीखे सामाजिक सुधारवादी कहते हैं, कि मज़दूरों तथा किसानों को राजनीति में पड़ने की कोई ज़रूरत नहीं है। मानो मज़दूर और किसानों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद से कोई कष्ट नहीं पहुँचता। उनका कहना है, कि श्रमजीवी दल को केवल अपनी आर्थिक दशा के सुधार का प्रयत्न करना चाहिए। मतलब यह है, कि श्रमजीवी दल को ग़ुलामी दूर करने का प्रयत्न न करके, केवल ग़ुलामी में संशोधन कराने का प्रयत्न करना चाहिए! श्रीयुत जोशी ने कहा, कि "ये सामाजिक सुधारवादी, जो श्रमजीवियों को राजनीति में न पड़ने और समाज के मौजूदा ढाँचे को बनाए रखते हुए, उन्हें अपनी आर्थिक दशा के सुधार की सलाह दे रहे हैं, वास्तव में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के एजेण्ट हैं। राष्ट्रीय तथा सामाजिक, दोनों ही प्रकार के सुधारवादी श्रमजीवी दल के युद्ध की निन्दा करने में एक हो गए हैं। वे श्रमजीवी श्रेणी की स्वाधीनता को पसन्द नहीं करते।"

श्रीयुत जोशी ने आगे चल कर अपने बयान में कहा, कि हम लोग श्रमजीवियों को यह पहले ही बतला चुके हैं, कि उनकी दशा में तब तक कोई स्थायी परिवर्तन नहीं हो सकता, जब तक कि वे अपने शत्रु, पूँजीवाद प्रथा को नष्ट न कर देंगे। इसीलिए हम लोगों ने श्रमजीवी-श्रेणी को अन्य श्रेणियों से मिलने नहीं दिया और श्रेणी-युद्ध की नवीन नीति को ग्रहण किया। हम लोगों ने मज़दूरों तथा किसानों का साथ स्वच्छ क्रान्तिकारी नीति के आधार पर दिया था, भ्रष्ट सुधारवादी नीति के आधार पर नहीं।

कॉङ्ग्रेस से मतभेद

कॉङ्ग्रेस के सम्बन्ध में अपने दृष्टिकोण को बतलाते हुए, श्रीयुत जोशी ने कहा, कि "हमारा और कॉङ्ग्रेस का मतभेद मौलिक है। कॉङ्ग्रेस और हमारे बीच का भेद पूँजीवाद और श्रमजीवीवाद का भेद है। हमारे और कॉङ्ग्रेस के बीच वैसा ही भेद है, जैसा कि पूर्ण स्वाधीनता और औपनिवेशिक स्वराज्य के बीच में है। इसके बाद श्रीयुत जोशी ने कॉङ्ग्रेस के स्वाधीनता-प्रस्ताव का इतिहास बतलाया। आपने कहा, कि दिल्ली की विराम-सन्धि करके कॉङ्ग्रेस ने अपने स्वाधीनता-प्रस्ताव का उल्लङ्घन किया है। कॉङ्ग्रेस वालों पर विश्वासघात का दोषारोपण किया जा सकता है। उन्होंने साम्राज्यवाद से सहयोग करने का मार्ग ग्रहण किया है।"

अपने अभियोग के सम्बन्ध में श्रीयुत जोशी ने कहा—"इस मामले में वास्तव में हम लोगों का विचार नहीं हो रहा है, विचार तो इस समय ब्रिटिश साम्राज्यवाद का हो रहा है। निर्णायक जज हमारे भारतीय श्रमजीवी हैं। हम अभियुक्त नहीं हैं, हम स्वयं मुद्दई हैं। हमें इस विषय में कुछ भी सन्देह नहीं, कि हमारे वास्तविक जजों का अन्तिम निर्णय यही होगा कि "क्रान्ति की ओर बढ़े चलो।"

इसके बाद जज ने श्रीयुत गौरीशङ्कर को अपना बयान देने के लिए कहा। श्रीयुत गौरीशङ्कर गत यूरोपीय युद्ध के समय ब्रिटिश जाति की तरफ़ से लड़ चुके हैं। आपने उस समय ब्रिटिश जाति का साथ देना कैसे उचित समझा था, इसका विवरण बतलाया। आपने कहा कि लड़ाई से वापस आने पर मुझे अपने देश की सेवा करने की अभिलाषा हुई, इसलिए मैं कॉङ्ग्रेस का सदस्य बन गया। मैंने खद्दर का प्रचार किया और किसानों तथा मज़दूरों का सङ्गठन किया। मेरे 'मज़दूर-किसान सङ्घ' से इस मज़दूर तथा किसान-पार्टी का कोई सम्बन्ध नहीं है। दूसरे अभियुक्तों के साथ अपने सम्बन्ध के विषय में आपने कहा, कि "यह बात ठीक है, कि मुज़फ़्फ़र अहमद ने अखिल भारतवर्षीय मज़दूर तथा किसान कॉन्फ़्रेन्स के लिए चन्दा एकत्र करने के अभिप्राय से मुझे कुछ रसीद-बुकें दी थीं। परन्तु बाद में जोशी और मुज़फ़्फ़र के यहाँ से कुछ अनिश्चित ढङ्ग के पत्रों के आने पर मैंने उस विषय में फिर कोई कार्रवाई नहीं की।" श्रीयुत जोशी के सम्बन्ध में आपने कहा, कि मुझे यह अच्छा नहीं मालूम होता था कि एक ऐसा व्यक्ति, जो अभी केवल विद्यार्थी था और जिसे दुनिया के सम्बन्ध में केवल किताबी ज्ञान था, मुझे किसी तरह की सलाह दे। मैं जोशी के आदेशों पर कुछ ध्यान नहीं दिया करता था। एक बार मैंने उन्हें लिख दिया था, कि मैं कॉङ्ग्रेस के साथ कन्धे से कन्धा भिड़ा कर कार्य कर रहा हूँ।

अन्त में श्रीयुत गौरीशङ्कर ने कहा कि मैं सात वर्ष से पक्का कॉङ्ग्रेसवादी हूँ। मैं कॉङ्ग्रेस के सिद्धान्त तथा उसके कार्यक्रम को किसी भी संस्था की अपेक्षा अधिक अच्छा समझता हूँ। कॉङ्ग्रेस देश भर की संस्थाओं से उच्च संस्था है और मैं उसके आदेशों को वचन तथा कार्य से पालन करना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

श्रीयुत एम० ए० मजीद

इसके बाद अदालत ने श्रीयुत एम० ए० मजीद से अपना बयान देने के लिए कहा। आपने भी उर्दू में अपना बयान दिया। श्रीयुत मजीद ने कहा, कि "मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं भारत के कम्यूनिस्ट पार्टी का, जो कि कोई ग़ैर-क़ानूनी संस्था नहीं है, सदस्य हूँ। मेरी गिरफ़्तारी के समय इस संस्था का कम्यूनिस्ट इन्टर-नेशनल के साथ कोई सम्बन्ध नहीं स्थापित हुआ था। फिर भी मैं कम्यूनिस्ट इन्टर नेशनल के प्रोग्राम का पूर्ण समर्थक हूँ।

"इतिहास की गति देखने से पता चलता है, कि भारत संसार की क्रान्ति में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भाग लेगा। बहैसियत कम्यूनिस्ट के मुझे उस क्रान्ति के परिणामों के विषय में कोई सन्देह नहीं है। मैंने पञ्जाब की मज़दूर तथा किसान-पार्टी के कार्यों में भाग लिया है, इस बात को मैं मानता हूँ। उस पार्टी का उद्देश्य क्रान्ति के द्वारा स्वाधीनता प्राप्त करना, पूँजीवाद को नष्ट करना तथा मज़दूरों और किसानों का प्रजातन्त्र क़ायम करना था। सार्वजनिक उपयोग की वस्तुओं को सहज सुलभ करना, उद्योग-धन्धों को प्रजातन्त्र शासन के अधीन कर देना, मज़दूरों के काम करने के घण्टों को कम करके ८ घण्टा प्रतिदिन कर देना भी उस पार्टी के कार्यक्रम में था। यह पार्टी कम्यूनिस्ट पार्टी न थी—वह केवल एक राष्ट्रीय क्रान्तिकारी संस्था थी।"

इसके बाद श्रीयुत मजीद ने कॉङ्ग्रेस तथा मज़दूर और किसान-पार्टी के बीच का अन्तर बतलाया। आपने कहा, कि कॉङ्ग्रेस का कार्यक्रम सुधारात्मक है, क्रान्तिकारी नहीं है। कॉङ्ग्रेस पूँजीवाद को नष्ट नहीं कर देना चाहती; केवल उसमें कुछ सुधार कर देना चाहती है! विपरीत इसके मज़दूर तथा किसान-पार्टी का उद्देश्य पूँजीवाद को नष्ट कर देना है!

इसके बाद आपने कम्यूनिस्ट पार्टी तथा मज़दूर और किसान-पार्टी का अन्तर बतलाया। आपने कहा, कि कम्यूनिस्ट पार्टी का निकट-ध्येय प्रजातन्त्रात्मक राष्ट्रीय क्रान्ति करके श्रमजीवी दल का आधिपत्य क़ायम करना है। उसका अन्तिम ध्येय राष्ट्रीय प्रजातन्त्र की क्रान्ति कराना है। मज़दूर तथा किसान-पार्टी का इनमें से केवल एक ही ऐतिहासिक ध्येय है।

* * *

क्या भारतीय महिलाएँ भी हिंसात्मक क्रान्ति की ओर बह रही हैं?

काशी के एक बम-सम्बन्धी मामले में तीन बंगाली स्त्रियाँ

पाठकों को स्मरण होगा, लाहौर षड्यन्त्र केस में कई महिलाओं के सम्मिलित होने की बात कही जाती है। श्रीमती दुर्गा देवी, श्रीमती सुशीला देवी तथा मुसम्मात प्रकाशो देवी के नाम फ़रार-अभियुक्तों की सूची में गवर्नमेण्ट की ओर से प्रकाशित हो चुके हैं और इनके पकड़ने के लिए पुरस्कारों की भी घोषणाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। देहली षड्यन्त्र केस में श्रीमती कमलावती देवी के पकड़े जाने तथा उनके कथनानुसार हिरासत में उनके सतीत्व पर आक्रमण करने का समाचार पाठक गत सप्ताह के 'भविष्य' में पढ़ चुके हैं, अब इन समाचारों को दृष्टि में रखते हुए, यह सन्देह निराधार नहीं कहा जा सकता, कि देश की महिलाएँ भी अब हिंसात्मक क्षेत्र में उतरने लगी हैं। इसके परिणाम पर विचार करना इस समय हमारा उद्देश्य नहीं है, हम केवल विचारशील देशवासियों का ध्यान इस ओर आकर्षित मात्र करना चाहते हैं।

—स० 'भविष्य'

उस दिन काशी के स्पेशल मैजिस्ट्रेट श्री० रघुनन्दनलाल दर की अदालत में उस नए मुक़दमे की पेशी हुई थी, जिसमें कहा जाता है कि विगत २५ सितम्बर, सन् १९३० को श्री० विमलकुमार राय, श्रीमती मृणालिनी दासी, श्रीमती योगमाया दासी और श्रीमती राधारानी के घर से बम बनाने के सामान बरामद हुए थे।

अदालत ने सब से पहले ख़ुफ़िया पुलिस के इन्स्पेक्टर श्री० हबीबुल मलिक का बयान लिया। गवाह ने कहा, कि गत ८ सितम्बर को दुर्गाकुण्ड की चौकी के पीछे एक बम का धड़ाका हुआ, जिससे लखपतिया नाम की एक स्त्री घायल होकर मर गई। मैं इस मामले की जाँच कर रहा था। मुझे ख़बर मिली, कि मुहल्ला हाथी-फाटक के मकान-नम्बर ३२।२७ में भभकने वाले पदार्थ और हथियार हैं। तदनुसार मैं २५ सितम्बर को दशाश्वमेध के दारोग़ा राना हरनामसिंह, कतिपय पुलिसमैन, हरी, गौरीशङ्कर तथा उमाधन भट्टाचार्य को लेकर उस मकान में गया। जब हम लोग अन्दर गए और मकान की तलाशी लेने की इच्छा प्रकट की, तो योगमाया ने वारण्ट दिखाने को कहा। इस पर मैंने कहा—मैं बिना वारण्ट के भी तलाशी ले सकता हूँ और मैंने तलाशी लेना आरम्भ कर दिया। एक कमरे के दक्षिण-पश्चिम कोने में एक सूट-केस मिला। उसे मैंने गवाहों के सामने खोला। उसमें से ऐसी चीज़ें बरामद हुईं, जिनसे मालूम होता था, कि इनसे बम बनाए जा सकते हैं। मैंने उन चीज़ों की फ़िहरिस्त बनाई और उस पर गवाहों के हस्ताक्षर करा लिए।

तलाशी के बाद, जिस समय फ़िहरिस्त बनाई जा रही थी, पुलिस-सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री० मानसिंह भी आ पहुँचे। इसके बाद मैंने मृणालिनी, योगमाया और सुविमलकुमार राय को गिरफ़्तार कर लिया। उमाधन की ज़बानी मालूम हुआ, कि तीनों अभियुक्त गत असाढ़ महीने से इस मकान में रहते हैं और ३॥) मासिक भाड़ा देते हैं। जाँच के समय तीनों अभियुक्तों ने हमसे कहा था, कि आठ-नौ दिन हुए यह सूट-केस राधारानी हमारे यहाँ रख गई थी। राधारानी उस दिन नहीं मिली।

२८ सितम्बर को मालूम हुआ, कि अस्सी मुहल्ले के मकान नं० १।९७ में लीलावती के यहाँ राधारानी छिपी है। मैंने फ़ौरन उस मकान की तलाशी ली। परन्तु राधारानी वहाँ भी न मिली। इतने में अम्बिकाप्रसाद ने मुझे बताया, कि दो स्त्रियाँ मकान की छत पर आकर मेरे घर की औरतों में बैठी हैं। मैंने अम्बिकाप्रसाद के घर में जाकर राधारानी को गिरफ़्तार कर लिया। उसी दिन मैंने भागवतप्रसाद और रमणीमोहन की भी तलाशी ली। भागवतप्रसाद से मालूम हुआ कि बनारस बम-केस की पैरवी के लिए एक कमिटी बनाई गई है और उसके लिए चन्दा एकत्र किया जाता है। उसने यह भी बतलाया, कि इसके लिए एक नोटिस नेशनल प्रेस में छपा है। मैंने नेशनल प्रेस जाकर उस नोटिस की असली प्रति अपने क़ब्ज़े में कर ली। गत १० अक्टूबर को सब चीज़ें रासायनिक परीक्षा के लिए भेजी गईं और जब उनकी रिपोर्ट आ गई, तो ज़ाब्ता-फ़ौजदारी की दफ़ा १६४ के अनुसार अभियुक्तों का बयान लेकर उनका चालान कराया गया।

श्री० उमाधन भट्टाचार्य की गवाही

इसके बाद उमाधन भट्टाचार्य की गवाही हुई। इसने कहा कि मकान नं० ३२।२७ मैंने किराए पर लिया है और अपनी ओर से दूसरे किराएदारों को दे रक्खा है। गत असाढ़ में उसका एक कमरा ३॥) महीने पर मृणालिनी तथा सुविमल को दिया था। इसी कमरे की तलाशी मेरे सामने हुई थी। ये सब चीज़ें मेरे सामने बरामद हुई थीं और फ़िहरिस्त पर मेरा ही हस्ताक्षर है।

राना हरनामसिंह की गवाही

इसके बाद तीसरे गवाह दारोग़ा राना हरनामसिंह की गवाही हुई। इसने पहले गवाह की तलाशी सम्बन्धी बातों का समर्थन करते हुए कहा, कि सूट-केस से सुतली की १८ पिंडलियाँ, १५ कारतूस, १ पुड़िया बारूद, दो ख़ाली नारियल, १ लोहे का चोंगा, कुछ लोहे का बुरादा और कई शीशियाँ मिलीं। इसके अलावा और भी बहुत सी चीज़ें सूट-केस में मिलीं, जिनकी फ़िहरिस्त बनाई गई और उस पर गवाहों के दस्तख़त करा लिए गए।

मेरे हलक़े में 'युवक-सङ्घ' नाम की एक संस्था है, जो ग़ैर-क़ानूनी विघोषित की जा चुकी है। गत १७ सितम्बर को मैंने इस सङ्घ के कार्यालय की तलाशी ली थी। इसके रजिस्टर से मालूम हुआ, कि भागवतप्रसाद और राधारानी भी इसके सदस्य हैं।

इसके बाद गवाह ने सूट-केस के यहाँ रक्खे जाने के बारे में उन्हीं बातों की ताईद की, जो पहले गवाह ने बताया था।

श्री० नलिनीमोहन की गवाही

चौथे गवाह नलिनीमोहन राय ने कहा कि मेरे सामने कमरे की तलाशी हुई तथा सूट-केस मय सामान के बरामद हुआ। मृणालिनी ने उस समय कहा था कि यह सूट-केस यहाँ राधारानी रख गई है। हमने अक्सर पहले मृणालिनी, योगमाया और राधारानी को पिकेटिङ्ग करते देखा है।

पाँचवें गवाह हरी अहीर ने नलिनी की बातों का समर्थन करते हुए कहा कि मेरे सामने तलाशी हुई और सूट-केस बरामद हुआ।

विगत सोमवार को इस मुक़दमे की दूसरी पेशी उपर्युक्त अदालत में हुई। राधारानी की ओर से श्री० अमोलकचन्द वकील पैरवीकार थे। मृणालिनी दासी जेल में बीमार थीं, इसलिए उनकी हाज़िरी माफ़ कर दी गई।

मुहम्मद लुक़मान की गवाही

मुहम्मद लुक़मान नाम के एक हेड-कॉन्स्टेबिल ने कहा कि मैं मार्च, १९२८ से जनवरी, १९३१ तक कोतवाली में हेड मुहर्रिर था। गत २५ सितम्बर को ख़ुफ़िया विभाग के दारोग़ा ने एक सूट-केस तथा दो बण्डल मुहर किए हुए मुझे मालख़ाने में रखने के लिए दिए थे, जो अदालत में मौजूद हैं।

युवक-सङ्घ और उसके सदस्य

इसके बाद गवाह भागवतप्रसाद ने अपने बयान में कहा कि सन् १९३० में यहाँ एक 'युवक-सङ्घ' नाम की संस्था थी। मैं इसका सदस्य था। योगमाया तथा मृणालिनी भी उसकी स्वयंसेविकाएँ थीं। मैं राधारानी को जानता हूँ। इसके दो मकान हैं—एक ख़ालिसपुरा में और दूसरा भेलूपुरा में। २५ सितम्बर सन् १९३० को मेरे मकान की तथा योगमाया और रमणीमोहन के मकानों की तलाशियाँ हुईं। इसके बाद मुझे मालूम हुआ कि मेरे नाम वारण्ट है, इसलिए मैं भाग गया। इसके बाद अक्टूबर, १९३० में वापस आया तो मुझसे राधारानी से भेंट हुई। वह उस समय ज़मानत पर छूटी हुई थी। उसने कहा कि हमारे मुक़दमे की पैरवी की जाए, ताकि हम लोग छूट जायँ। मैं राधारानी को श्री० शिवप्रसाद बेरी वकील के यहाँ ले गया। राधा के भाई का नाम मणीन्द्र है। उसने पैरवी के लिए कमेटी बनाने और चन्दा वसूल करने की बात कही। इसके बाद चन्दे के लिए नेशनल प्रेस में नोटिस छपाया गया। और उसे लेकर मिरज़ापुर चन्दा वसूल करने गया, राधा भी साथ थी। लौटते हुए राधारानी ने मुझसे कहा कि सूट-केस पुलिस उठा ले गई है, वह दयानन्द का है। दयानन्द परमानन्द का भाई है। मणीन्द्र ने मुझसे यह भी कहा था, कि कहीं उस सूट-केस को छिपा कर रख दो। उसमें बम बनाने का सामान है। तब मैंने उसे योगमाया के घर में रख दिया और उसे तथा उसकी माँ को बता दिया था, कि इसमें बम बनाने का सामान है।

* * *

हाईकोर्ट में प्रान्तीय सरकार की स्वेच्छाचारिता की निन्दा

चीफ़-जस्टिस और जस्टिस अब्दुल क़ादिर की कड़ी फटकार

सरकार की ओर से रहस्यपूर्ण मौनावलम्बन

पाठकों को स्मरण होगा कि लाहौर हाईकोर्ट ने नए षड्यन्त्र केस के मुख़बिरों को पुलिस की हिरासत से हटा कर सेण्ट्रल जेल में रक्खे जाने की हाल ही में आज्ञा दी थी। हाईकोर्ट की यह आज्ञा अमल में नहीं लाई जा रही है। फलतः हाईकोर्ट और सरकार में इस विषय में विवाद चल रहा है।

इस केस के अभियुक्तों के मामले की जाँच करने वाली स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने पब्लिक प्रॉसिक्यूटर ने चार दिन की मुहलत माँगी थी। चार दिन के बाद उन्होंने उत्तर दिया, कि मैं सरकार की नीति के सम्बन्ध में कुछ नहीं कह सकता। मुझसे कहा गया है, कि स्थानीय सरकार ने अपने ऊपर पूर्ण उत्तरदायित्व ले लिया है।

चीफ़ जस्टिस सर शादीलाल ने कहा, कि इस सम्बन्ध में मौन धारण कर सरकार अपनी सङ्कीर्णता का परिचय दे रही है। एक साधारण मनुष्य यदि मौनावलम्बन करे तो वह क्षम्य है, किन्तु सरकार के लिए ऐसा करना बहुत ही अनुचित है।

अभियुक्तों की ओर के वकील लाला जगन्नाथ ने कहा कि सरकार हाईकोर्ट की आज्ञा की अवहेलना करने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा रही है।

चीफ़ जस्टिस ने कहा, कि कोर्ट अवश्य इस बात पर ध्यान रक्खेगी कि उसकी आज्ञा के अनुसार कार्य हो रहा है या नहीं।

जस्टिस सर अब्दुलक़ादिर ने कहा कि पब्लिक प्रॉसिक्यूटर, सरकार और कोर्ट के बीच में सम्बन्ध-सूत्र हैं। सरकार को उनके द्वारा सच्ची बातें प्रकट कर देनी चाहिए थीं। हाईकोर्ट की आज्ञा की अवहेलना कर, सरकार और उसके एजेण्ट वास्तव में कोर्ट के महत्व को नष्ट कर रहे हैं।

सर शादीलाल—हमें इस बात की ख़बर मिलनी चाहिए कि मुख़बिर कहाँ और कैसे रक्खे गए हैं।

सरकारी वकील—वे लाहौर सेण्ट्रल जेल में, वहाँ के सुपरिण्टेण्डेण्ट के चार्ज में रक्खे गए हैं।

सर शादीलाल—क्या ख़ुफ़िया पुलिस के लोग वहाँ पहुँच जाते हैं?

सरकारी वकील—मैं नहीं जानता।

सर अब्दुल क़ादिर अभियुक्त इस सम्बन्ध में साफ़-साफ़ कहते हैं कि ख़ुफ़िया पुलिस वाले बिना रोक-टोक के उनके पास जाते हैं। ख़ुफ़िया पुलिस वाले वहाँ किस लिए जाते हैं। क्या आपका यह विचार है, कि अदालत के सामने सरकार को कुछ विशेष अधिकार है? यदि आप ऐसा समझते हों, तो प्रमाण दीजिए।

सरकारी वकील ने इस विषय पर सरकार से सम्मति लेने के लिए समय माँगा।

सर शादीलाल—आपको काफ़ी समय मिल चुका है। ४ दिन की मुहलत के बाद पब्लिक प्रॉसिक्यूटर आए तो उन्होंने अनिश्चित उत्तर दिया। क्या अदालत के सामने आप भी इसी तरह पेश आना चाहते हैं? यदि ऐसी ही बात है तो जान पड़ता है, कि अदालतों के सम्बन्ध में कुछ लोगों का विचित्र ख़्याल है।

सर अब्दुल क़ादिर—सरकार को यह अनुभव करना चाहिए, कि यदि वह अदालतों के साथ इस तरह पेश आएगी तो इससे न्याय में धक्का पहुँचेगा और यह स्वयं सरकार के हितों के विरुद्ध होगा। आज सरकार इस तरह पेश आती है, तो कल दूसरे लोग भी इसी तरह पेश आने लगेंगे।

लाला जगन्नाथ ने कहा, कि जब कोर्ट ने सेन्ट्रल जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट को मुख़बिरों को अपने जेल में भर्ती करने के लिए कहा तो सुपरिण्टेण्डेण्ट ने उत्तर दिया कि मुझे इस विषय में कोई आज्ञा नहीं मिली है और जेल में स्थान भी नहीं है। यह वास्तव में अदालत के विरुद्ध अवज्ञा का भाव फैलाना है। लाला जगन्नाथ ने आगे कहा कि हम भद्र-अवज्ञा आन्दोलन के सम्बन्ध में बहुत सुन चुके हैं, किन्तु यह अन्तिम स्थान है, जहाँ अवज्ञा की आशा की जा सकती थी।

श्री० सुखदेव की चिट्ठी के सम्बन्ध में अधिकारियों का कोरा जवाब!

चिट्ठी के लिए श्री० सुखदेव की माता की उत्सुकता

चीफ़ सेक्रेटरी के नाम लाला चिन्तराम थापड़ की चिट्ठी

स्वर्गीय श्री० सुखदेव के चचा लाला चिन्तराम थापड़ ने पञ्जाब-सरकार के चीफ़ सेक्रेटरी के पास निम्न-लिखित प्रार्थना-पत्र भेजा है :—

"मैं सुखदेव से लाहौर सेण्ट्रल जेल में २री मार्च को मिला था। उसने मुझसे कहा था, कि मैंने अपनी माता के पास हिन्दी में एक चिट्ठी लिखी है, जो डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट के पास है। डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब वहीं पर मौजूद थे। उन्होंने मुझसे कहा, कि बातचीत समाप्त कर, जब आप जाने लगेंगे, तो वह चिट्ठी मैं आपको दे दूँगा।

"बातचीत समाप्त कर जब मैंने उनसे चिट्ठी माँगी, तो उन्होंने कहा कि यद्यपि चिट्ठी में कोई ऐसी बात नहीं है, जिससे वह रोकी जा सके, तो भी मैं सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब को दिखा कर दे दूँगा; आप दूसरे दिन किसी आदमी को भेज दीजिएगा। दूसरे दिन मैंने अपने पुत्र मथरादास को चिट्ठी के लिए भेजा। उससे कहा गया कि चिट्ठी अभी सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब को नहीं दिखलाई गई है। सुखदेव की वह चिट्ठी प्राप्त करने में इस प्रकार असफल हो मैं लाहौर से लायलपुर चला आया। कुछ दिनों के बाद जेल के अधिकारियों ने मुझे सूचना दी कि २३वीं मार्च तक सुखदेव से मैं मिल सकता हूँ। यह सूचना पाकर मैं २३वीं मार्च को सेण्ट्रल जेल में गया, और डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट से, सुखदेव की चिट्ठी लौटा देने के लिए फिर कहा। उन्होंने कहा कि क़ैदी से मिलने की बात पहले तय हो जानी चाहिए, उसके बाद चिट्ठी लौटा दी जायगी। किन्तु सुखदेव से अन्तिम बार भेंट करने में भी इतनी बाधाएँ उपस्थित की गईं कि मुझे तथा सुखदेव के अन्य सम्बन्धियों को, बिना उससे भेंट किए ही लौट आना पड़ा। २४वीं मार्च को डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट से मैं फिर मिला और मैंने एक टाइप की हुई चिट्ठी उन्हें दी, जिसमें सुखदेव की किताबें तथा उसकी चिट्ठी माँगी गई थी। उन्होंने चिट्ठी पढ़ कर कहा कि चिट्ठी तथा किताबें बहुत शीघ्र लायलपुर के पते से लौटा दी जायँगी।

"डिप्टी सुपरिण्टेण्डेण्ट के यहाँ से मैं सीधे जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट के बङ्गले पर गया, और सुखदेव की चिट्ठी तथा किताबें लौटा दी जाने के सम्बन्ध में उनसे प्रार्थना की, सुखदेव की माता इस चिट्ठी के लिए बड़ी उत्सुक थीं। सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब ने मुझे विश्वास दिलाया, कि ये चीज़ें बहुत जल्द लायलपुर भेज दी जायँगी। ३१वीं मार्च तक प्रतीक्षा करता रहा; किन्तु जेल के अधिकारियों ने मुझे कोई सूचना नहीं दी। १ली अप्रैल को मैंने जेल के अधिकारियों के पास इस सम्बन्ध में एक पत्र लिखा और होम सेक्रेटरी के पास भी मैंने एक लम्बी चिट्ठी लिखी।

"इतनी कोशिश-पैरवी के बाद २१वीं अप्रैल को मुझे यह रूखा जवाब मिला कि सुखदेव ने कोई चिट्ठी लिख कर नहीं दी है। इस उत्तर से मानो मेरे पैर के नीचे से पृथ्वी खिसक गई। मैं बहुत ही क्षुब्ध हुआ। फाँसी के दिन सरदार भगतसिंह, श्री० सुखदेव और श्री० राजगुरु ने जो चिट्ठियाँ लिखी थीं, उनके सम्बन्ध में भी आपका ध्यान आकर्षित करना अनुचित नहीं होगा।

"इन चिट्ठियों के सम्बन्ध में मुझे एक उच्च कर्मचारी के सम्बन्धी से पता चला है। मैं अपनी बातों के प्रमाण में काग़ज़ात पेश कर सकता हूँ। मैंने २८वीं मार्च को होम सेक्रेटरी के पास इन चिट्ठियों के सम्बन्ध में लिखा था, किन्तु उन्होंने यह रूखा जवाब दिया, कि क़ैदियों ने कोई पत्र नहीं लिखा था।

"मैं प्रार्थना करता हूँ, कि इस मामले की जाँच की जाय और उसका जो नतीजा निकले उसकी सूचना मुझे दी जाय।"

२१ मई, सन् १६३१

भावी परिस्थिति की गम्भीरता
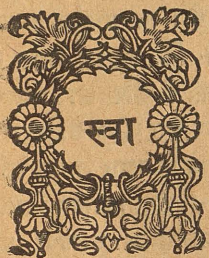
स्वाधीनता संग्राम के स्थगित हो जाने से देश का सब से बड़ा लाभ यह है, कि वह इस सन्धि की क्षणिक अवधि में अपनी और अपने विरोधियों की शक्ति का ठीक-ठीक अन्दाज़ा लगा सकता है, और अपनी गलतियों की पुनरावृत्ति रोकने के नए-नए उपाय सोच सकता है। बिना विराम के विकास नहीं होता। जीवन के प्रत्येक कार्य की, उसकी शक्ति के अनुसार, एक सीमा होती है। उस सीमा के आगे उस कार्य को जारी रखने के लिए बीच में विराम देना अनिवार्य है, कारण यह है, कि विराम की ही अवस्था में प्रकृति आगे के लिए अपनी शक्ति सञ्चय करती है। बुद्धिपूर्ण कार्य और विराम का सामञ्जस्य ही जीवन की सफलता का रहस्य है। विराम प्रकृति की एक अनिवार्य आवश्यकता है, कमज़ोरी की निशानी नहीं। उसे कमज़ोरी की निशानी समझ कर जो लोग प्रकृति के एक अनिवार्य नियम की अवहेलना करते हैं, उन्हें कभी न कभी इस अप्राकृतिक अवहेलना के लिए बहुत अधिक मूल्य देना पड़ता है। देश की इस विराम अवस्था में लोग भावी स्वाधीनता संग्राम की परिस्थितियों का अनुमान लगा सकते हैं और तदनुसार अपनी मोर्चेबन्दी का प्रबन्ध भी सोच सकते हैं। प्रत्येक आन्दोलन के बाद देश की ज़िम्मेदारी अधिकाधिक बढ़ती चली जा रही है। अतएव इस लेख में हम भारत के भावी स्वाधीनता संग्राम की एक जटिल परिस्थिति पर विचार करना चाहते हैं। अस्तु।

देश की तथा गवर्नमेण्ट की मौजूदा हालत को देखते हुए, ऐसा मालूम होता है कि अगले संग्राम में, यदि दुर्भाग्यवश ऐसा अवसर उपस्थित हुआ, तो हमें एक ज़बरदस्त आत्म-परीक्षा देनी होगी। अब तक देशवासियों को तरह-तरह के कष्ट देकर केवल उन्हें अपने निर्धारित लक्ष्य से विचलित करने का प्रयत्न किया गया है; किन्तु आगे चल कर पतन के प्रलोभन भी हमारे सामने रक्खे जायँगे, क्योंकि पहला उपाय देश के जाग्रत आत्माभिमान को दबाने में सर्वथा असफल प्रमाणित हो चुका है।

विगत राष्ट्रीय संग्राम ने गवर्नमेण्ट की ताक़त का वाह्य-स्वरूप एक बार ही नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। ब्रिटिश सत्ता का अनुचित आतङ्क लोगों के दिलों से बिल्कुल दूर हो गया है। अभी तक देश के दैनिक शासन के लिए पुलिस और अदालत यथेष्ट समझी जाती थीं। जनता के हृदय में पुलिस का आतङ्क था और अदालत का आदर था। यही दोनों बातें मिल कर शासन-चक्र बराबर चलाए जा रही थीं, परन्तु अब यह बात नहीं रही। अधिकांश देशवासियों के हृदय में, न अब पुलिस का आतङ्क है और न अदालत का सम्मान ही शेष रहा है। एक वह समय था, जबकि सात हज़ार मील दूर बैठे शहन्शाह के प्रतिनिधि के नाते गाँव के एक मामूली चौकीदार में बड़े-बड़े जन-समूहों को एक उँगली के इशारे से तितर-बितर कर देने की क्षमता थी; परन्तु वही भेड़-बकरीवत् जन-समूह आज लगातार लाठी-प्रहारों से भी टस से मस नहीं होता! वे न्यायालय, जहाँ की दीवारें तक कभी न्याय की गम्भीरता और निष्पक्षता का मौन-विज्ञापन दिया करती थीं—आज घृणा, अन्याय, प्रतिशोध और हिंसा के वायु-मण्डल से ढक गए हैं। न्यायाधीशों की आँखों के सामने अदालत के कमरों में पुलिस 'अभियुक्तों' के साथ मनमाना अत्याचार कर रही है, अभियुक्त अदालत का ध्यान आकर्षित करते हैं; परन्तु न्यायाधीश चुपचाप बैठे रहते हैं—इन न्यायाधीशों की इस परवशता पर हमारे हृदय में एक बार ही दया का स्रोत उमड़ पड़ता है! बार-बार के ऐसे दृश्यों ने न्यायाधीशों के स्वतन्त्र अस्तित्व पर सन्देह तो पैदा कर ही दिया है, साथ ही न्याय की तेजस्विता भी नष्ट कर दी है! वास्तव में इन तरल-पदार्थ रूपी न्यायाधीशों ने ब्रिटिश-सत्ता पर सब से ज़बरदस्त आघात किया है। केवल इसलिए, कि इस देश के निवासियों को ब्रिटिश न्यायालयों में सब से अधिक विश्वास था। नौकरशाही तथा न्यायालय के कुत्सित सम्बन्ध ने जनता में न्यायालयों के प्रति घृणा का भाव कूट-कूट कर भर दिया है। इसीलिए लाखों की संख्या में लोग अदालत की कार्रवाई में बिना भाग लिए जेल जाने लगे हैं।

न्याय को निष्पक्ष बनाए रखने के लिए संसार के सभी उन्नत देशों में यह नियम है कि अभियोग लगाने वाले और उसके निर्णय करने वाले अलग-अलग विभाग होते हैं, परन्तु यहाँ की अनियन्त्रित शासन-प्रणाली संसार भर से न्यारी है। पुलिस और अदालत किसी भी शासन-व्यवस्था के मूल स्तम्भ होते हैं। इनका डाँवाडोल होना शासन-व्यवस्था के अधःपतन की प्रारम्भिक सूचना है। सत्याग्रह संग्राम के रोकने में पुलिस के प्रयत्न बिल्कुल निरर्थक और थोथे मालूम होते थे। ऐसा मालूम होता था, मानो कुछ मनुष्यों का सङ्गठित समूह लाठी से पानी जुदा करने का उपहास्य-प्रयत्न कर रहा है!!

देश की नौकरशाही इन सब बातों को ख़ूब समझती है और यह भी समझती है, कि उसने सविनय अवज्ञा के अहिंसात्मक आन्दोलन का सामना करके कोई कीर्ति नहीं कमाई है, किन्तु भविष्य में वह कोई दूसरा ही उपाय काम में लाना चाहती है। अमन और क़ानून की कशमकश में न तो अमन की रक्षा हुई न क़ानून की; परन्तु अमन की उसे चिन्ता भी नहीं है, उसे एकमात्र चिन्ता क़ानून-रक्षा की है। अमन की चिन्ता होती, तो कानपुर की फ़ौज और पुलिस खड़ी-खड़ी हत्याकाण्ड और अग्निकाण्ड न देखती। आठ-आठ रात और दिन कानपुर-जैसे अन्यतम व्यापारिक केन्द्र का दङ्गा इतना भीषण न हुआ होता! प्रजा त्राहि-त्राहि करती हो और ज़िलाधीश अपने बँगले पर सुख की नींद सोता हो, इस घटना से देशवासियों को शिक्षा ग्रहण करना चाहिए! हमें भ्रम में न पड़े रहना चाहिए। कानपुर के अधिकारियों ने अमन और हिन्दुस्तानियों की जानो-माल की रक्षा का भार लगभग त्याग ही दिया था, इसकी ज़िम्मेदारी उसने गाँधी और कॉङ्ग्रेस, को दे दी थी—यह घटना अभी कल की है!

सच बात तो यह है, कि देश और नौकरशाही की लड़ाई उस हद तक पहुँच चुकी है, जहाँ अब परस्पर किसी प्रकार की आशा-निराशा की बात पैदा ही नहीं होती। दोनों तरफ़ के लोग अपनी-अपनी स्थिति समझ चुके हैं। अब तो केवल अपने-अपने अस्तित्व की लड़ाई शेष है। ऐसी अवस्था में वर्तमान शासन-प्रणाली के लिए चोरी, डकैती, हत्याकाण्ड, अग्निकाण्ड और तरह-तरह के दङ्गे रोकना या उनके लिए प्रबन्ध करते फिरना सिवा ब्रिटिश के अपव्यय के और क्या हो सकता है? प्रश्न तो यह है, कि यह सब किया भी किसके लिए जाय? क्या उन्हीं के लिए, जिन्होंने उसके शासन की जड़ हिला दी है? उनके लिए, जिनके दिलों में ब्रिटिश शासन-प्रणाली के प्रति कृतज्ञता का लेश मात्र भी शेष नहीं रह गया है? देश को सावधान हो जाना चाहिए! अब इस शासन-प्रणाली को उसकी जान-माल हिफ़ाज़त करने से विशेष सरोकार नहीं रह गया है। उसका एक-मात्र ध्यान क़ानून की रक्षा करना है, सो भी व्यवस्थापिका सभाओं द्वारा पास किए गए क़ानूनों का नहीं, बल्कि केवल एक व्यक्ति के विशेषाधिकार द्वारा बनाए गए ३२ करोड़ ('नई' मनुष्य-गणना के अनुसार ३५ करोड़ ??) नर-नारियों पर लागू होने वाले ऑर्डिनेन्सों का! विगत राष्ट्रीय संग्राम में देशवासी इस बात का भी पूर्णतया अनुभव प्राप्त कर चुके हैं।

देश भर में विश्रृङ्खलताओं को पूरी तरह से खुल खेलने का मौक़ा दिया जायगा। बड़े-बड़े और छोटे-छोटे अव्यवस्था फैलाने वाले नित्य नए दल नौकरशाही की ओर से क़ायम किए जायँगे। नित्य नई चढ़ाइयाँ और भिन्न-भिन्न प्रकार के धावे होंगे और साधारण दैनिक शासन के प्रतिबन्ध उनमें कोई दस्तन्दाज़ी न करेंगे। अपढ़, गँवार और ग़रीब मनमानी करने की इस स्वाधीनता को ही स्वराज्य समझ लेंगे और इस प्रकार देश का वातावरण अशान्त बनता चला जायगा! विश्रृङ्खलताओं के बीज बोए जायँगे और उन्हें पूरे हद तक बढ़ने का अवसर दिया जायगा। कॉङ्ग्रेस का आन्दोलन शान्तिमय है। गवर्नमेण्ट चाहे कितना भी उद्योग करे; किन्तु इस अभागे देश की नौकरशाही और पुलिस उसको ऐसा शान्तिमय वातावरण कदापि नहीं रहने दे सकती। सम्भवतः साधारण दैनिक शासन द्वारा समाज में कुछ हद तक अमन बनाए रख कर उसने अब तक कॉङ्ग्रेस का बल ही बढ़ाया है। अब वह इस बल के आधार को खींच लेना चाहती है, जिससे इस देश के

स्वतन्त्रता-प्रेमियों की शक्ति बँट जाय और यह सङ्गठित-शक्ति शासन-प्रणाली के विरुद्ध काम में न लाई जा सके। देशवासियों को अपनी इस नई परिस्थिति और उसकी ज़िम्मेदारी से सावधान हो जाना आवश्यक है। ऐसी परिस्थिति भविष्य में और भी भयङ्कर रूप धारण कर सकती है। विरोधियों को उसकी चिन्ता नहीं है, क्योंकि वह उनके बल-प्रयोग का स्वर्ण-अवसर होगा। नौकरशाही की सञ्चित शक्ति का उपयोग ऐसे ही अवसरों पर हो सकता है; किन्तु देश का कर्तव्य है, कि वह उसे ऐसा अवसर न प्रदान करे। किसी डर से नहीं, वरन् अपने ही कल्याण के लिए। अव्यवस्था से देश का कल्याण नहीं हो सकता। यदि अव्यवस्था से कल्याण होना होता, तो सन् ५७ में ही हो जाता। देश को केवल इस ग़ैर ज़िम्मेदार शासन-प्रणाली को बदल देने की लड़ाई ही नहीं लड़ना है, बल्कि उसे स्वयं अपने देशवासियों की अव्यवस्थाओं का भी सामना करना पड़ेगा!

देश में अमन बनाए रखने का काम बहुत-कुछ देशवासियों को अपने हाथों में ले लेना पड़ेगा, क्योंकि वर्तमान शासन-प्रणाली इस विषय में उदासीन हो गई है। देश को इस अवसर के दुरुपयोग से बचाने के लिए प्रबल प्रयत्न करने की ज़रूरत पड़ेगी। बड़े-बड़े और छोटे-छोटे दलों को दलगत स्वार्थ और लूट से रोकना होगा। लोगों का ध्यान छोटे-छोटे स्वार्थों में फँसने से रोक कर राष्ट्रीय स्वार्थ की तरफ़ बराबर बनाए रखना पड़ेगा। सर्वसाधारण में इस बात का प्रचार करना होगा, कि 'स्वराज्य' अनियन्त्रण या अव्यवस्था का पर्यायवाची नहीं है, वह भी एक प्रकार का नियन्त्रण ही है। यदि हम ये सारी बातें सफलतापूर्वक कर सकें, तभी हम इस जाल में फँसने से बच सकेंगे, जो कि देश भर में विश्रृङ्खल प्रवृत्तियों को मनमानी करने का मौक़ा देकर तैयार किया जा रहा है। देशवासियों को इस नई परिस्थिति पर ज़रा ठण्डे दिल से विचार करना चाहिए।

* * *

चीन की नई समस्या

भारत का पड़ोसी चीन एशिया का एक उदीयमान एवं उज्ज्वल राष्ट्र है। उसके उत्तरोत्तर ऊपर उठते हुए राष्ट्रीयता-सूर्य के सामने चीन की प्राचीन अराष्ट्रीय पद्धतियाँ अन्धकार की तरह विलीयमान होती चली जा रही हैं।

चीन की नानकिङ्ग सरकार ने चीन में रहने वाले विदेशियों पर लागू होने वाले एक नए क़ानून की घोषणा की है, जिसके अनुसार आगामी पहली अक्टूबर, १९३१ से विदेशियों के अदालती मामलों का विचार उनकी अपनी-अपनी अदालतों में न होकर, चीन की राष्ट्रीय अदालतों में ही हुआ करेगा। इसके लिए जहाँ विदेशियों के प्रमुख केन्द्र हैं, वहाँ दीवानी तथा फ़ौजदारी की ख़ास अदालतें नियत कर दी जायँगी।

चीन में रहने वाले विदेशी इस क़ानून से बहुत असन्तुष्ट हुए हैं। इस सम्बन्ध में उनमें और सरकार के बीच बहुत समय तक बातचीत चलती रही, परन्तु परिणाम कुछ नहीं निकला। एशियाई देशों की राष्ट्रीयता साम्राज्यवादियों के समझ में नहीं आती, इसीलिए चीन की राष्ट्रीयता मानने में वे सङ्कोच करते हैं। स्वयं वे अपने-अपने देशों में एशियाई नागरिकों के लिए उन देशों में प्रवेश करने तक के सम्बन्ध में कैसे-कैसे कड़े क़ानून बनाते हैं, इस पर उनका ध्यान नहीं जाता। चीन ने तो उपरोक्त क़ानून द्वारा चीन देश की अदालत के सामने केवल देशी तथा विदेशी नागरिकों की समानता ही क़ायम की है। वास्तव में विदेशियों के प्रमुख केन्द्रों में उनके लिए ख़ास अदालतों के प्रबन्ध कर देने की घोषणा करके उसने विदेशियों के साथ कुछ रियायत ही की है। परन्तु वे साम्राज्यवादी विदेशी, जो कभी चीन को पैरों तले दबा कर रख चुके हैं, अब इन बातों से कैसे सन्तुष्ट हो सकते थे? उनका कहना है, कि हमें अपनी अदालतों द्वारा अपने मामलों के विचार कराने का अधिकार तब तक बना रहे, जब तक कि हमें चीनी अदालतों पर विश्वास न हो जाय। जब तक इन महाप्रभुओं का विश्वास नहीं जम जाता, तब तक के लिए विदेशी चीन को ख़ाली ही क्यों नहीं कर देते? जब चीनी अदालतों पर विश्वास जम जाय तब वे आकर रह सकते हैं; व्यर्थ की इस छेड़छाड़ से क्या लाभ सोचा गया है? जिस देश में रहना है, उसके निवासियों से अपने लिए अधिक न्याय की इच्छा रखने वालों को उस देश में रहने का कोई अधिकार नहीं है। चीन चीनियों का है, जैसे इङ्गलैण्ड अङ्गरेज़ों का है और फ़्रान्स फ़्रेञ्चों का।

सुना जाता है, कि इन विदेशियों में से ब्रिटेन सब से अधिक असन्तुष्ट है। फ़्रान्स, जापान, संयुक्त-राष्ट्र अमेरिका आदि चीन की राष्ट्रीयता स्वीकार करने में अधिक आना-कानी नहीं कर रहे हैं, किन्तु ब्रिटिश-सिंह अभी ऐसा करने को तैयार नहीं है। हाल के समाचारों से पता चलता है, कि अङ्गरेज़ों का एक जङ्गी जहाज़ चीन की ओर रवाना हो चुका है। यद्यपि इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं बतलाया गया है, किन्तु यदि इस नई समस्या पर खींचातानी दोनों ओर से बढ़ गई, तो परिस्थिति भयङ्कर हो जाने की सम्भावना है।

* * *

अङ्गरेज़ व्यापारियों का प्रलाप

यूरोपियन एसोसिएशन के सभापति मि० विलियर्स आजकल ब्रिटेन में भारत के अङ्गरेज़ व्यापारियों के हितों की रक्षा के लिए प्रचार-कार्य कर रहे हैं। आप इस सम्बन्ध में प्रधान-मन्त्री, मि० बेन, लॉर्ड पील, मि० चर्चिल, मि० बाल्डविन और लॉर्ड रीडिङ्ग से मिल चुके हैं। आपका कहना है कि "भारत को अब तक जितना शासन-सुधार मिल चुका है, वह बहुत अधिक है। अङ्गरेज़ व्यापारी इससे अधिक त्याग करने के लिए तैयार नहीं हैं। यदि ब्रिटेन ने भारत के साथ अब कुछ भी रियायत की, तो यह याद रहे कि अङ्गरेज़ व्यापारी भारत के मुसलमानों तथा अन्य अल्प-संख्यकों को अपनी तरफ़ मिला लेंगे और बल प्रयोग करने तक से न हिचकेंगे।"

बल प्रयोग करने की बात कोई नई नहीं है। बल-प्रयोग तो अङ्गरेज़ी शासन के प्रारम्भ से लेकर आज तक बराबर ही होता आया है, परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। मुसलमानों तथा अन्य अल्प-संख्यकों को अपनी तरफ़ मिलाने के प्रयत्न भी धीरे-धीरे असफल ही प्रमाणित होते जा रहे हैं। ऐसी धमकियों से अब भारतवासी विचलित नहीं होते। भारतवासियों के पास बल-प्रयोग का सामना करने के लिए जो अस्त्र मौजूद है, वह संसार भर में किसी के पास भी नहीं है। हमारे इस अस्त्र के सामने युद्ध करने के आधुनिक सभी सामान पुराने और निरर्थक प्रमाणित हो चुके हैं। वायुयानों का कार्यक्षेत्र आकाश में, स्थल-सेना का पृथ्वी-तल में और जल-सेना का समुद्र-तल में परिमित है, परन्तु सत्याग्रही सेना का कार्यक्षेत्र वह विचित्र प्रदेश है, जहाँ वायुयान नहीं पहुँचते, स्थल-सेनाएँ नहीं पहुँचतीं और न जल-सेनाएँ ही पहुँच सकती हैं। अच्छा हो, यदि अङ्गरेज़ व्यापारी बल प्रयोग करने के पहले अपने बल और हमारे बल का ठीक-ठीक अनुमान लगा लें।

* * *

मुसलमानों का अपमान!

अभी हाल ही में, भारत की 'गौराङ्ग सभा' (यूरोपियन एसोसिएशन) के सभापति मि० विलियर्स ने अपने एक भाषण में कहा है, कि भारत-प्रवासी अङ्गरेज़ों को चाहिए, कि मुसलमानों को मिला कर हिन्दुओं को शिक्षा देने की चेष्टा करें। इसके बाद हाल में 'मैञ्चेस्टर गार्जियन' ने सलाह दी है, कि मुसलमानों को रुपए देकर उनसे विलायती कपड़े की दूकानें खुलवानी चाहिए। यद्यपि हम इस तरह की बातों के लिए अङ्गरेज़ों को दोष देना नहीं चाहते—क्योंकि हमारे बहिष्कार आन्दोलन से उनकी स्वार्थपरता को बुरी तरह ठेस लगी है, इसलिए वे बौखला उठे हैं और भारत के बाज़ार में अपना माल बेच कर मालामाल बने रहने के लिए तरह-तरह की तरकीबें सोचा करते हैं—परन्तु मुसलमानों के सम्बन्ध में उनकी जो धारणा है, वह वास्तव में बड़ी ही अपमानजनक है। क्या उपर्युक्त कथनों से यह बात प्रमाणित नहीं होती कि अङ्गरेज़ भारत के मुसलमानों को देशद्रोही समझते हैं और आशा करते हैं, कि वे रुपए के लोभ में पड़ कर देश की भलाई-बुराई का ख़्याल न करके विलायती कपड़े के प्रचार में अङ्गरेज़ों का साथ देंगे? मुसलमानों को—विशेषतः राष्ट्रीय विचार के मुसलमानों को—ऐसी अपमानजनक उक्तियों का विरोध करना चाहिए।

* * *

'मरे को मारे शाह मदार!'

भारत का रेलवे-विभाग कुछ दिनों से अपना ख़र्च घटाने की चेष्टा में था और इसके लिए कई उपाय भी सोचे गए थे; परन्तु हाल की ख़बरों से पता लगा है कि सनातन प्रथानुसार स्वल्प वेतन वाले भारतीय कर्मचारियों को निकाल देना ही, सबसे बढ़ कर समीचीन उपाय मान लिया गया है और 'शुभस्य शीघ्रम्' के अनुसार सन्, १९१९ और २० के पाँच वर्षों में जो भारतीय कर्मचारी बहाल किए गए थे, उन्हें नौकरी छोड़ देने के लिए नोटिसें भी दी जाने लगी हैं। फलतः इस अन्धाधुन्ध बढ़ती हुई बेकारी के मामले में रेलवे-विभाग की इस 'ग़रीब मार' नीति का परिणाम कितना भयावह होगा, यह बताने की आवश्यकता नहीं। रेलवे-विभाग में मोटी तनख़्वाहें और प्रचुर 'अलाउन्स' पाने वाले अङ्गरेज़ कर्मचारियों की कमी नहीं है, अगर उनमें से कुछ, जिनका कार्य-काल समाप्त होने को है, हटा दिए जाते या कुछ दिनों के लिए, उन्हें कुछ कम वेतन देकर काम कराया जाता, तो सम्भवतः ख़र्च घटाने वाली समस्या आसानी से हल हो जाती और बेचारे ग़रीब भारतवासियों की रोज़ी मारने की आवश्यकता न पड़ती। परन्तु ग़रीबों का गला घोंट कर अपनी तोंदें मोटी करने वाले निष्ठुर प्रकृति वालों से ऐसी आशा करना केवल विडम्बना मात्र है; क्योंकि वे जानते हैं कि भारतवासी पराधीन हैं और उनमें इस अन्याय के प्रतिकार की क्षमता नहीं है।

* *
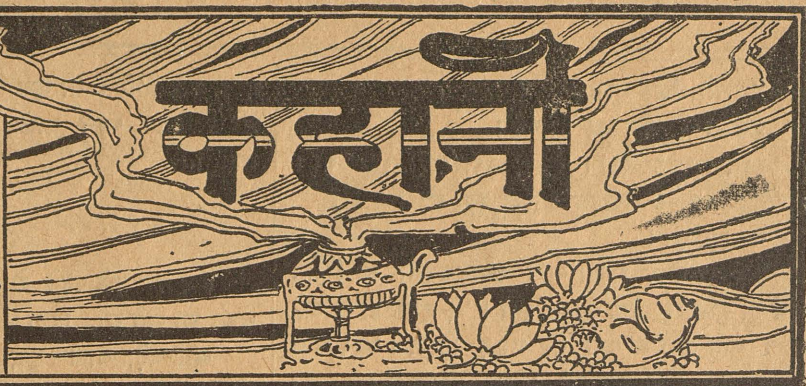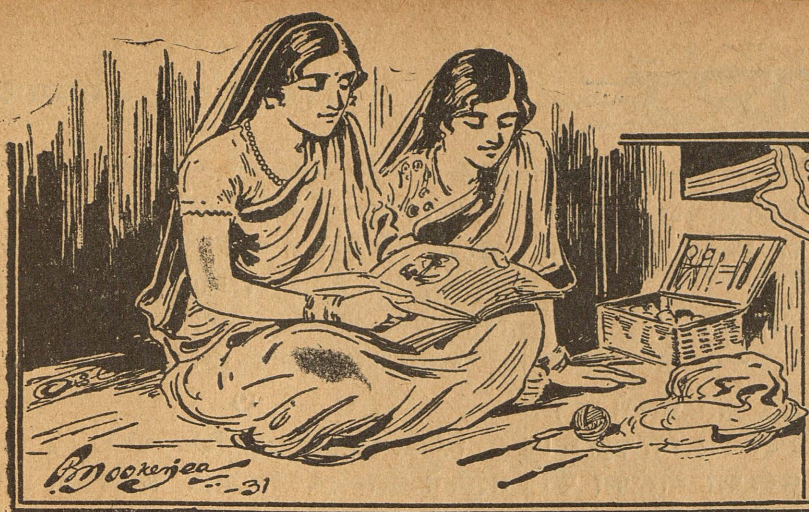
स्वदेश के लिए !

[श्री० "अरुण"]

ड्रोवेस्की ने पूछा—पिता ! सच्चा सैनिक कौन है ?

उत्तर मिला—देश-सेवक।

"धर्म किसे कहते हैं ?"

"स्वदेश-सेवा को।"

"शान्ति कहाँ है ?"

"कर्त्तव्य-पालन में।"

"सफल-जीवन किसे कहते हैं ?"

"जो स्वदेश-सेवा में उत्सर्ग हो।"

"मुक्ति कैसे मिलती है ?"

"मरने में—स्वदेश के लिए !"

अट्ठारह वर्ष का अल्हड़ युवक कुछ चौंका—ठठा कर हँस पड़ा। बोला—सच ! स्वदेश के लिए !

थोड़ी देर जहाँ का तहाँ खड़ा-खड़ा कुछ सोचता रहा। फिर पादरी को सलाम कर एक ओर चल दिया।

प्रकृति नीरव थी।

युवक ने सुना—रास्ते के ऊँचे-ऊँचे वृक्ष उसकी ओर देख कर कह रहे थे—'स्वदेश के लिए !'

शीतल समीर भी सुवासित पुष्पों का सौरभ लेकर कह रहा था—'स्वदेश के लिए !'

सन्ध्या ने—जाते-जाते ड्रोवेस्की से रागमयी भाषा में कहा—'स्वदेश के लिए !'

उसके अन्तस्तल से अचानक ध्वनि निकली—'स्वदेश के लिए !'

२

ज़ारशाही का ज़माना था। नौकरशाही की तूती बोल रही थी। पूँजीपतियों का अत्याचार दिनों-दिन बढ़ता जा रहा था। श्रमजीवियों में घोर असन्तोष फैल रहा था। सारे रूस में त्राहि-त्राहि मची हुई थी।

निरपराध, निर्दोष, अपने पसीने की गाढ़ी कमाई खाने वाले, असहाय ग़रीबों को पीस डालने के लिए नए-नए कर लगाए जा रहे थे। दमन के घोर से घोर साधनों का आविष्कार और उपयोग हो रहा था। अधिकारियों की बन आई थी। कूटनीति का बाज़ार गरम था। कोई पूछ-जाँच करने वाला न था।

इस राजनैतिक प्रगति के विरुद्ध आन्दोलन करने वाले सैकड़ों देशभक्त वीर फाँसी चढ़ चुके थे। हज़ारों निर्वासित होकर साइबेरिया में अपने जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहे थे। मास्को के कारागार की अँधेरी कोठरियों में सैकड़ों ने तड़प-तड़प कर अपने प्राण दिए थे। असंख्य निर्दोष नवयुवकों को विद्रोही बता कर तोप से उड़वा दिया गया था। केवल—"स्वदेश के लिए !"

अत्याचार की—मृत्यु की—भीषण कसौटी पर कसे जाकर भी स्वाधीनता के पुजारी, देश के मतवाले वीरों का उत्साह अदम्य था ! शान्तिमय क्रान्ति का अमोघ अस्त्र हाथों में लेकर उन्होंने राज-सत्ता को कर्तव्य के मैदान में ललकारा ! हँसते हुए मृत्यु का स्वागत किया ! फाँसी के फन्दों को विजय-माल की भाँति गले में पहिना ! नरक-सदृश कारागार को भी मुक्ति का द्वार समझ कर सहर्ष अपनाया ! कठिन यन्त्रणाओं को चुपचाप सहन किया ! यातनाओं को आलिङ्गन करने में उन्होंने अपना गौरव समझा ! किन्तु कर्त्तव्य से विमुख न हुए ! केवल—"स्वदेश के लिए !"

परन्तु सहनशीलता की भी एक सीमा होती है !

अधिकारी-वर्ग अपनी दमन-नीति को ज़ोरों के साथ स्थायी बना चुके थे, उनकी निरङ्कुशता बढ़ती जा रही थी !

देश भर में विप्लव की भयङ्कर आग भभक उठी ! प्रतिशोध और प्रतिहिंसा का भाव पीड़ित प्रजा के बच्चे-बच्चे के हृदय में जाग्रत हो गया !

फिर क्या था ! जैसे को तैसा !

३

"सलाम क्यों नहीं किया ?"

"मेरा कौन लगता था, जो सलाम करता !"

"पहिचानते भी हो ?"

"होगा कोई—मुझसे क्या !"

"मालूम हो जायगा—तुमसे क्या ?—ज़ार का प्राइवेट सिपाही था ! समझे ?"

"हूँ।"

"ड्रोवेस्की ! तुम बड़े विचित्र हो। भई, परेशान हूँ तुम्हारे पीछे !"

"क्यों ?"

"अपने साथ-साथ मुझे भी ले डूबोगे—काम ही ऐसे करते हो !"

"तो चली जाओ मेरे पास से, मुझे तो अकेले ही आनन्द आता है।"

"यह नहीं हो सकता !"

"अच्छा मैं ही जाता हूँ—सलाम !"

वह चलने लगा।

फ़्लोरा ने उसका हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचा—"मैं न जाने दूँगी.........।"

"छोड़ दो,—"

"न—तुम नाराज़ हो गए ड्रोवेस्की !"

"कौन कहता है ! मुझे जाने दो, अब देर होती है।"

"थोड़ी देर और बैठो, फिर चले जाना।"

"देर हो रही है फ़्लोरा !" ड्रोवेस्की चल खड़ा हुआ !

फ़्लोराइना कुछ सोचती रही, फिर उठ कर उसके पीछे-पीछे चली।

चौमुहानी पर पहुँच कर ड्रोवेस्की ने पीछे घूम कर देखा, फ़्लोरा उसके साथ धीरे-धीरे चली आ रही थी !

ड्रोवेस्की ने रोष-भरे स्वर में कहा—तुम क्यों आईं यहाँ ? किसने तुमसे मेरे पीछे लगने को कहा था ?

फ़्लोरा ने चुपचाप सिर झुका लिया !

ड्रोवेस्की आगे गली में जाकर अदृश्य हो गया।

फ़्लोरा की डबडबाई आँखों से दो आँसू टपक पड़े !

वह भी गली में जाकर ड्रोवेस्की के मकान के चबूतरे की सीढ़ियों पर बैठ गई !

अँधेरा हो चला था !

४

आधी रात बीत चुकी थी। गली में सन्नाटा छा रहा था। केवल थोड़ी दूर पर एक लालटेन टिमटिमा रही थी।

ड्रोवेस्की ने मेज़ का ड्रायर खोल कर एक रिवॉल्वर निकाला। उसे घुमा-फिरा कर अच्छी तरह देखा, घोड़े की परीक्षा की। फिर कपड़े से उसकी नली साफ़ करके गोलियों की बेल्ट से छः कारतूस निकाल कर उसमें लगाए, रिवॉल्वर को ओवरकोट की जेब में डाला। सिगरेट सुलगाया और धीरे से दर्वाज़ा ठेल कर बाहर आया।

फिर लौट पड़ा—कुछ भूल रहा था ! बक्स खोल कर एक फ़ोटो निकाला और उसे जेब में रख कर बड़ी सतर्कता से बाहर निकला। कान गली की ओर लगे हुए थे ! ताला बन्द न करके, उसने किवाड़ आगे को खींच दिए और चबूतरे पर आ गया।

सीढ़ी पर उतरते ही उसका पैर किसी कोमल चीज़ पर पड़ा और वह फिसल कर गली में मुँह के बल धड़ाम से जा गिरा। लैम्प के झिलमिल प्रकाश में उसने देखा, कोई सीढ़ियों से उठ कर उसकी ओर बढ़ा ! ड्रोवेस्की का हाथ रिवॉल्वर पर पहुँचा ! अनिष्ट की आकांक्षा से वह सतर्क हो गया ! किन्तु यह क्या !

"चोट तो नहीं आई ?"—किसी ने धीमे स्वर में पूछा।

"अरे फ़्लोरा ! तुम कहाँ ?"—ड्रोवेस्की का सिर फ़्लोराइना की गोद में था !

"बोलो—चोट तो नहीं आई ?"

"नहीं।"

"कहाँ जा रहे थे ?"

"पहिले तुम बताओ, इतनी रात को यहाँ क्या कर रही थीं ?"

"जो न बतलाऊँ—"

"मैं भी न बताऊँगा कि मैं कहाँ जा रहा था।"

"सच ?"

"सच नहीं, तो क्या ग़लत !"

ड्रोवेस्की ने उसका मुँह चूम लिया।

फ़्लोरा हँसने लगी।

"तुम बड़े पागल हो !"

"तुमसे कम ही।"

"अच्छा, एक बात कहूँ ?"

"कहो।"

"मानोगे ?"

"मानने लायक़ होगी तो क्यों न मानूँगा।"

"नहीं, वचन दो कि मानोगे—मानने लायक़ है।"

"वाह ! पहले बतला दो।"

"जाओ, फिर आज से—"

फ़्लोरा मुँह फेर कर बैठ गई।

ड्रोवेस्की उठ बैठा। देखा, फ़्लोरा रो रही थी। उसने पुकारा—फ़्लोराइना! तुम्हें क्या हो गया है?

वह चुप थी।

"अच्छा रूठो मत। कहो क्या कहती थीं? मैंने व्यर्थ ही तुम्हारा हृदय दुखा दिया।"—ड्रोवेस्की ने उसे अपने बाहु-पाश में कस कर जकड़ लिया। बड़ा शीत पड़ रहा था, दोनों उठ कर भीतर—बैठक में आ गए।

फ़्लोरा ने कहा—वचन देते हो? मानोगे मेरी बात?

मन्त्र-मुग्ध सा ड्रोवेस्की कह गया—हाँ, मानूँगा।

"तो सवेरे ही मास्को से चले जाओ!"

ड्रोवेस्की पर मानो बिजली गिर पड़ी। उसने फ़्लोराइना के दोनों हाथ अपने हाथों में लेकर कहा—क्यों प्यारी फ़्लोरा, ऐसा क्यों?

"यह न बताऊँगी—अपना वचन स्मरण कर लो!"

"फ़्लोरा! बस, इतना बतला दो, क्यों?"

फ़्लोराइना की आँखों के आँसू न रुके। वह ड्रोवेस्की के कन्धे पर सिर रख कर रोती हुई बोली—प्यारे ड्रोवेस्की! तुम्हीं मेरे लिए सब कुछ हो—तुम्हारे ही लिए कहती हूँ!

ड्रोवेस्की भी एक अबोध बालक की भाँति रो पड़ा।

दोनों प्रेमियों के आँसू एक होकर बह चले। निशानाथ भी खुले हुए द्वार से झाँक कर अपनी किरणों से उन दोनों के पवित्र स्पर्श का अनुभव कर रहे थे।

५

दूसरे दिन।

मास्को में।

शहर के फाटक पर बड़े सवेरे एक घुड़सवार पहुँच कर फाटक खुलवाने का प्रयत्न कर रहा था। थोड़ी देर में फाटक खुला, सन्तरियों ने अपनी बन्दूक़ें उसकी ओर सीधी कर दीं। यही राज-नियम था। उनके नायक ने पूछा—नाम बतलाओ।

"रोमनविच"

"कहाँ जाओगे?"

"बाहर—जङ्गल में।"

"कितनी दूर?"

"यही—दो-तीन मील—"

"क्या काम है?"

"लकड़ी लाना है।"

"पासपोर्ट दिखलाओ?"

युवक घुड़सवार इधर-उधर ताकने लगा।

नायक ने इस बार कड़क कर कहा—पासपोर्ट दिखलाओ?

उसने अपना हाथ आगे बढ़ा दिया। युवक सवार कुछ ठिठका, फिर पलक मारते अपनी जेब से पिस्तौल निकाल कर लगातार तीन फ़ायरों से दो सन्तरियों और नायक को जहाँ का तहाँ ठण्डा करके सरपट भाग निकला।

'लेना, लेना' करके सिपाही चिल्ला पड़े। गोलियाँ चलाते हुए थोड़ी दूर तक पीछे दौड़े, पर उन्हें उस सवार की धूल भी नहीं मिली।

तीन दिन बाद।

शहर की चौमुहानियों पर नोटिस चिपके हुए थे, जिन पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—

१५,००० रूबल इनाम

राजद्रोही निहिलिस्ट-दल का प्रधान-मन्त्री ईवान ड्रोवेस्की राजकर्मचारियों की हत्या करके मास्को से भाग गया, उसे जीवित या मृत, किसी भी दशा में, सरकार में उपस्थित करने वाले को उपरोक्त इनाम दिया जायगा।

हस्ताक्षर,

—प्रिन्स रूडोविच

जनता उनके पढ़ने के लिए चारों ओर से उमड़ी चली आ रही थी, लोग एक दूसरे पर गिरे पड़ते थे। छोटे-बड़े, बालक-वृद्ध सबने पढ़ा और पढ़ा एक स्त्री ने, जिसका जीवन-सूत्र अभागे ड्रोवेस्की—राजद्रोही ड्रोवेस्की के साथ बँधा हुआ था!

उस अभागिनी की आत्मा एक बार काँप उठी!

क्या ड्रोवेस्की—देश-भक्त ड्रोवेस्की ने उसे याद किया होगा?

जीवन के प्रवाह में आशा का बाँध टूट कर बह चला। उस पुण्य-स्मृति को हृदय में छिपाए फ़्लोराइना घर लौट आई।

६

दरवाज़े पर किसी ने पुकारा—फ़्लोरो?

स्वर परिचित सा ज्ञात हुआ!

"कौन है?"

"ईवान।"

फ़्लोराइना ने उठ कर द्वार खोल दिया। ड्रोवेस्की कमरे में आते ही धम्म से फ़र्श पर बैठ गया। सिर और कपड़ों पर धूल जमी हुई थी, बाल बिखरे हुए, वेश-भूषा अस्त-व्यस्त! मानो वह किसी दूर की यात्रा से लौटा हो। फ़्लोरा देखती रह गई। ड्रोवेस्की ने पानी माँगा। पानी पीकर कुछ स्वस्थ होने पर उसने कहा—"प्यारी! सम्भवतः यह हमारी अन्तिम भेंट है!" उसका गला भर आया! फ़्लोराइना भी रो पड़ी!!

"प्रियतम! ईश्वर के लिए ऐसा न कहो।"

"नहीं फ़्लोरा, सरकारी गुप्तचर मेरा पीछा कर रहे हैं, मुझे शीघ्र ही देश छोड़ना पड़ेगा............किन्तु नहीं, न जा सकूँगा! प्यारी मातृभूमि! तुझे न छोड़ सकूँगा—मृत्यु पर्यन्त नहीं!"

फ़्लोरा उसके गले से लिपट गई। ड्रोवेस्की उठ खड़ा हुआ।

"जाता हूँ—विदा दो!"

"...............!"

"कायर की मौत न मरूँगा, विश्वास रक्खो प्रिये! मेरे हाथ में शस्त्र रहते कोई मेरी छाया भी स्पर्श नहीं कर सकता।"

"प्यारे ड्रोवेस्की! उफ़! मुझे भी साथ ले लो!"

"नहीं फ़्लोरा! अभी तुम्हारी आवश्यकता नहीं है। रूस के मर्द अभी जीवित हैं। क्रान्ति के यज्ञ का अनुष्ठान हो चुका है, पूर्णाहुति बाक़ी है। जानती हो, रूस का बच्चा-बच्चा आज प्रतिहिंसा से पागल हो रहा है! विदा दो! आज एक बड़ा भारी काम करना है।"

"प्रियतम!"

"चलता हूँ प्यारी फ़्लोरा!"

उत्तर की प्रतीक्षा न कर ड्रोवेस्की द्वार खोल कर निकल गया। फ़्लोराइना मार्ग की ओर देखती रही। वह शीघ्र ही दृष्टि से ओझल हो गया।

परन्तु यह क्या? देखते-देखते लगभग पचास सरकारी सैनिकों ने आकर फ़्लोराइना का मकान घेर लिया।

चार सैनिक अपनी बन्दूक़ें सँभालते हुए घर में घुस आए। उनके कप्तान ने पूछा—ड्रोवेस्की कहाँ गया? बोलो मिस!

"कौन ड्रोवेस्की? किसे पूछते हो?"—फ़्लोराइना घबरा कर उठ खड़ी हुई।

"हाँ! तुम क्या जानो—बड़ी भोली हो! अभी इसी मकान में वह घुसा था!"

सिपाहियों ने घर का कोना-कोना छान डाला, निराश होकर वे फ़्लोराइना को गिरफ़्तार कर ले चले!

फ़्लोरा के जीवन में वह दिन बड़ा विचित्र था!

७

निहिलिस्ट-दल की गुप्त-समिति की बैठक थी, एक सदस्य ने कहा—इस बार प्रिन्स रूडोविच पर हमारा लक्ष्य रहेगा।

दूसरे ने हँस कर जवाब दिया—जी हाँ, इतने दिनों से उसका कुछ न बिगाड़ सके और अब.........

"इससे क्या—मुझे विश्वास है—पूरा विश्वास है कि इस बार हम लोग उस नर-पिशाच को अवश्य ही ठिकाने लगा सकेंगे।"

"मौत के मुँह में कौन जाने को तैयार होगा?"

"किन्तु उसका अत्याचार—देखते हो, कितना बढ़ रहा है!"

"लेकिन कहने और करने में बड़ा अन्तर होता है।"

"अच्छी बात है, तुम प्रस्ताव कर देना, बाक़ी सब मैं ठीक कर लूँगा।"

"मञ्ज़ूर है।"

दोनों दरवाज़े की ओर देखने लगे। पाँच-सात सदस्यों सहित सभापति ने प्रवेश किया।

उसके आसन ग्रहण करने पर सभा की कार्यवाही आरम्भ हो गई।

प्रिन्स रूडोविच का प्रस्ताव रक्खा गया। समर्थन हुआ। बहुमत अनुकूल देख कर सभापति ने अपना निर्णय देते हुए कहा—"भ्रातृवर्ग! प्रिन्स रूडोविच के अत्याचारों से आप लोग भली-भाँति परिचित हैं। इस समय वह ज़ार का दाहिना हाथ होकर देश पर मनमाना ज़ुल्म कर रहा है, राज्य-शासन में उसकी इच्छा—उसकी आज्ञा—ही क़ानून का काम कर रही है, ऐसे देशद्रोही को मिटा देना हमारा आवश्यक कर्त्तव्य है। हमारी संस्था देश की संस्था है। अविचारी शासन का अन्त कर देना हमारा धर्म है, किन्तु मैं जानना चाहता हूँ कि इस महान कार्य को हाथ में लेने के लिए कौन तैयार है? यह निश्चय समझना चाहिए कि असंख्य सेना के पहरे में घुस कर प्रिन्स को मारना और सही-सलामत लौट आना असम्भव है। ऐसी दशा में अपने प्राणों की बाज़ी लगा कर इस देश-द्रोही की हत्या करने का साहस कौन करता है?

"हम लोग पहिले भी इस प्रयत्न में तीन बार असफल हो चुके हैं। लाख सतर्क रहने पर भी प्रत्येक बार हमारे किसी न किसी भाई को जान से हाथ धोना पड़ा है। इस बार अपने उद्देश्य की सफलता के लिए हमें प्राणपण से चेष्टा करनी चाहिए।"

सभा में सन्नाटा छा गया।

प्रस्तावक ने आगे बढ़ कर अपना नाम दिया। उसकी देखादेखी और दो सदस्य तैयार हो गए।

इसी समय प्रधान-मन्त्री ड्रोवेस्की ने अपने आसन पर खड़े होकर कहा—"मेरी सभा से प्रार्थना है कि वह मुझे भी इस कार्य के लिए एक बार अवश्य अवसर दे।"

सभापति ने चारों नाम लिख लिए। क्रम निर्धारित करने के लिए चिट्ठी डाली गई।

एक चिट्ठी निकली। सब लोग उत्सुकता से उधर ही देखने को झुके। सभापति ने पढ़ा—"ईवान ड्रोवेस्की"

ड्रोवेस्की के चेहरे पर दृढ़ता की मुस्कराहट की एक रेखा दौड़ गई!

सभा में करतल-ध्वनि होने लगी!

(शेष मैटर ३०वें पृष्ठ के दूसरे कॉलम में देखिए)
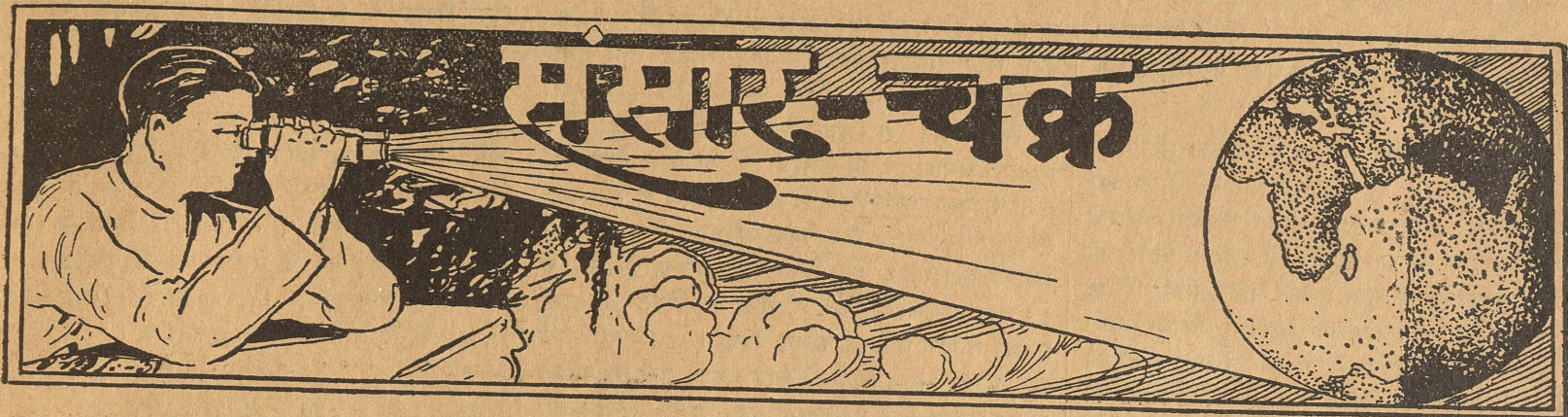
१६०५ की रूसी-क्रान्ति

[श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए०, रिसर्च-स्कॉलर]

(शेषांश)

तवीं अक्टूबर १६०५ को कज़ान रेलवे का चलना बन्द हो गया और कुछ दिनों के अन्दर मास्को की तमाम रेलों का काम एकदम रुक गया। अन्त में जब डाक और तार के कर्मचारियों ने भी हड़ताल कर दी, तो वह और भी भीषण हो गया। धीरे-धीरे मास्को से पिटर्सबर्ग तक रेलवे की हड़ताल फैल गई। कुछ ही दिनों के बाद यह इतनी विस्तृत हो गई कि रूस में कोई भी ऐसा औद्योगिक केन्द्र अथवा कारख़ाना न था, जहाँ के मज़दूर इस हड़ताल में शामिल न हों। रेलगाड़ियों का आना-जाना बन्द था। तार भी रुक गए। अख़बार बन्द हो गए। रोशनी का कोई प्रबन्ध नहीं रहा। प्रतिदिन प्रदर्शन होता था, जिसमें जनता हज़ारों की तादाद में शरीक होती थी। प्रतिदिन स्थान-स्थान पर सभाएँ होती थीं। प्रदर्शनों तथा सभाओं की मानो रूस में आँधी-सी आ गई थी। प्रदर्शन या सभा के पश्चात् बहुधा जनता तथा पुलिस या सैनिकों में सशस्त्र सङ्घर्ष भी हो जाते थे। सड़कों पर, स्थान-स्थान पर सरकार की तरफ़ से मार्ग बन्द कर दिए गए थे, कि जुलूस निकल न सके। कई स्थानों में, जहाँ रास्ता बन्द कर दिया गया था, जनता तथा पुलिस में लड़ाई हो गई। १० अक्टूबर को खारकोव में, ११ अक्टूबर को यकटेरिनोस्ला में और १६ अक्टूबर को ओडेसा में यही हुआ।

१३ अक्टूबर को 'सोवियट ऑफ़ वर्कर्स डिफ़्रीज़' की प्रथम बैठक पिटर्सबर्ग में हुई और बहुत शीघ्र यह सोवियट केवल पिटर्सबर्ग ही नहीं, बल्कि तमाम रूस का नेता बन गया। इस हड़ताल-आन्दोलन को देख कर सरकार के होश उड़ गए। वह प्रतिदिन भीषण होता जाता था। सरकार ने उसे दबाने के अनेक उपाय किए, परन्तु सफलता उससे कोसों दूर थी। अतः उसे झुकना पड़ा। १७ अक्टूबर को ज़ार ने एक मैनीफ़ेस्टो निकाल कर जनता को राजनैतिक स्वतन्त्रता देने का आश्वासन दिया और लेजिस्लेटिव एसेम्बली या स्टेट ड्यूमा बुलाने की घोषणा की।

परन्तु रूस के हड़तालियों ने इस जाल में फँसने से इन्कार कर दिया और अपना कार्य जारी रक्खा। "वर्कर्स डिफ़्रीज़ सोवियट न्यूज़" ने अपने २० अक्टूबर के अङ्क में उपर्युक्त मैनीफ़ेस्टो की चर्चा करते हुए लिखा था—"अन्त में हम लोगों को विधान दे दिया गया है! हम लोगों को वैध स्वतन्त्रता है, पर एसेम्बली सैनिकों से घिरी रहेगी। हम लोगों को बोलने की स्वतन्त्रता है, पर सेन्सर जैसा का तैसा बना है। हम लोगों को शिक्षा की स्वतन्त्रता है, पर विश्वविद्यालयों में अब भी सैनिक मौजूद हैं। हम लोगों को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता है, पर जेलख़ाने क़ैदियों से खचाखच भरे हैं। हम लोग विधान पा गए हैं, पर निरंकुश शासन भी मौजूद है। हम लोगों को सब कुछ दिया गया है और कुछ भी नहीं।"

क्रान्ति के नेता चाहते थे कि आन्दोलन बन्द न किया जावे। जब लेनिन ने मैनीफ़ेस्टो का हाल सुना तो उसने लिखा—"नरम-विचार के धनी लोगों को यह समझ लेना चाहिए कि मैनीफ़ेस्टो में केवल शब्द तथा वादे हैं। पर अब केवल वचनों में कौन विश्वास करता है? ज़ार के वादे को कौन पूरा करेगा?......क्या जनता ने स्वतन्त्रता के युद्ध में अपना रक्त बहाया है, अपने को ब्यूरोक्रेसी के हाथों में सौंप देने के लिए और केवल शब्दों और वादों में बदल जाने के लिए? नहीं, ज़ारशाही घुटने टेकने से अभी बहुत दूर है। निरङ्कुश शासन अभी अटल है। क्रान्ति के कार्यकर्ताओं को अभी अनेक लड़ाइयाँ लड़ना है। उनकी प्रथम विजय उनकी शक्ति को बढ़ाएगी और युद्ध के लिए नए साथी तैयार करेगी।"

उपर्युक्त विचारों से प्रभावित होकर मज़दूरों ने १७ अक्टूबर के बाद भी हड़ताल जारी रक्खी। परन्तु भावी युद्ध की तैयारी करने के लिए अवकाश की आवश्यकता थी। अतः पिटर्सबर्ग के मज़दूरों की कौन्सिल ने २१ अक्टूबर को हड़ताल-आन्दोलन बन्द करने का निश्चय किया और कुछ दिनों के अन्दर ही हड़तालों का अन्त हो गया।

१७ अक्टूबर के मैनीफ़ेस्टो के बाद नरम दल के धनी लोग सरकार की तरफ़ हो गए और मज़दूरों के विरोधी बन गए। वे अधिक आर्थिक हानि सहने को तैयार न थे।

अक्टूबर की हड़ताल के बाद किसानों में भी आन्दोलन शुरू हुआ। वे अपनी स्थिति से पहिले से ही असन्तुष्ट थे। उन्होंने उसे सुधारने के लिए आन्दोलन आरम्भ किया। इस आन्दोलन ने भी शीघ्र ही अत्यन्त भीषण रूप धारण कर लिया। केन्द्रीय रूस, बाल्टिक, पोलैण्ड और काकासस के गाँवों में तहलका मच गया। किसानों ने ज़मींदारों की सम्पत्ति लूट ली। उनकी जायदादें नष्ट-भ्रष्ट कर दीं, ज़मींदार लोग अपने-अपने गाँव छोड़ कर प्राण लेकर भाग गए। इस आन्दोलन में ज़मींदारों के लगभग २,००० मकान आदि नष्ट कर दिए गए थे। काकासस प्रदेश में किसान आन्दोलन ने राजनैतिक जामा पहन लिया था। अनेक स्थानों में किसानों और मज़दूरों में घनिष्ट सम्बन्ध स्थापित हो गया था। १६०७ की ७वीं नवम्बर को अखिल रूस किसान-सङ्घ की दूसरी काँग्रेस हुई। इसने मुख्य-मुख्य आर्थिक समस्याओं को हल किया और आवश्यक राजनैतिक माँगें पेश कीं।

क्रान्ति की लहर सेना में भी जा पहुँची। नवम्बर के मध्य में पिटर्सबर्ग की सेना की कई टुकड़ियों में उत्पात मचने लगा। जनवरी के मध्य में काले सागर के एक बेड़े ने विद्रोह का झण्डा ऊँचा कर दिया। "ओट्स्चकव" नाम के एक क्रूज़र ने १९ नवम्बर को विद्रोह किया। इस विद्रोह का नेता स्चमिड्ट था। बलवाइयों ने क्रूज़र पर लाल झण्डा खड़ा कर दिया। और भी अनेकों जहाज़ों ने "ओट्स्चकव" का अनुकरण किया। स्चमिड्ट ने ज़ार के पास तार भेज कर विधान-विधायिनी सभा की माँग पेश की। पर यह विद्रोह भी शीघ्र दबा दिया गया।

मज़दूरों की माँगें अब और भी अधिक हो गईं। उन्होंने अपना ज़बरदस्त सङ्गठन किया। नवम्बर के महीने में कई नगरों में मज़दूर-सोवियटों की स्थापनाएँ की गईं। २२ नवम्बर को मास्को के मज़दूरों की सोवियट की पहिली बैठक हुई। इसमें ८०,००० मज़दूरों के १८० प्रतिनिधि शरीक हुए थे। पिटर्सबर्ग के मज़दूरों की सोवियट सब से आगे थी। यही सोवियट रूस के तमाम मज़दूरों की पथ-प्रदर्शिका और सन् १६०५ की क्रान्ति की अग्रगण्य थी। जनवरी के अन्त तक पिटर्सबर्ग के मज़दूरों ने क्रान्ति में सब से अधिक भाग लिया था। अक्टूबर और नवम्बर के महीनों में पूँजीपतियों तथा ज़ार के विरुद्ध पिटर्सबर्ग के मज़दूरों ने घोर युद्ध किया। वे दो बातें चाहते थे। प्रथम तो दिन में आठ घण्टे से अधिक काम न करना और द्वितीय, दूसरी राजनैतिक आम हड़ताल।

३१ अक्टूबर को सोवियट ने काम करने का समय प्रतिदिन आठ घण्टे कर देने के लिए युद्ध करना निश्चय किया। मज़दूरों ने पूँजीपतियों के सामने अपनी माँगें रक्खीं और आठ घण्टे काम कर चुकने के बाद वे काम करने से इन्कार करने लगे। जिन मिलों और कारख़ानों के मालिकों ने उनका विरोध किया वहाँ उन्होंने हड़ताल कर दी। मज़दूरों के इस रुख़ को पूँजीपति सहन न कर सके। उन्होंने बदला लेना प्रारम्भ किया। अपनी मिलें और कारख़ाने बन्द कर दिए और झुण्ड के झुण्ड मज़दूरों को निकाल दिया। यही नहीं, उन्होंने मज़दूरों की तनख़्वाहें भी दबा लीं।

पूँजीपतियों के इस विकराल दमन ने मज़दूरों की हिम्मत को पस्त कर दिया। अनेक स्थानों पर उन्होंने घुटने टेक दिए और काम पर लौट गए। अतः सोवियट ने भी आन्दोलन स्थगित कर दिया। इस आन्दोलन के

असफल होने का सब से बड़ा कारण यह था कि इसका सारा बोझ केवल पिटर्सबर्ग के मज़दूरों पर था, देश के और मज़दूर हाथ खींचे बैठे थे।

पिटर्सबर्ग के मज़दूरों की सोवियट का दूसरा काम था, आम हड़ताल! यह हड़ताल पहली से सातवीं नवम्बर तक रही। इस हड़ताल के दो राजनैतिक कारण थे। २६ अक्टूबर को क्रान्सटाड्ट की सेना ने विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह के नेता सैकड़ों सैनिक तथा मल्लाह थे। उन सब पर कोर्ट-मार्शल में मुक़दमा चलाया गया। २९ अक्टूबर को पोलैण्ड में सरकार ने मार्शल-लॉ की घोषणा की। उपर्युक्त दोनों घटनाएँ ही हड़ताल की जन्मदात्री थीं। इस हड़ताल में मज़दूरों ने अपूर्व एकता दिखलाई। लाखों मज़दूरों ने इसमें भाग लिया था।

९ नवम्बर को सोवियट के आदेशानुसार डाक और तार के कर्मचारियों ने भी हड़ताल कर दी।

पर रूस की ज़ारशाही अभी मज़बूत थी। मज़दूरों का सामना करने को मुस्तैद थी। सरकार ने सोवियट को कुचलने का निश्चय किया। वह सोवियट को ही सब अनर्थों की जड़ समझती थी। सोवियट में इतनी शक्ति थी कि हड़ताल के समय स्टेट-रेलवे, ज़ार की सरकार का कहना न मान कर, सोवियट की आज्ञा का पालन करती थी। प्रेस, जिनमें तमाम अख़बार तथा सरकारी पत्र आदि छपते थे, सोवियट के कहने पर ही चलते थे। सोवियट के कहने पर ही फ़ैक्टरियों ने अपना काम बन्द कर दिया। नगर को पानी मिलना सोवियट की इच्छा पर निर्भर था। ट्राम्बें भी उसकी आज्ञा बिना नहीं चल सकती थीं। सेनाएँ भी ज़ार के विरुद्ध होती जाती थीं और सोवियट से सहानुभूति रखती थीं। क्या सोवियट ज़ार की सरकार के विरुद्ध एक नवीन सरकार की नींव रख रही थी?

अतः ज़ार की सरकार ने सोवियट को मटियामेट करने की ठान ली। घोर दमन से काम लेना आरम्भ किया। मज़दूरों की सभाएँ भङ्ग कर दी जाती थीं। क्रान्ति के जितने नेता थे, सब के सब गिरफ़्तार कर लिए गए। पुलिस अंधाधुन्ध अत्याचार करने लगी। परन्तु सरकार के इस दमन को देख कर भी पिटर्सबर्ग की सोवियट विचलित नहीं हुई। उसने सरकार को और भी तङ्ग करना प्रारम्भ किया। २२ नवम्बर को उसने सरकार का आर्थिक बॉयकॉट करने का निश्चय किया। उसने मज़दूरों को बैङ्कों से अपने-अपने रुपए वापस ले लेने को कहा और आदेश दिया कि मज़दूर अपनी तनख़्वाहें सोने के रूप में माँगें। सरकार ने इस नवीन आक्रमण के उत्तर में सोवियट के चेयरमैन को पकड़ लिया। फलतः २७ नवम्बर को सोवियट ने सशस्त्र विद्रोह करने का निश्चय किया।

ज़ार की सरकार ने भी आन्दोलन को दबाने के लिए अनेक उपायों से काम लिया। ३री दिसम्बर को सोवियट की बैठक हो रही थी। सरकार ने, जितने मेम्बर बैठक में भाग ले रहे थे, सबको गिरफ़्तार कर लिया। इधर मज़दूरों की सोवियटों ने राजनैतिक आम हड़ताल करवाने का निश्चय कर लिया। ८ दिसम्बर को पिटर्सबर्ग की सोवियट ने हड़ताल करवाई। मास्को की सोवियट ने ७ दिसम्बर को हड़ताल कर दी। अब तक पिटर्सबर्ग के मज़दूर ही हड़तालों का सञ्चालन करते आए थे, पर अब उनमें पुरानी शक्ति न रह गई थी, अतः वे हड़ताल को सफल बनाने में सफल नहीं हुए। अब मास्को के मज़दूर आगे आए और उन्होंने ज़ोरों की हड़ताल की। ६ दिसम्बर को १,५०,००० मज़दूर मास्को की हड़ताल में शामिल थे। वहाँ का गवर्नर-जनरल स्थिति की गम्भीरता को समझ रहा था। उस समय मास्को में सेना नहीं थी। और जो थी, वह विश्वसनीय नहीं थी। सरकार आन्दोलन को शीघ्र ही दबा देना चाहती थी, ताकि वह अधिक बढ़ न सके। ८ दिसम्बर को स्थान-स्थान पर मज़दूरों की सभाएँ हो रही थीं। सरकारी सेनाओं ने इन सभाओं को जा घेरा। ऐसी एक सभा फ्लीडर इण्डस्ट्रियल सेकेण्डरी स्कूल में हो रही थी। पुलिस और सेना ने सभा-स्थल पर धावा किया। सभा-भङ्ग की आज्ञा देकर लोगों को वह स्थान ख़ाली कर देने को कहा। सभा में जो डेलीगेट उपस्थित थे, उन्हें पुलिस ने पौन घण्टे का समय दिया। इसके बाद उन्हें सभा-स्थल से चले जाने को कहा गया। डेलीगेट आपस में सलाह करते रहे। तत्पश्चात् एक मत से पुलिस कमाण्डर—रचमनिनोव—से स्पष्ट कह दिया कि वे पुलिस की आज्ञा मानने को तैयार नहीं हैं। रचमनिनोव ने उन्हें पुनः विचार करने के लिए दस मिनट का समय दिया और उसके पश्चात् सभा-भवन पर गोली चलाने की धमकी दी। दस मिनट भी समाप्त हो गए और सभा-भवन ख़ाली नहीं हुआ। उसके बाद का हाल एक ऐसे सज्जन के शब्दों में, जो वहाँ उस समय उपस्थित थे, यों है:—

"अन्तिम बिगुल की प्रतिध्वनि अभी विलीन भी न हो पाई थी, कि आज्ञा दी गई—"कम्पनी एटेन्शन!" दूसरी मञ्ज़िल की खिड़कियों पर निशाना लगाओ—एक लहमे की ख़ामोशी—फ़ायर। गोलियों की एक बौछार! शीशों का टूटना और उत्तर में खिड़कियों से गोलियों की वर्षा। यद्यपि मैंने तब तक युद्ध में भाग नहीं लिया था। पर मैं समझ गया कि लड़ाई में भाग लेने का मौक़ा आ गया है। मेरे चारों तरफ़ गोलियाँ सन-सन कर रही थीं। रचमनिनोव ने तोपख़ाने को आज्ञा दी। शब्दों में यह नहीं बताया जा सकता कि हम लोगों पर, ऊँची इमारतों के बीच में घिरे हुए हम तोपख़ाने की गोलियों का क्या असर हुआ।........ इमारतों से गोलियों की भीषण वर्षा, घायल सैनिकों और पुलिस का कराहना, सर्वत्र रक्त का बहना, अपने साथियों को घायल देख कर सैनिकों का अपार क्रोध!

"एकाएक एक खिड़की खुली और एक वस्तु बाहर आती हुई दिखाई दी। प्रत्येक पुरुष चिल्ला उठा—'बम-बम!'...................तत्पश्चात् शीघ्र ही कोई भीतर से चिल्ला उठा—'हम लोग आत्म-समर्पण करते हैं!'...........तब गोली चलना बन्द हुई और हारे हुओं ने इमारत छोड़ दी।"

अक्टूबर के मैनीफ़ेस्टो के बाद यह पहिला ही अवसर था, कि राजनैतिक प्रश्नों पर विचार करने के लिए इकट्ठे हुए शान्तिमय नागरिकों पर गोली चलाई गई थी। इस घटना से ही सशस्त्र विद्रोह का श्रीगणेश हुआ। १० दिसम्बर को मास्को की सड़कों पर बमबाज़ी की गई। शान्तिमय सभाएँ राइफ़ल की गोलियों से भङ्ग कर दी गईं। मशीनगनों ने गोलियों की वर्षा की और तोपों ने गोलों की। मास्को का विद्रोह जनता का प्रथम सशस्त्र विद्रोह था। शस्त्र उठाने वालों की संख्या अधिक न थी और न उनके शस्त्र-अस्त्र ही उत्तम थे। पर उनसे सहानुभूति रखने वालों की संख्या अधिक थी। कुछ दिनों तक बराबर मास्को की सड़कों पर युद्ध होता रहा। कभी क्रान्तिवादियों की विजय होती और कभी उनकी हार। मास्को की सड़कें स्थान-स्थान पर बन्द कर दी गई थीं। क्रान्ति को दबाने के लिए जो सेना आती, उससे क्रान्तिकारी सरकारी पक्ष छोड़ कर क्रान्ति की तरफ़ आने की अपील करते। बहुधा उन्हें इस अपील में सफलता भी मिलती। अतः सरकार अपनी सेनाओं पर बहुत अधिक निर्भर नहीं करती थी। ८ दिसम्बर को एक सरकारी सेना को जनता ने राज़ी करके मैदान से हटा दिया। १० दिसम्बर को एक स्थान पर एक सेना खड़ी थी। दो लड़कियाँ लाल झण्डा लिए उनके पास तक दौड़ी चली गईं और उनके पास पहुँच कर उनसे कहा—"हमें मार डालो, क्योंकि जीते जी हम झण्डा नहीं छोड़ेंगी।" उनकी यह बात सुन कर सैनिकों को शर्म लगी और उन्होंने अपने घोड़ों का मुँह मोड़ दिया। सेना को जनता के साथ इतनी सहानुभूति थी कि जनरल दुबसव का कहना था कि मास्को की सेना के १५,००० सैनिकों में से केवल ५,००० पर विश्वास किया जा सकता था।

सरकार और क्रान्तिकारियों में सब से ज़बरदस्त मुठभेड़ मास्को ज़िले के प्रेसनिया स्थान पर हुई। प्राहोरोव फ़ैक्टरी के मज़दूरों ने अपनी एक सेना खड़ी कर ली, वहाँ पर सरकारी सेना बहुत ही थोड़ी थी। मज़दूरों की कौन्सिल सशस्त्र विद्रोह का केन्द्र बन गई। प्रेसनिया और शचका के दो ज़िले विद्रोहियों के हाथों में चले गए। इन ज़िलों में सरकारी ख़बरें पहुँच ही न पाती थीं। वहाँ के लोगों का विश्वास था कि नई सरकार की स्थापना हो गई है। विद्रोहियों की आज्ञा सर्वत्र मानी जाती थी। पर इन सब बातों के होते हुए भी उनकी सेना में २०० से अधिक सैनिक न थे। १६ दिसम्बर को सरकारी सेना ने ज़िले को घेर लिया और विद्रोहियों को कुचलना आरम्भ किया। १८ दिसम्बर को विद्रोही अच्छी तरह कुचल दिए गए। १६ दिसम्बर को मास्को के मज़दूरों की सोवियट ने हड़ताल का अन्त कर दिया।

पाठक यह न समझ लें कि यह सशस्त्र विद्रोह केवल मॉस्को में ही था। रूस के अनेक नगरों में यही हालत थी। रोडरोव-आन-डान का विद्रोह विशेषतः मास्को-विद्रोह से मिलता-जुलता था। जैसे ही मास्को से राजनैतिक आम हड़ताल की ख़बर वहाँ पहुँची तो वहाँ के मज़दूरों ने भी हड़ताल कर दी। सैकड़ों नौजवानों की एक सेना खड़ी कर ली गई। टमरनिक स्थान इस विद्रोह का केन्द्र था। १५ दिसम्बर से २० दिसम्बर तक टमरनिक पर बराबर बमबाज़ी होती रही। सरकार की तरफ़ से ज़िले पर अधिकार करने के लिए बहुत प्रयत्न किए गए, पर वे सब असफल हुए। क्रान्तिकारियों ने पूरा शासन-विभाग खड़ा कर लिया। जनता की ओर से एक जेलख़ाना बनाया गया, जिसमें पुलिस के जासूस आदि बन्द किए जाते थे। परन्तु यह विद्रोह शीघ्र दबा दिया गया। ऐसे विद्रोह को कुचलने के लिए सरकार के पास साधनों की कमी न थी। जनता का एक दल प्रारम्भ से ही इस विद्रोह का विरोध कर रहा था। मेनशेविक सशस्त्र विद्रोह करने के विरोधी थे। वे केवल जनता में प्रचार करना चाहते थे। मेनशेविकों के नेता जॉर्ज प्लेख़नोव ने स्पष्ट शब्दों में इस विद्रोह की निन्दा की। उसका कहना था कि जनता अभी इन सब बातों के लिए तैयार नहीं है।

यद्यपि विद्रोह शान्त कर दिया गया था, पर इस विद्रोह में जनता को जो अनुभव प्राप्त हुए थे, उन्होंने उसे भविष्य के लिए और मज़बूत बना दिया। क्रान्ति की इस असफलता से लेनिन बिल्कुल हताश नहीं हुआ। जैसा कि इस लेख के प्रारम्भ में कह चुके हैं, वह इस क्रान्ति को भावी क्रान्ति की भूमिका मात्र समझता था। उसने लोगों को इस अनुभव से लाभ उठा कर ज़ोरों से कार्य करने की सलाह दी। ख़ैर! फ़िलहाल क्रान्ति के दब जाने के अगले कुछ वर्षों के लिए आन्दोलन बहुत-कुछ ठण्डा हो गया और प्रतिक्रियावादियों की बन आई।

* * *

लीग ऑफ़ नेशन्स और कोरिया का स्वातन्त्र्य आन्दोलन

[श्री० देवकीनन्दन जी विभव, एम० ए०]

(शेषांश)

कोरिया के ईसाई भी चुप न थे। उन्होंने भी अन्य धर्मावलम्बी कोरियनों के कन्धे से कन्धा भिड़ा कर इस महायज्ञ में अपनी आहुतियाँ दीं। सन् १९१८ में जनरल टिरौची ने वहाँ के ईसाइयों के प्रति ऐसे-ऐसे जघन्य कार्य किए, जिससे किसी सहृदय मनुष्य की आत्मा काँपे बग़ैर नहीं रह सकती। एक गाँव में तो जापानियों ने सब ईसाइयों को गिरजे में भर कर आग लगा दी और जिन्होंने भाग कर प्राण बचाने की कोशिश की, उन पर गोलियाँ चला कर उन्हें मार डाला गया। अन्य कुछ प्रसिद्ध ईसाइयों को रेज़िडेण्ट-जनरल को मारने के षडयन्त्र में फँसा गया, इसमें कोरिया के भूतपूर्व वैदेशिक सहायक मन्त्री बैरन-युन-चिहो भी थे। सभ्य-संसार इसे भली प्रकार जानता है कि इस अभियोग में कहाँ तक सत्यता थी, पर फिर भी उन्हें लम्बी-लम्बी सज़ाएँ दे दी गईं।

कोरिया में जिस समय यह महायज्ञ हो रहा था, और देशभक्त उसमें अपनी आहुतियाँ दे रहे थे, उसी समय अमेरिका के प्रेज़िडेण्ट विल्सन ने अपने चौदह सिद्धान्तों की घोषणा की, जिनमें एक यह भी था कि आत्म-निर्णय (Self-determination) का प्रत्येक निर्बल से निर्बल राष्ट्र का जन्म-सिद्ध अधिकार है और राष्ट्रीय परिषद (League of Nations) का यह भी एक ध्येय है कि छोटे-छोटे राष्ट्र गुलामी से मुक्त होकर स्वतन्त्र कर दिए जायँ।

प्रेज़िडेण्ट विल्सन एक बड़े आदर्शवादी थे। हमें उनकी ईमानदारी में सन्देह नहीं। वे जो कुछ कहते थे, सम्भव है उसे करना भी चाहते हों, परन्तु उनका सारा सिद्धान्तवाद केवल गोरे राष्ट्रों के लिए था। यह कहा जाता है, कि जर्मनी आकांक्षाशील, संसार की शान्ति और स्वाधीनता का शत्रु तथा लड़ाई के सभ्य सिद्धान्तों का तोड़ने वाला था, इसलिए अमेरिका न्याय और शान्ति के सिद्धान्तों को अपने रक्त से सींचने के लिए कूद पड़ा। प्रेज़िडेण्ट विल्सन ने स्वयं जर्मनी से युद्ध-घोषणा करने से पहले कहा था—"The day has come, when America is privileged to spend her blood and might for the principles, which give her birth and happiness and the peace which she has treasured"

अमेरिकनों ने फ़्रान्स की रण-भूमि में अपना रक्त बहाया, परन्तु कोरिया में (?) क्या लीग ऑफ़ नेशन्स की एक साम्राज्यवादी सत्ता एक निर्बल और पद-दलित राष्ट्र को अपने नीचातिनीच साधनों से नहीं कुचल रही थी? उस महान आत्म-निर्णय के सिद्धान्त के लिए कितने अमेरिकनों ने कोरिया की भूमि में अपना रक्त बहाया? क्या वहाँ शान्ति और न्याय के सिद्धान्तों का ख़ून नहीं हो रहा था? यही नहीं, कोरिया ने अन्य दलित राष्ट्रों की तरह जब प्रेज़िडेण्ट विल्सन के आत्म-निर्णय और लीग ऑफ़ नेशन्स की बात सुनी तो उसके हृदय में भी आशा का सञ्चार हुआ। उसने पेरिस की परिषद में सम्मिलित होने के लिए अमेरिका में रहने वाले अपने तीन कोरिया-वासियों को चुना। परन्तु न्याय और शान्ति के पुजारी अमेरिका ने उन्हें पासपोर्ट नहीं दिया। धन्य है, अमेरिका का सिद्धान्तवाद! यही नहीं, मित्र-शक्तियाँ जब पेरिस में 'शान्ति और न्याय' की योजना करने का खेल खेल रही थीं, उस समय कोरिया की दुख-गाथा सुनाने के लिए कोरिया का एक युवक नेता फ़्रिडसिक किम किसी तरह पेरिस जा पहुँचा, परन्तु आदर्शवाद के महान पुजारियों ने उसकी एक बात सुनने से भी इन्कार कर दिया।

कोरिया को शीघ्र ही यह अच्छी तरह ज्ञात हो गया कि उसकी रक्षा स्वयं उसके अतिरिक्त संसार की कोई भी शक्ति नहीं कर सकती। संसार की बड़ी-बड़ी शक्तियाँ जो प्रोपेगेण्डा के लिए बड़े-बड़े सिद्धान्त बघार रही थीं, महायुद्ध के समाप्त होते ही वे अपने असली रूप में प्रकट होने लगीं। कर्नल हाउस ने विल्सन के सम्बन्ध में एक बार लिखा था—"He has a heroic bite. I am afraid it is his destiny to adhere to something that will sink with him." वह भविष्य-वाणी सत्य हुई। प्रेज़िडेण्ट विल्सन के चौदह सिद्धान्त काग़ज़ पर ही लिखे रह गए और जो महायुद्ध 'स्वाधीनता और स्वातन्त्र्य' के उच्च सिद्धान्तों के लिए बतलाया जाता था, वही कुछ निर्बल शक्तियों को बाँट खाने का साधन बनाया जाने लगा।

कोरिया को इस बात का निश्चय था कि जापान के सामने सशस्त्र विरोध सफल होना असम्भव है, इसलिए उसने एक नए और शान्तिमय मार्ग का अवलम्बन किया। कोरिया-निवासियों को पेरिस में अपने प्रतिनिधि का अपमान होने और उनके नाममात्र के बादशाह की मृत्यु के समाचार एक साथ ही मिले। प्रजातन्त्र के भाव जनता में पहले ही से घर कर रहे थे। अब उन्हें उनको कार्य-रूप में लाने का सुयोग मिल गया। कोरिया के नेताओं ने सन् १९१९ में प्रजातन्त्र की घोषणा करने का निश्चय किया और उसके लिए एक मसविदा तैयार किया। इस स्वातन्त्र्य घोषणा के अन्त में लिखा था:—

१—हमने यह कार्य सत्य, धर्म और जीवन की प्रेरणा तथा अपनी जाति की प्रार्थना से उनके स्वातन्त्र्य प्राप्त करने की आकांक्षा का प्रदर्शन करने के लिए हाथ में लिया है। इस कार्य में इसलिए किसी को किसी पर अत्याचार नहीं करना चाहिए।

२—प्रत्येक व्यक्ति को हर समय प्रत्येक स्थान पर अपनी इस आकांक्षा का प्रदर्शन हर्ष के साथ करना चाहिए।

३—सब काम इस उत्तमता के साथ किए जायँ कि हमारा बर्ताव अन्त तक प्रशंसनीय और न्याय-सङ्गत हो।

कोरिया ने महात्मा गाँधी के उसी मार्ग का अनुकरण किया, जिसे उन्होंने इस शताब्दी के कुछ प्रारम्भिक वर्षों में दक्षिण अफ़्रिका में और फिर भारतवर्ष में किया है। उसके नेताओं ने कहा कि हम अपनी कठिन से कठिन सहनशीलता और आत्म-संयम से अत्याचारियों के हृदय और पञ्जे को ढीला कर देंगे, हम जेल की यातनाएँ और मृत्यु की टिकटी का चुम्बन करेंगे, पर अत्याचार का उत्तर अत्याचार से नहीं देंगे। लेकिन हमारी यह अहिंसा हमारी निर्बलता की परिचायक न होगी। घोर दमन भी हमें हमारे पथ से विचलित न कर सकेगा। उन्होंने घोषणा की थी, कि जो कोरियावासी अत्याचार और हिंसा का उपयोग करेगा वह देशद्रोही समझा जायगा और उसके कार्य से हमारे ध्येय में बड़ा धक्का पहुँचेगा।

सन् १९१९ में कोरिया के प्रजातन्त्र का घोषणा-पत्र एक ही समय, एक ही दिन, गाँव-गाँव और नगर-नगर में सुनाया गया। इस दिन कोरिया में नवीन युग का जन्म हुआ। चारों तरफ़ उत्सव और जलसे हुए। सरकारी नौकरों ने अपनी-अपनी वर्दियाँ फाड़ कर फेंक दीं और प्रजातन्त्र के प्रति अपनी भक्ति प्रकट की। जिस समय यह घोषणा-पत्र कोरिया के कोने-कोने में पढ़ा जा रहा था, उस समय इस घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले ३३ नेताओं ने मुख्य-मुख्य जापानी-कर्मचारियों को एक भोज में निमन्त्रित किया था और अन्त में अकस्मात स्वातन्त्र्य-घोषणा का अल्टीमेटम पढ़ कर सुना दिया। यही नहीं, उन्होंने कहा—"हमने अपना काम कर लिया है, अब आप हमें जेल भेज सकते हैं।" टेलीफ़ोन द्वारा पुलिस बुलाई गई और उन्हें हथकड़ी भर कर जेल भेज दिया गया।

इसके बाद के एक-दो वर्षों की घटनाएँ कोरियनों के अदम्य साहस, राष्ट्रीय भावों की प्रबलता और सहन-शक्ति को अच्छी तरह प्रकट करती हैं। उनमें उस राष्ट्रीय जीवन का विकास पूर्ण हो चुका था जब पाशविक शक्ति के बड़े से बड़े बन्धन भी उस प्रवाह को रोकने में असमर्थ होते हैं। जब एक व्यक्ति कोरिया की राष्ट्रीय पताका फहराने के लिए जापान के नियत किए हुए कठिन दण्ड को देखता है, और फिर उस दण्ड को भी सह कर कोरियनों को अपनी पताका की रक्षा में दत्त-चित्त देखता है तो उसे यह अनुभव हुए बिना नहीं रह सकता कि वह उस स्थिति को पहुँच चुका है जब मृत्यु या स्वातन्त्र्य केवल दो ही आकांक्षाएँ होती हैं। जापान ने राष्ट्रीय झण्डे के प्रदर्शन के लिए मृत्यु-दण्ड नियत किया था, परन्तु स्वातन्त्र्य घोषणा के दिन सब मकानों और सब व्यक्तियों के पास यह झण्डे थे। कोई भी शक्ति एक राष्ट्र को फाँसी पर नहीं टाँग सकती, जापानी मुँह बाए रह गए।

कोरियनों में अपनी राष्ट्रीय पताका के सम्मान के भाव इतने जागृत हो गए थे कि अवसर पड़ने पर बच्चे, विद्यार्थी और स्त्रियाँ जापानी अफ़सरों की नाक के नीचे उसका प्रदर्शन करने में भी नहीं चूकते थे। एक स्कूल का जलसा हो रहा था। बड़े-बड़े जापानी कर्मचारी उपस्थित थे। अन्त में एक ग्यारह वर्ष का कोरियन छोकरा उठा। उसने जापानी कर्मचारियों को सम्बोधन करके कहा, हम अब आपसे एक चीज़ और माँगते हैं। इसके बाद अपने जेब से एक छोटी सी पताका निकाली और उसे ऊँचा करके कहा—'हमारा देश हमें वापस कर दो। ईश्वर करे कोरिया चिरायु हो।' 'मैंसी' हमारे देश के बन्देमातरम् की तरह कोरियनों का जय-घोष है। सब लड़के चिल्ला उठे—'मैंसी', 'मैंसी', 'मैंसी'। उन्होंने अपने सार्टिफ़िकेट फाड़ कर फेंक दिए और चल दिए। उस छोटे से छोकरे ने यह जानते हुए कि वह, वह अपराध कर रहा है, जिसके लिए कई लोगों को फाँसी पर लटकाया जा चुका है, यह कार्य अपने ऊपर लिया था।

एक ओर यूरोप में मित्र-शक्तियाँ 'शान्ति और न्याय' की स्थापना के लिए बड़ी-बड़ी परिषदें कर रही थीं और लीग ऑफ़ नेशन्स का ध्येय यह बतलाया जाता था, कि उसका उद्देश्य एक सबल राष्ट्र से दूसरे राष्ट्र के स्वातन्त्र्य और स्वाधीनता की रक्षा करके संसार में स्थायी शान्ति स्थापित करना है, तो दूसरी ओर उनका ही एक

सदस्य—जापान—कोरिया में उस भीषण नीति का अवलम्बन कर रहा था, जो शताब्दियों से संसार में महान क्रान्तियों और अशान्ति का कारण हुई है। लीग ऑफ़ नेशन्स की एक धारा थी :—

Any war or threat of war, whether it effects members of the League or not, is declared to be a matter of concern to the whole league, and the League shall take any action that may be deemed wise and effective to safe guard the peace of nations. It is the right of any member to bring to the notice of the Assembly or Council any circumstance affecting international relations which threatens to disturb international peace.

हम आगे दिखलावेंगे कि कोरिया में जापान जिन साधनों का उपयोग कर रहा था, वे यदि यूरोप में होते तो संसार में अपना रङ्ग लाए बग़ैर न रहते? क्या यदि कोई शक्ति एक गोरे देश पर इस तरह के अत्याचार करती तो अन्य देश चुप रहते? क्या लीग ऑफ़ नेशन्स इस तरह उसकी अवहेलना करती? पोलैण्ड, ज़ेकोस्लोवेकिया, युगोस्लेविया और अन्य प्रजातन्त्र, जिन्होंने कोरिया के मुक़ाबिले में अपने राष्ट्रीय भावों की रक्षा के लिए बहुत कम आत्म-त्याग किया, इस बात के उदाहरण नहीं हैं कि लीग ऑफ़ नेशन्स केवल गोरे देशों के लिए है? यदि नहीं, तो उपरोक्त धारा के अनुसार क्यों नहीं किसी सदस्य ने लीग ऑफ़ नेशन्स में यह प्रश्न रक्खा और क्यों नहीं उसने बीच में पड़ कर जापान से कहा कि कोरिया से अपना हाथ उठा लो?

कोरिया ने अपनी स्वातन्त्र्य-घोषणा में जब जापान के आधिपत्य को दूर कर, देश में प्रजातन्त्र स्थापित करने का दृढ़ निश्चय प्रगट किया, तो जापान भी उसकी इस राष्ट्रीय भावना को कुचलने के लिए पूरी तरह तैयार हो गया। जापानी सिपाहियों को राष्ट्रीय जुलूस और सभाएँ भङ्ग करने के लिए लाठी और तलवार दे दिए गए। इनके भयङ्कर अत्याचार प्रत्येक दिन की एक साधारण बात हो गई थी, सड़कों और बाज़ारों में देशभक्तों पर लाठियों की वर्षा होती थी। एक बार एक व्यक्ति के हाथ और कान काट कर उसे सड़क पर छोड़ दिया गया। जेलें देशभक्तों से ठसाठस भर गईं, परन्तु इससे कोरिया-वासी डरे नहीं, बल्कि उनका निश्चय और भी दृढ़ होता गया।

व्यापारियों और दुकानदारों ने राष्ट्रीय आन्दोलन से पूर्ण सहानुभूति दिखलाई। उन्होंने इन भयङ्कर अत्याचारों के विरोध-स्वरूप अपनी दुकानें बन्द कर दीं, जापानी शासकों ने दुकानों पर सिपाही खड़े कर दिए और दुकानदारों को हुक्म दिया कि वे अपनी दुकान खोलें। उन्होंने अपनी दुकानें खोलीं तो सही, परन्तु सिपाहियों के हटते ही फिर बन्द कर देते थे अथवा ग्राहक जो चीज़ उनसे माँगने आते थे, उनसे कह देते थे कि हमारे यहाँ नहीं है।

विद्यार्थियों—लड़के और लड़कियों—ने 'मैंसी' 'मैंसी' जय-घोष किया और स्कूलों से बाहर निकल आए? अध्यापक और अध्यापिकाएँ इन्तज़ार में बैठी रहीं, परन्तु कोई विद्यार्थी वापस नहीं आया। उन्हें सार्टिफ़िकेट न देने की धमकी दी गई, पर उन्होंने स्वयं अपने हाथ से सार्टिफ़िकेट फाड़ कर फेंक दिए। सियोल के सब छात्र—लड़के और लड़कियाँ—एक जगह एकत्रित हुए। जापानी सैनिकों ने इनको आकर घेर लिया और उन पर लाठियों से आक्रमण किया। क़रीब ३०० लड़के और १२० लड़कियाँ गिरफ़्तार कर ली गईं।

अन्य स्थानों में, छात्राएँ नगर और बाज़ार में राष्ट्रीय प्रदर्शन करने लगीं। उनके राष्ट्रीय जय-घोष से आकाश व्याप्त हो गया। 'कोरिया चिरायु' हो 'जापान का नाश हो' 'कोरिया-प्रजातन्त्र की जय' आदि जय-घोष नागरिकों में जीवन प्रदीप्त करते थे। इनके हाथ में राष्ट्रीय पताका थी और वे पुलिस और सरकारी कर्मचारियों को सम्बोधन करके कहती थीं—"हम राष्ट्रीय पताका धारण करती हैं, आओ हमें गिरफ़्तार करो।"

स्त्रियों और लड़कियों ने सभी जगह अदम्य साहस का परिचय दिया। इनमें बड़े घरों की स्त्रियाँ भी थीं। सार्वजनिक सभाओं और प्रदर्शनों में यह अपनी पूर्ण शक्ति से सहयोग करती थीं। अनेक कठिनाइयाँ और मुसीबतें भी इन्हें इनके पथ से विचलित करने में असमर्थ हुईं। पुरुषों पर ही नहीं, बल्कि स्त्रियों पर भी डण्डे चलाए जाते थे। यही नहीं, उन्हें नङ्गा करने की भी चेष्टा की जाती थी, पर स्त्रियाँ न दबीं, न दबीं। उन्होंने अपनी लज्जा-निवारण के लिए ऐसे वस्त्र बनाए जो शरीर से चिपके रहते थे और कठिनाई से उतर सकते थे। जेलों में भी स्त्रियों के साथ बुरा व्यवहार किया जाता था। कितनी ही लड़कियों को घण्टों घुटनों के बल बिठाया जाता था, कितनों ही पर लात चलाए गए। इसका परिणाम यह हुआ कि कोरिया-निवासियों में जापानियों के प्रति और भी घृणा के भाव भभक उठे। उनके आन्दोलन में उस नवीन जीवन और साहस की लहरें हिलोरें मारने लगीं, जो एक राष्ट्र को 'मृत्यु या विजय' के पथ पर अग्रसर करने को आवश्यक हैं।

स्त्रियों और लड़कियों के साथ जब यह व्यवहार था, तब पुरुषों का क्या कहना है? उनका तो जीवन, धन और सम्पत्ति सभी ख़तरे में था। जेल में और जेल के बाहर अत्यन्त अमानुषिक अत्याचार होते थे। कोरिया का एक अमेरिकन कर्मचारी जेल की घटनाओं के सम्बन्ध में लिखता है—"मैं जहाँ यह बैठा लिख रहा हूँ, उससे दो सौ गज़ दूरी पर प्रतिदिन मार-पीट जारी रहती है। क़ैदी खम्भों से नङ्गे बाँध दिए जाते हैं और उनके बदन पर इतने कोड़े लगाए जाते हैं कि वे बेचारे बेसुध हो जाते हैं। बेहोश होने पर क़ैदी के बदन पर पानी छिड़का जाता है और होश में आने पर फिर उस पर कोड़ों की मार पड़ती है। कभी-कभी एक ही आदमी दिन में कई बार पीटा जाता है। विश्वस्त-सूत्र से मालूम हुआ है कि इस प्रकार पीटने से लोगों के हाथ-पैर तक टूट गए हैं। स्त्रियों और पुरुषों के अतिरिक्त बच्चे भी गोलियों और सङ्गीनों से भोंक कर मार दिए गए हैं।" यह सब उन कोरियनों के साथ हो रहा था जो जापानियों से किसी भी तरह बल में कम न थे। ऐसी परिस्थिति में भी उन्होंने जिस तरह पूर्ण शान्ति और सहन-शक्ति का परिचय दिया, वह कोरिया के लिए अत्यन्त सराहनीय है। अनेक बार रक्तपात होने से बच गया और इसका अधिक श्रेय ईसाई नेताओं को है।

कोरिया ने जापान के दमन का उत्तर दूसरी ही तरह दिया। सरकार एक मनुष्य को पकड़ती थी, पर उसी काम के करने के लिए दस आदमी आ जाते थे। इस तरह कोरिया ने अपने प्रायः १,६६,००० सुपुत्रों को जेल भेज दिया और तारीफ़ यह है कि इनमें से केवल ८,३२१ आदमियों पर ही मुक़दमे चलाए गए, बाक़ी बिना मुक़दमे चले ही जेलों में सड़ रहे थे। दमन से ही एक देश के राष्ट्रीय भावों की गहराई की परीक्षा होती है, उससे यदि वास्तव में उस देश में राष्ट्रीयता का कोई आधार होता है तो वह नष्ट नहीं होता, बल्कि दिन पर दिन और भी अधिक शुद्ध और दृढ़ होता जाता है।

जापान की सरकार ने कोरिया के गवर्नर-जनरल को आज्ञा दी कि और भी कड़े उपायों का अवलम्बन लें और जो व्यक्ति जापान के आधिपत्य को उखाड़ने की चेष्टा करे उसे कम से कम दस साल की सज़ा दी जाय। परन्तु कोरियनों का इससे डरना तो दूर रहा, उन्होंने शीघ्र ही कोरियन प्रजातन्त्र का व्यवस्था-पत्र बना कर प्रकाशित कर दिया। इसमें उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता के मूल-आधारों की घोषणा करते हुए कहा कि हम अपने जन्म-सिद्ध अधिकारों की रक्षा, स्वातन्त्र्य और साम्य के विस्तार के लिए, साधुता और दया के सिद्धान्तों के लिए, पूर्वीय संसार की शान्ति और विश्व के कल्याण के लिए कोरिया के स्वातन्त्र्य की घोषणा कर रहे हैं। इसमें बतलाया गया कि उनके इस प्रजातन्त्र-विधान में स्त्रियों और पुरुषों को समान अधिकार रहेंगे और उसमें उनके औद्योगिक, राजनीतिक, धार्मिक, लिखने और भाषण सम्बन्धी पूर्ण स्वतन्त्रता की रक्षा की जायगी। यही नहीं, उन्होंने संसार को यह भी सूचना दे दी कि जापान यदि इसी तरह न्याय और विवेक को कुचल कर उनके कर्तव्य और सम्पत्ति पर आक्रमण करता रहा, तो हम अपनी स्वतन्त्रता के लिए अस्त्र ग्रहण करने में भी न चूकेंगे। अस्त्र ग्रहण करने में हमें अत्यन्त खेद होगा, परन्तु हमारा विश्वास है कि कोरिया की स्वाधीनता हमारे सब सिद्धान्तों से ऊपर है और कोरिया का प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन की आहुति देकर भी उसकी रक्षा करना चाहता है।

जापान ने कोरिया के राष्ट्रीय भावों को कुचलने के लिए धीरे-धीरे सब अस्त्रों का प्रयोग किया, परन्तु उसे तनिक भी सफलता न मिली। कोरिया अभी पूर्ण सफल नहीं हुआ, अभी उसे जापान के साम्राज्यवाद से बचने के लिए बहुत-कुछ करना है। यह प्रगति गत बारह वर्ष से चल रही है। जापान को भी अपने पाशविक बल पर विश्वास नहीं रहा है, वह समझता है कि कोरिया स्वतन्त्र राष्ट्र है और जापानियों का वहाँ आधिपत्य अधिक दिन तक नहीं रह सकता। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि कोरिया जापान के आधिपत्य से पूर्ण मुक्त हो जायगा, परन्तु उसके मामले ने यह स्पष्ट कर दिया है कि संसार की शक्तियों का आधार अब भी पाशविक बल पर टिका हुआ है। लीग ऑफ़ नेशन्स की छोटे राष्ट्रों की रक्षा करने की घोषणा स्वार्थ और धूर्त्तता से भरी हुई है और अभी अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और साम्य के दिन बहुत दूर हैं। संसार की सारी सन्धियाँ, समझौते और परिषदों के हाथ और अधिक मज़बूत करने के लिए हैं और उनका उपयोग परिस्थिति और अवसर पर ही निर्भर है। कोरिया ने जब अमेरिका को उसके साथ की हुई सन्धि का स्मरण दिलाया, तो प्रेज़िडेण्ट रूज़वेल्ट ने जवाब दिया कि, "कोरिया अमेरिका से किस तरह आशा करता है कि वह उसके लिए वह काम कर देगा, जो वह स्वयं अपने लिए नहीं कर सकता।"

जापानियों ने कोरिया में वही किया, जो उन्होंने उद्योग, धन्धों, शिक्षा, सैनिक-व्यवस्था आदि के साथ ही पाश्चात्य देशों से सीखा है। इङ्गलैण्ड, जर्मनी, फ़्रान्स, स्पेन, हॉलैण्ड आदि के इतिहास इन्हीं स्वेच्छाचारों से भरे पड़े हैं। परन्तु हम इस पर भी जापान की अधिक कड़े शब्दों में टीका करते हैं। क्यों? इसलिए कि जापान बुद्ध के अहिंसा-मार्ग का अनुयायी है, उसने पूर्वीय सभ्यता में जन्म लिया है, उससे पूर्व को आशा है और पूर्व की शक्तियाँ ही उसे जीवित रखने में सफल हो सकती हैं। कोरिया उसका पड़ोसी है, एक रङ्ग, एक धर्म—सब कुछ एक है। जापान को उसकी स्वतन्त्रता में बाधक नहीं, वरन सहायक होना चाहिए।

* * *

भारतवासियों के हृदय-सम्राट
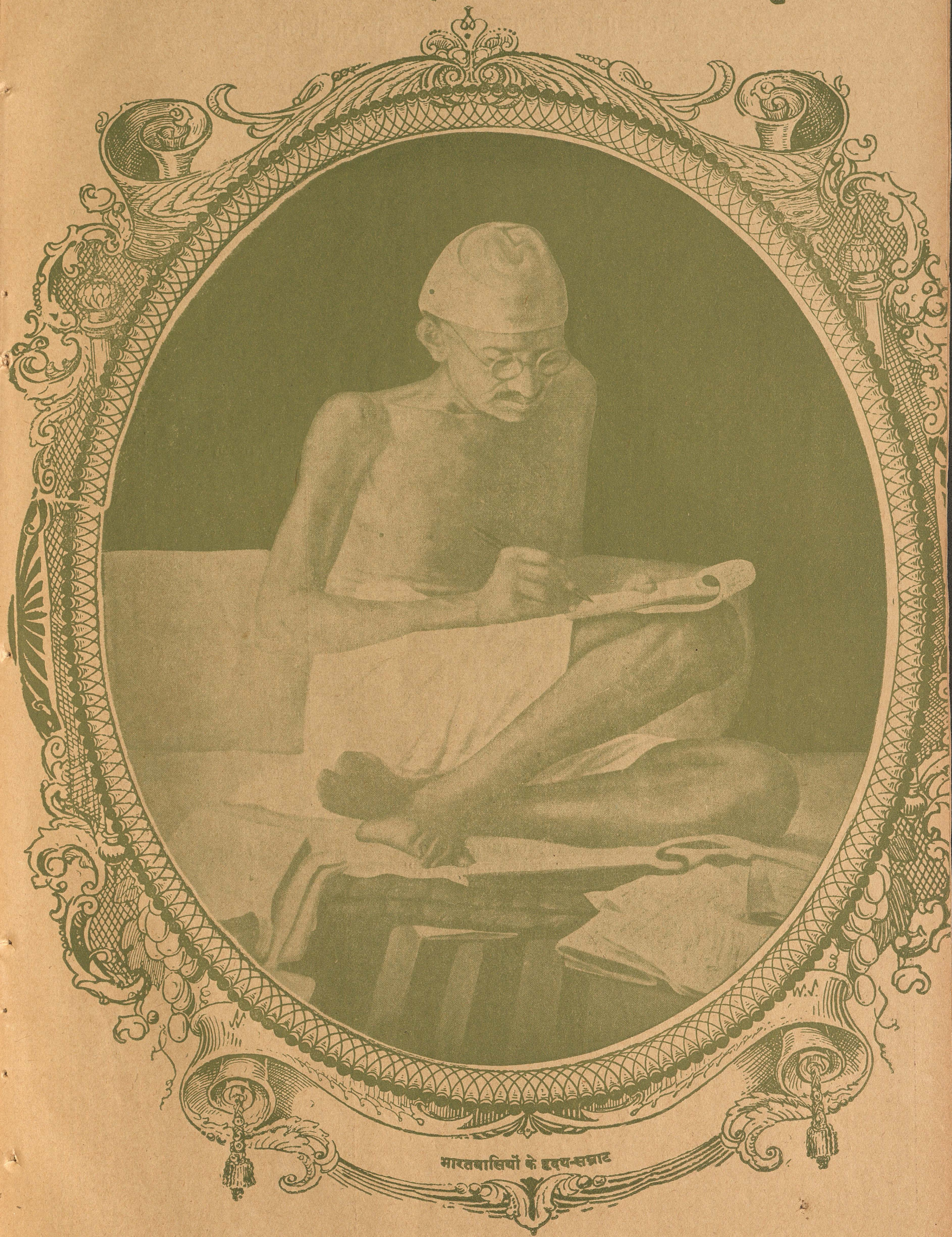
'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

प्रतिभाशाली उर्दू पत्र-सम्पादकों की चित्रावली

श्री० एम० ए० रहमान मालिक "नूरजहाँ"

श्री० नियाज़ फ़तहपुरी, सम्पादक "निगार"

श्री० जमाल साबिरो, सम्पादक "अलीगढ़ पञ्च"
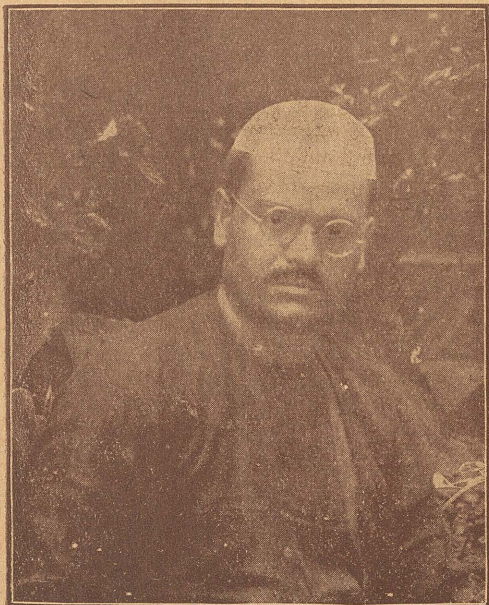
मौलाना सैयद ज़फ़र मेहदी साहब गुहर, सम्पादक "सहेल-यमन"

ख़्वाजा हसन निज़ामी, प्रधान सम्पादक "मुनादी"

मिस्टर अमरचन्द कैश सम्पादक "सुदर्शन"

श्री० ज़फ़र अब्बास, सम्पादक "नज़ारा"

श्री० बतसम निज़ामी, सम्पादक "नर्गिस"
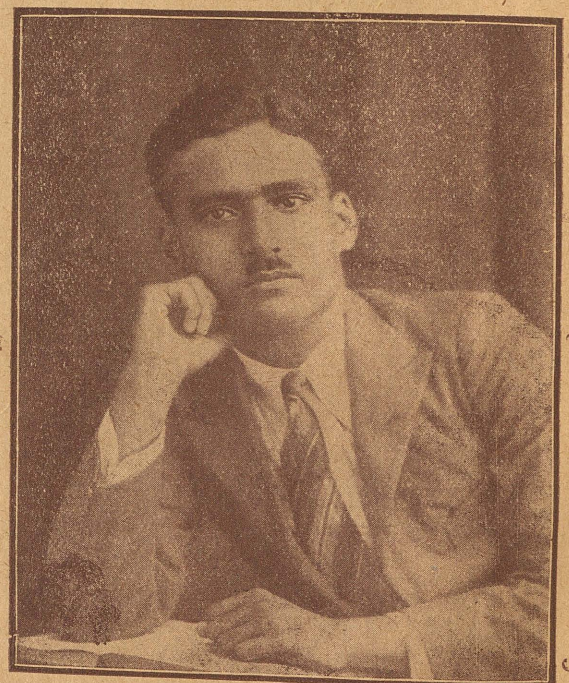
श्री० सय्यद ज़वार अब्बास, सम्पादक "इलाहाबाद युनिवर्सिटी उर्दू एसोसिएशन मैगज़ीन"

'भविष्य' की साप्ताहिक चित्रावली का एक पृष्ठ

श्रीमती ए० पी० अडीसेसिया—आप वेलोर (मद्रास) की ऑनरेरी मैजिस्ट्रेट और कई संस्थाओं की मन्त्रिणी तथा सभानेत्री आदि हैं।

मुन्शी सुखदेवप्रसाद सिनहा 'बिस्मिल' इलाहाबादी—आप उर्दू के प्रसिद्ध शायर और 'भविष्य' के 'केसर की क्यारी' स्तम्भ के सम्पादक हैं।

पं० रघुवंशलाल गौड़—आप अलीगढ़ वार-कौन्सिल के डिक्टेटर थे, जो सरकारी सेना को भड़काने के अभियोग में गिरफ़्तार हुए थे और हाल ही में छूटे हैं।
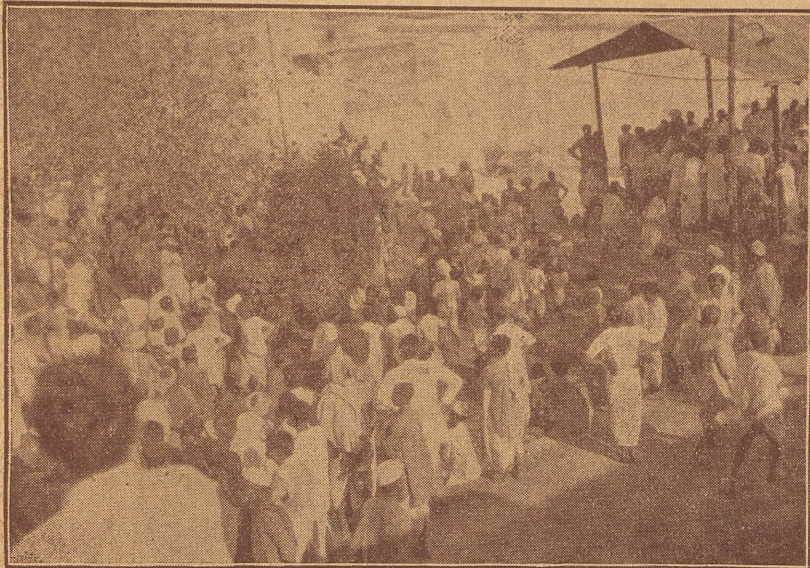
राष्ट्रीय एकता के शहीद श्री० गणेशशङ्कर जी विद्यार्थी के शव-दाह के समय का कारुणिक दृश्य।

कुमारी डी० के० पट्टामल—आप कञ्जीवरम (मद्रास) के सरकारी स्त्री-विद्यालय की छात्री हैं। एक नाटक में यम का पार्ट करने तथा सुन्दर गाने के लिए आपने स्वर्ण-पदक प्राप्त किया है। आपकी अवस्था अभी केवल १४ वर्ष है।

श्री० हरिशङ्कर विद्यार्थी—आप स्वर्गवासी श्री० गणेशशङ्कर जी विद्यार्थी के सब से बड़े पुत्र हैं।

प्रिन्सिपल ए० के० शाह—आप कलकत्ते के अन्ध-विद्यालय के प्रिन्सिपल हैं और अन्धों के सम्बन्ध में होने वाले विश्व-सम्मेलन के भारतीय प्रतिनिधि की हैसियत से अमेरिका गए हैं।
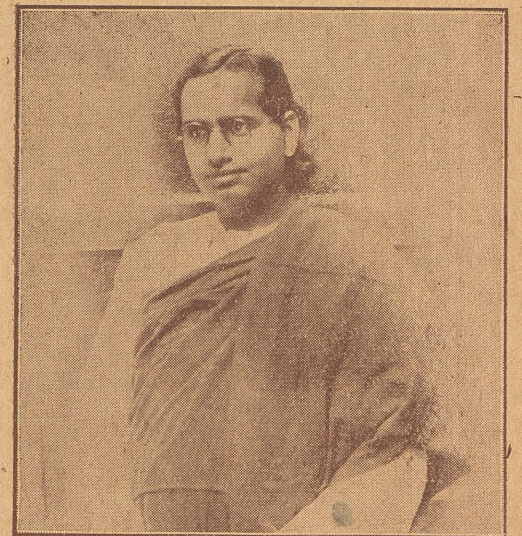
श्री० व्रजबिहारी मेहरोत्रा—आप 'भविष्य' के अन्यतम लेखक श्री० प्रभुदयाल जी मेहरोत्रा, एम० ए० के कनिष्ठ सहोदर तथा पोखरायाँ (कानपुर) तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी के प्रधान हैं। आप ६ मास का कठिन कारागार भोग चुके हैं।

३ री मई की सन्ध्या को

लाहौर के शालामार बाग़ में पुलिस की गोलियों के शिकार

२२ वर्षीय नवयुवक—स्वर्गीय श्री० जगदीशचन्द्र जी

(अब तक के समाचारों से पता चलता है, कि आपके विरुद्ध कहीं भी और किसी भी षड्यन्त्र केस में कोई मामला नहीं था, न आप 'फ़रार' थे और न आपके विरुद्ध कोई प्रमाण ही मिला है)

यह भी बहुत है उनका जो, इतना लेहाज़ है, देखा हमें, तो शर्म से नीची निगाह की।

दिल पर निगाह करके, जिगर पर निगाह की, तुमने सिखा दी दोनों को लय आह-आह की।

निगाह

उन पर न और कुछ हुई तासीर आह की,
इतना हुआ ज़रूर कि फिर कर निगाह की।
यह भी बहुत है उनको, जो इतना लेहाज़ है,
देखा हमें, तो शर्म से नीची निगाह की।
कहिए शबाब का तो ज़माना गुज़र गया,
अब भी निगाह में है वह शोख़ी[१] निगाह की।

—"नूह" नारवी

मञ्ज़ूर है जो सैर सफ़ेदो-सियाह[२] की,
गर्दिश[३] को देख दीदए इबरत[४] निगाह की।
अफ़शाए[५] राज़[६] गिरियए याक़ूब[७] हो गया,
तस्वीर आँसुओं में थी नूरे-निगाह की।

—"अज़ीज़" लखनवी

मतलब यह है कि दिल को मिला देगा ख़ाक में,
उसने जो फ़र्ते[८] शर्म से नीची निगाह की।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

गुनाह

परवाने को मिली है, मकाफ़ाते[९] आशिक़ी,
पर क्या जले कि जल गईं फ़र्दें[१०] गुनाह की।
आज़ादगाने इश्क़ की गुस्ताख़ियाँ तो देख,
ख़ुद दाद माँगते हैं तुझी से गुनाह की।

—"अज़ीज़" लखनवी

रहमत[११] ने मुझ पे हश्र में ऐसी निगाह की,
सर से उतर के गिर पड़ी गठरी गुनाह की।
चल कर ज़रा ख़ुदा के लिए देख लीजिए,
मय्यत[१२] उठी है आपके एक बेगुनाह की।
महशर[१३] में सब को बारिशे-रहमत पे नाज़ है,
धोएगा इससे हर कोई फ़र्दें गुनाह की।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

गवाह

महशर में उनको देख के अल्लाह रे ख़ुशी।
तरदीद[१४] कर रहा हूँ ख़ुद अपने गुनाह की।

—"अज़ीज़" लखनवी

उनकी तरफ़ जो दावरे-महशर[१५] भी हो गया,
बेकार हश्र में है गवाही गवाह की।
महशर में कोई दावरे-महशर अब आ गया,
डर है बिगड़ न जाय गवाही गवाह की।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

१—चञ्चलता, २—काला-सफ़ेद, ३—चक्कर, ४—शिक्षा ग्रहण करने वाली आँखें, ५—ज़ाहिर करना, ६—भेद, ७—पैग़म्बर का नाम है, जो अपने पुत्र हज़रत यूसुफ़ के विरह में रोते-रोते अन्धे हो गए थे, ८—बहुत, ९—बदला, १०—काग़ज़, ११—ईश्वर, १२—लाश, १३—प्रलय, १४—रद करना, १५—प्रलय का न्याय करने वाला,

आह

पुरसिश[१६] हुई जो हश्र[१७] में हाले तबाह की,
हमने जवाब देने से पहिले एक आह की।
लाखों अदाएँ देख कर उस रश्के-माह[१८] की,
जब हो सका न सब्र तो हमने एक आह की।
पहुँचा कहाँ से इसका असर देखिए कहाँ,
मैंने जो की फ़ुग़ाँ[१९] तो फ़रिश्तों ने आह की!

—"नूह" नारवी

घबरा के सबने उनकी तरफ़ एक निगाह की,
किस दिल शिकस्ता ने[२०] दमे आख़िर यह आह की।

—"अज़ीज़" लखनवी

ग़ुस्से में तुमने क्या किसी जानिब निगाह की,
आती है यह कहाँ से, सदा[२१] आह-आह की?
दिल पर निगाह करके जिगर पर निगाह की,
तुमने सिखा दी दोनों को लय आह-आह की।
तलवार छुट के गिर पड़ी क़ातिल के हाथ से,
मक़तल में ऐसी "बिस्मिले" मुज़तर[२२] ने आह की।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

गाह

मूसा की बेख़ुदी[२३] ने वह नक़शा मिटा दिया,
तस्वीर खिंच चली थी तेरी जलवागाह[२४] की।

—"अज़ीज़" लखनवी

कहती है जिसको ख़ल्क़[२५] तजल्ली में बर्क़े[२६] तूर,
हलकी सी वह झलक थी तेरी जलवागाह की।
दावा बहुत था तूर पे मूसा को दीद का।
देखी गई झलक न तेरी जलवागाह की।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

ख़्वाह

दुहरा रहे हो तुम जिसे तलवार टेक कर।
तक़रीर[२७] क्या यही थी किसी उज़्रे-ख़्वाह[२८] की

—"अज़ीज़" लखनवी

तुमने यह किस अदा से करम की निगाह की,
सूरत बदल गई जो दिले दाद-ख़्वाह[२९] की।
सब दमबख़ुद हैं हश्र में कुछ बोलते नहीं,
तुमने हँसी उड़ाई यह किस दाद-ख़्वाह की।
महशर में चुप खड़े हुए हैं बोलते नहीं,
सूरत वह देख-देख के हर दादख़्वाह की।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

१६—पूछ-ताछ, १७—प्रलय, १८—चाँद सी सूरत, १९—आह, २०—दुखी हृदय, २१—आवाज़, २२—बेचैन, २३—आपे में न रहना, २४—ज्योति की जगह, २५—संसार, २६—बिजली, २७—बातचीत, २८—माफ़ी चाहने वाला, २९—इन्साफ़ चाहने वाला,

तबाह

तुम आप अपनी ज़ुल्फ़े[३०] परेशाँ को देख लो,
तस्वीर यह है एक मेरे हाले तबाह की।

—"नूह" नारवी

उड़ती हुई यह ख़ाक परेशान, यह हवा,
तशरीह[३१] है "अज़ीज़" के हाले तबाह की।

—"अज़ीज़" लखनवी

देता है बार-बार दुहाई निगाह की,
तुमने यह किस ग़रीब की मिट्टी तबाह की !!
किस बेरुख़ी से आपने मुझ पर निगाह की,
दुनिया ख़राब की, मेरी मिट्टी तबाह की!
क्यों मुझसे पूछने लगे वह माजराए[३२] दिल,
जिनको ख़बर नहीं मेरे हाले तबाह की!
हैरान हूँ कि इसकी तुम्हें कुछ ख़बर नहीं,
शुहरत तमाम है मेरे हाले तबाह की!
इस पर कभी मिटे, कभी उस पर फ़िदा हुए,
"बिस्मिल" इसीमें तुमने जवानी तबाह की।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

सियाह

तारे दिखाई देने लगे आसमान पर,
अल्लह रे तीरगी[३३] मेरे रोज़े सियाह[३४] की।
क्या पूछना है, काकुले-शब-रङ्ग[३५] यार का,
गोया वह रात है मेरे रोज़े-सियाह की।

—"नूह" नारवी

लिक्खा मिला मसविदये[३६] शामे हिज्र[३७] में,
यारब दराज़ उम्र हो ज़ुल्फ़े सियाह की।

—"अज़ीज़" लखनवी

गर्दिश जो देख लेगा तुम्हारी निगाह की,
वह क्या करेगा सैर सफ़ेदो-सियाह की।
दिल से तसव्वरे[३८] शबे ग़म पर निसार हूँ,
तस्वीर देख ली तेरी ज़ुल्फ़े सियाह की।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

राह

ज़ाहिद तवाफ़े[३९] दैरो-[४०] हरम[४१] से हुसूल क्या,
सब कुछ किया किसी ने अगर दिल में राह की।
अच्छी वह दोस्ती है जो मौक़े के साथ हो,
वह दुश्मनी भी ख़ूब जो हो राह-राह की।

—"नूह" नारवी

कहती है रूह आई हैं जितनी कि हिचकियाँ,
उतनी ही मैंने ठोकरें खाई हैं राह की!

—"अज़ीज़" लखनवी

नाला[४२] वही है जिसने कलेजे में घर किया,
बस है वह आह जिसने तेरे दिल में राह की।

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

३०—बिखरे हुए बाल, ३१—बयान, ३२—हाल, ३३—अँधेरा, ३४—ख़राब दिन, ३५—काले रङ्ग के बाल, ३६—मज़मून, ३७—विरह की शाम, ३८—ध्यान, ३९—परिक्रमा, ४०—मन्दिर, ४१—काबा, ४२—फ़रियाद।

कुछ चुनी हुई उत्तमोत्तम पुस्तकों की संक्षिप्त सूची

संक्षिप्त स्वास्थ्य-रक्षा (गं० पु० मा०) ॥=)
सन्तान कल्पद्रुम (हिं० ग्रं० र०) १)
संसार-सुख-साधन (सर० मं०) ।≡)
साम्यवाद (हिं० ग्रं० र०) २॥)
स्वास्थ्य को कुञ्जी (गं० पु० मा०) १।)
सुख और सफलता के मूल सिद्धान्त =)॥
सुख की प्राप्ति का मार्ग (हिं० सा० मं०) ।=)
सौ अजान एक सुजान (गं० पु० मा०) १)
स्वदेश (हिं० ग्रं० र०) ॥=)
स्वावलम्बन (हिं०ग्रं०र०) १॥)
हिन्दी करीमा (प्र० पु०) ।-)
हिन्दुस्तानी शिष्टाचार (रा० ना० ला०) ॥=)
हिन्दू-तीर्थ (") ॥)
हिन्दू-सङ्गठन (भाई परमानन्द) १)

बालकोपयोगी

अच्छी आदत डालने के उपाय (हिं० ग्रं० र०) =)॥
अद्भुत कहानियाँ (दो भाग) (हिं० पु० ए०) १)
अनोखी कहानियाँ (इं० प्रे०) ।)
अल्फ़ाबेटिकल चार्ट (रा० ना० ला०) २)
आकाश की बातें (हिं० मं०) ≡)
आकाश की सैर (हिं० पु० ए०) १।)
आरव्योपन्यास (दो भाग) (इं० प्रे०) १।)
इल और बिल की कहानियाँ (मि० बं० का०) ≡)
ईसप की सचित्र कहानियाँ (इं० प्रे०) २)
ऐतिहासिक कहानियाँ (इं० प्रे०) १।)
कीड़े-मकोड़े (गं०पु०मा०) ॥=)
खिलवाड़ (गं०पु०मा०) ।)
खिलौना (इं० प्रे०) ।≡)
खेल-खिलौना (हिं०पु०ए०) ।≡)
खेल-तमाशा (इं० प्रे०) ।)
खेल-पचीसी (गं० पु० मा०) ।≡)
गज्जू और गप्पू (मि० बं० का०) ≡)
गधे की कहानी (गं० पु० मा०) ।॥)
गोबर-गनेश (इं०प्रे०) ।≡)
चमत्कारी बालक (इं० प्रे०) ।=)
ढपोरशङ्ख (क० का०) ।)
देवनागर वर्णमाला (इं० प्रे०) ।=)
नटखटी रीछ (मि० बं० का०) ≡)
नवीन पत्र-प्रकाश (") १।)
नानी की कहानी (गृ० ल०) ।)
" " (हिं० पु० ए०) ।॥-)
नीति रत्नमाला (गं० पु० मा०) ॥)
" " (इं० प्रे०) ॥=)
नीति शिक्षावली (हिं० मं०) -)॥
परियों का देश (गृ०ल०) १)
परोपकारी हातिम (गं० पु० मा०) ॥)
परीक्षा कैसे पास करना (मि० बं० का०) =)
पहेली-पुञ्ज (हिं० प्रे०) ।=)
पहेली बुझौवल (मि० बं० का०) ॥)
पारस्योपन्यास (इं०प्रे०) १॥)
पिता के उपदेश (हिं० ग्रं० र०) =)
पौराणिक उपाख्यान-माला (ब्रा० रा० ना०) १।)
प्रह्लाद (इं० प्रे०) ।)
पृथ्वीराज (पॉपुलर) १)
फ़व्वारा (इं० प्रे०) १)
बच्चों का प्यारा कृष्ण (स० आ०) ।)
बच्चों का चरित्र-गठन (ड० ब० आ०) ।)
बाल आरव्योपाख्यान (चार भाग) (इं० प्रे०) २॥)
बालक (सन्तराम) १)
बाल-कथा-कहानी (आठ भाग) (हिं० मं०) ३)
बाल कवितावली (गृ० ल०) १)
बालगीता (इं० प्रे०) ॥)
बालगीतावली (") ॥=)
बाल-नाटकमाला (मि० बं० का०) ।=)
बालनीति कथा (दो भाग) (गं० पु० मा०) २)
बाल पुराण (इं० प्रे०) ॥=)
बाल रामायण (") ॥=)
" " (हिं० पु० ए०) ॥-)
बाल विनोद (पूरा सेट) (इं० प्रे०) १॥)॥
बाल विलास (गं० पु० मा०) ।)
बाल हितोपदेश (इं० प्रे०) ॥)
बाला बोधिनी (पाँच भाग) (इं० प्रे०) १॥≡)
बालोपदेश (") ।=)
भक्त ध्रुव (पॉपुलर) ।=)
भक्त प्रह्लाद (") ।=)
भारत के सपूत (गं० पु० मा०) ॥)
भीष्म (पॉपुलर) ॥=)
मज़ेदार कहानियाँ (मि० बं० का०) १)
मज़ेदार ख़ज़ाना (इं० प्रे०) ।=)
मनोरञ्जक कहानियाँ (चाँ० का०) २)
मनोहर ऐतिहासिक कहानियाँ (चाँ० का०) १॥)
महाभारतीय सुनीति (ग्रं० मं०) ।=)
माता के लाल (शि० का०) ॥)
मेवाड़ गौरव (पॉपुलर) १)
रसीली कहानियाँ (इं० प्रे०) ॥)
रॉबिन्सन क्रूसो (रा० ना० ला०) १)
" (इं० प्रे०) १॥)
लड़कियों का खेल (गं० पु० मा०) ।)
लड़कों का खेल (इं० प्रे०) ।)
लवकुश (निहालचन्द) १॥)
वन कुसुम (इं० प्रे०) ।=)
विचित्र-वीर (") ।=)
विज्ञान की सरल बातें (ब्रा० रा० ना०) ।-)
विद्यार्थियों का स्वास्थ्य (मि० बं० का०) ।=)
वीर अभिमन्यु (पॉपुलर) ॥=)
वीर लवकुश (") ॥=)
शाहज़ादा और फ़क़ीर (मि० बं० का०) ॥)
शेख़चिल्ली की कहानियाँ (इं० प्रे०) ॥=)
सच्ची मनोहर कहानियाँ (रा० ना० ला०) ॥=)
सदाचार सोपान (सं० भं०) ।=)
सदाचारी बालक (हिं० ग्रं० र०) =)॥
समुद्र की सैर (हिं० पु० ए०) ॥)
सरल व्यायाय (इं० प्रे०) ॥)
सियार पाँड़े (हिं० पु० भं०) =)
सोने का झरना (इं० प्रे०) ॥)
हँसी खेल (गृ० का०) ॥)
" (गं० पु० मा०) १)
हिन्दी गाना (हिं०प्रे०) ॥=)
हिन्दी शेक्सपियर (छः भाग) (इं० प्रे०) ३॥)

उपन्यास

गौर मोहन (इं० प्रे०) २)
लाल चीन ("") १)
नवीन संन्यासी ("") ३॥)
सुधा ("") २)
अकबर (ब्रा० प्रे०) ॥)
अद्भुत अलाप (गं० पु० मा०) ॥।), १)
अनाथ पत्नी (चाँ० का०) २)
अनोखी कहानियाँ (इं० प्रे०) ।)
अन्नपूर्णा का मन्दिर (हिं० ग्रं० का०) १॥)
अपराधी (चाँ० का०) २॥)
अबला (गं०पु०मा०) १), १॥)
अमृत और विष (चाँ० का०) ५)
अन्तरणीया (इं० प्रे०) १)
आरण्यबाला (उ० ब० आँ०) १॥=)
अलिफ़-लैला (ब० बि० प्रे०) २॥)
अवध की बेगम (ब० प्रे०) ॥=)
अहङ्कार (प्रेमचन्द) ॥)
अश्रुपात (गं० पु० मा०) १), १॥)
आशा पर पानी (चाँ० का०) ॥)
आँख का नशा (ड० ब० आँ०) १)
आँख की किरकिरी (हिं० ग्रं० र०) १॥), २)
आँख के आँसू (ड० ब० आँ०) ।=)
इन्द्रधनुष (बी० स० पु०) १॥)
इन्साफ़-संग्रह (२ भाग) (इं० प्रे०) १॥)
इन्साफ़ की कहानियाँ (इं० प्रे०) २)
उषाकाल (हिं० पु० ए०) ५॥), ६॥)
एकलव्य (ड० ब० आँ०) ॥)
कथा कादम्बिनी (सा० भ० लि०) ॥)
कनक-रेखा (हिं०ग्रं०का०) १)
कप्तान की कन्या (बी० स० पु०) १।)
करुणा (इं० प्रे०) ३॥)
करुणादेवी (बेल०प्रे०) ॥)
कर्तव्याघात (हिं० पु०) २॥)
कर्मक्षेत्र (ब० प्रे०) ३), ३॥), ३॥)
कर्मफल (गं० पु० मा०) १॥)
कङ्कणचोर (ड० ब० आँ०) २)
कामिनी कञ्चन (नि० चं०) ३), ३॥)
काया-कल्प (मा० पु०) ३॥)
कोहेनूर (ब० प्रे०) १॥)
खरा सोना (हिं० पु० ए०) १)
गल्पगुच्छ (इं० प्रे०) ३॥)
गल्प-विनोद (चाँ० का०) १)
गोरा (प्र० पु०) ३)
घर और बाहर (प्र०पु०) १।)
चरित्रहीन (हिं०पु०ए०) ३)
चन्द्रकला (हिं० ग्रं० का०) ॥=)
चन्द्रनाथ (" ") ॥)
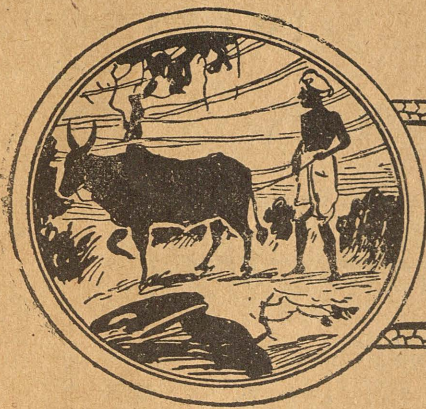
भारतीय भारत
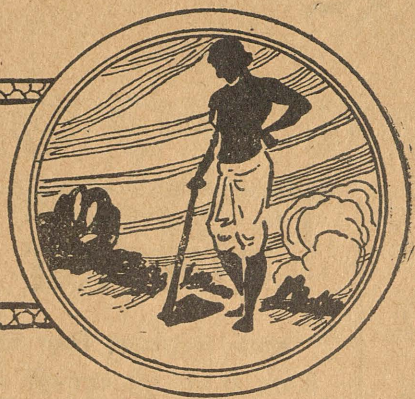
राजपूताने के जागीरदार

[एक भूतपूर्व उच्च कर्मचारी]

[पूर्ण-संख्या ३१ से आगे]
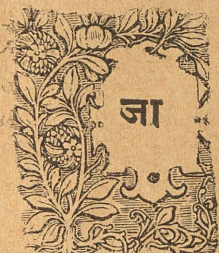
जागीर के गाँवों की दशा रियासत के गाँवों की अपेक्षा अधिक हीन और शोचनीय होती है। कहने को तो जागीरदार को प्रायः केवल ज़मीन का लगान वसूल करने का ही अधिकार होता है, परन्तु व्यवहारतः रियासत जागीर के गाँवों के प्रति अपना कोई उत्तर-दायित्व नहीं समझती। रियासत की ओर से जागीर के गाँवों में न स्कूल खोले जाते हैं और न अस्पताल; वहाँ न पुलिस के चौकीदार होते हैं और न कोई सफ़ाई का प्रबन्ध। रियासत मान लेती है कि यह प्रबन्ध जागीर-दार करेगा, परन्तु साथ ही साथ उस पर कोई दबाव भी नहीं डाला जाता। फलतः कुछ अत्यन्त बड़ी जागीरों को छोड़ कर शेष ठिकानों में न अस्पताल हैं और न स्कूल। रात-दिन कमा कर जागीरदार का कोष भरने वाले दीन कृषकों को समय पर दवाई की एक पुड़िया भी नहीं मिलती और न उनके होनहार बच्चों को दो अक्षर पढ़ने का ही अवसर मिलता है। जागीरदार कहते हैं कि शिक्षा और स्वास्थ्य का प्रबन्ध करना उनका कर्तव्य नहीं है और रियासतें कहती हैं कि जागीर के गाँवों में स्कूल और अस्पताल ठिकाने के होने चाहिए। इस मतभेद के कारण ठिकाने और रियासत दोनों का धन बच जाता है और ठिकानों की जनता रोग और अन्धकार में फँसी हुई अपने दिन बिताती रहती है।

यह बात सच है कि ठिकाने के पट्टों में इस बात का उल्लेख नहीं होता कि जनता के प्रति जागीरदार का क्या कर्तव्य है? कारण यह मालूम होता है कि स्वयं महाराजाओं को ही अपने कर्तव्य का ज्ञान नहीं है, फिर वे दूसरों को कैसे कर्तव्य का स्मरण दिलाएँ। इसके अतिरिक्त अधिकांश ठिकाने उतने ही प्राचीन हैं, जितनी स्वयं रियासतें। मध्य-काल में शिक्षा तथा स्वास्थ्य-विधान शासकों का कर्तव्य, भारतवर्ष में क्या, कहीं भी नहीं माना जाता था। यूरोप में भी अट्ठारहवीं शताब्दी के अन्त में शासकों की ओर से स्कूल तथा अस्पताल खोले गए थे। भारतीय रियासतों में उस समय विद्या को प्रोत्साहन अवश्य दिया जाता था और अच्छे विद्वानों का मान भी होता था, परन्तु जनता को विशेष प्रकार से शिक्षित बनाने के लिए सङ्गठित विभाग किसी भी रियासत में नहीं था। पूर्व और पश्चिम के सम्पर्क से रियासतों में तो शिक्षा-विभाग स्थापित हो गए, किन्तु ठिकानों में यह प्रकाश अभी तक नहीं पहुँचा। आश्चर्य की बात यह है कि उन्नत रियासतों ने भी जागीरदारों का ध्यान अब तक इस ओर आकर्षित नहीं किया है और न जागीरदारों ने स्वयं ही जनता के प्रति अपना कर्तव्य पूरा किया है। जोधपुर के उन ठिकानों पर तो शिक्षा-विभाग की तरफ़ से ज़ोर डाला जा रहा है, जो नाबालग़ी में हैं। ऐसी जागीरों में प्रायमरी स्कूल और दस-बीस दवाइयों वाले अस्पताल स्थापित होने लग गए हैं, परन्तु जहाँ जागीर-दार ज़ोरदार हैं, वहाँ रियासत वाले चूँ भी नहीं करते।

मान लीजिए कि किसी ठिकाने की वार्षिक आय अर्थात् ज़मीन का लगान जङ्गल की बिक्री तथा चुङ्गी आदि एक लाख रुपए है। यह सब आय जागीरदार की सम्पत्ति समझी जाती है और अपनी प्रजा को आराम के लिए इसमें से एक पैसा भी ख़र्च करना उसके लिए लाज़मी नहीं है। शिक्षा, अस्पताल, पुलिस, सेना, न्यायालय आदि किसी की उसको आवश्यकता नहीं। अपनी शान के वास्ते तथा विशेष अवसरों पर अपने नरेश की सवारी में सम्मिलित होने के लिए उसको कुछ आदमी और घोड़े अवश्य रखने पड़ते हैं, परन्तु ये सब भी अधिकतर उसके व्यक्तिगत आराम के लिए हैं। शेष धन उसके भोग और विलास में ख़र्च होता है। पहिले लेख में बतलाया जा चुका है कि ऐसा जागीर-दार शायद ही कहीं मिले, जिसने एक ही विवाह किया हो और जो मद्य न पीता हो। इन व्यसनों की व्याधि के कारण राजपूताने के ६० प्रतिशत जागीरदार ऋण से दबे हुए हैं। थोड़ी आय वाले ठाकुर लोग भी दो-तीन युवतियाँ और दो-चार मद्य की बोतलें अपने लिए अत्यन्त आवश्यक समझते हैं। जिनकी आमदनी ख़ासी है, वे लोग तो शिमला, मन्सूरी और ऊटी पर विहार किया करते हैं।

राजपूतों के विलास में पाशविकता अधिक है और संस्कृति कम। जयपुर के अतिरिक्त अन्य रियासतों में कला का कोई आदर नहीं है। मुग़लों के विलास से कला को बड़ा प्रोत्साहन मिला था, परन्तु राजपूतों के विलास से केवल नैतिक पतन हुआ है। जागीरदारों के अन्तःपुर में न गायिकाएँ होती हैं, न नर्तकियाँ। जिस समय ठाकुर साहब "काँसाँ आरोगने" (भोजन करने) बैठते हैं तो एक या दो स्त्रियाँ मोटी और भद्दी आवाज़ से ढोलक पीट-पीट कर बेसुरा माँड या सोरठ चीख़ने लगती हैं। ऐसी स्त्रियाँ "ढोलण" या "बारठेण" कह-लाती हैं। जब डीलाँ दारू पीकर बेसुध हो जाते हैं, तब भी यह विचित्र "गाना" चला करता है। इस कला-प्रद-र्शन के वास्ते इन स्त्रियों को नित्य कुछ रोटियाँ और एक दोना दाल मिला करती है। जयपुर की ढोलणियाँ माँड गाने में प्रसिद्ध हैं, परन्तु इनको भी गायिकाएँ नहीं कहा जा सकता। कला प्रेमी ठाकुर साहिब कभी-कभी इन अप्सराओं पर मुग्ध हो जाते हैं। एक रियासत के अङ्ग-हीन नरेश ढोलण-मण्डली के बड़े क़द्रदाँ हैं। जयपुर के दो-तीन ठिकाने के ठाकुरों ने तो "ढोलणों" पर प्राण निछावर कर रक्खे हैं। कोटा राज्य में तीन-चार वर्ष पूर्व एक बड़ी मनोरञ्जक घटना हुई बतलाई जाती है। इस घटना के नायक थे, दो जागीरदार और एक ढोलण। यदि दो-चार ढोलणों के चित्र 'भविष्य' में दिए जावें तो पाठकों को पता चले कि जागीरदार लोग रूप और यौवन के कितने अच्छे पारखी हैं।

जागीरदारों के यहाँ नाच या तो होता ही नहीं और जो होता भी है तो उसको नाच कहना इस शब्द का दुरुपयोग करना है। चैत्र के महीने में राजपूताने में एक त्यौहार मनाया जाता है, जिसको 'गणगौर' कहते हैं। इसका विस्तृत उल्लेख किसी आगामी लेख में किया जावेगा। यहाँ प्रसङ्गवश इससे सम्बन्ध रखने वाले नाच के विषय में कुछ लिखना है। ठिकानों की डावड़ियाँ इस अवसर पर अपनी "नृत्य-कला" का प्रदर्शन करती हैं। अपने सम्पूर्ण शरीर को, यहाँ तक कि आँख, कान, मुख और उँगलियों तक को ढक कर वह अपना नाच दिखाने को तैयार होती हैं। प्रायः ठाकुर साहिब स्वयं इस कला-रस का आस्वादन करने के लिए सामने विराजते हैं। परन्तु यदि उनको सुरा देवी की उपासना से अव-काश न मिल सके तो डावड़ियाँ ठिकानों के आन्तरिक नौकर आदि दर्शकों को ही प्रसन्न करके अपने को धन्य मान लेती हैं। डावड़ियाँ बारी-बारी से दो-दो या चार-चार, बीस-तीस क़दम आगे बढ़ती और पीछे चली जाती हैं। इसमें उनको पैर तो हिलाने ही पड़ते हैं, परन्तु हाथों को कुछ आवश्यकता से अधिक हिलाती हैं। यही कारण है कि इसको नाच कहा जाता है। राज-पूताने में इसका पारिभाषिक नाम "सारोला" है। आगे बढ़ने और पीछे हटने को सारोला देना कहते हैं। ठाकुर लोग इस कला की सुन्दरता का अनुभव अवश्य करते होंगे, परन्तु लेखक को तो सारोला एक प्रकार की सैनिक 'ड्रिल' मालूम होती है।

जागीरदारों के अन्तःपुरों में स्त्रियाँ इस समय भी वैसे ही कपड़े पहनती हैं, जैसे वे अलाउद्दीन ख़िलजी के ज़माने में पहनती थीं। केवल लहँगे के आकार और वज़न में कुछ अन्तर आया है; शेष तद्वत् है। ठकुरानी और डावड़ियाँ एड़ी तक नीचा लहँगा पहनती हैं और उस पर कहीं ४ गज़ और कहीं २½ गज़ की साड़ी पहनी जाती है। इसके अतिरिक्त एक चोली और कुरती भी पहनी जाती है। प्रायः ये सब कपड़े एक रङ्ग के होते हैं। सम्पन्न ठकुरानियाँ सोने और चाँदी के अनगढ़ तथा बेहूदे बहुमूल्य अलङ्कारों से लदी रहती हैं। राजपूत-महिलाएँ अपने बालों को अत्यन्त कस कर बाँधती हैं और आगे की लटों को गोंद से चिपका कर उस पर गोटा लगाती हैं। सामने ललाट के ऊपर छोटे अमरूद के आकार का एक गहना होता है, जिसको 'राखड़ी' कहते हैं, पहनती हैं। अत्यन्त सुन्दर युवती भी इस पोशाक को पहन कर अपने लावण्य को छिपा डालती है। परदे के कारण इन स्त्रियों को काल-परिवर्तन तथा नवीन शैली आदि फ़ैशन का पता नहीं चलता। उच्च शिक्षित आधुनिक महिलाओं का राजपूताने में प्रायः अभाव ही है। अतः कला का कोई भी अङ्ग अब तक तो जागीरदारों के रावले में प्रवेश नहीं कर पाया है, भविष्य की भगवान जानें। कुछ शौक़ीन तबीयत के युवक जागीरदारों को अब राजपूताने की महिलाएँ पसन्द नहीं आतीं, इसलिए संयुक्त-प्रान्त के ताल्लुक़ेदारों के साथ विवाह-सम्बन्ध बढ़ते जाते हैं। एक साहब ने तो सुदूर मद्रास प्रान्त की प्रमदा पसन्द की है और दूसरे ने नेपाल की नवोढ़ा। यदि जागीरदारों की कन्याओं को आधुनिकता से वञ्चित रक्खा गया, तो इसका परिणाम बहुत बुरा होगा।

* * *

कॉङ्ग्रेसवादियों का कर्तव्य

["एक कॉङ्ग्रेसमैन" नामधारी इस लेख के सुयोग्य लेखक ने कॉङ्ग्रेस वालों तथा कॉङ्ग्रेस के कार्यों से सहानुभूति रखने वाले तमाम देश-भाइयों से अपील की है कि लोग, बिना इस बात का विचार किए कि गाँधी-इर्विन समझौता उचित हुआ है या अनुचित, कॉङ्ग्रेस वालों का शक्ति भर साथ दें। महात्मा गाँधी की सफलता राष्ट्र की सफलता होगी।

—स० 'भविष्य']

कुछ महीने पहिले किसी को विश्वास नहीं हो सकता था कि इस साल कॉङ्ग्रेस का अधिवेशन होगा, क्योंकि देश की इस सब से बड़ी संस्था की प्रत्येक कार्रवाई ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गई थी। यहाँ तक कि कार्यकारिणी कमिटी भी ग़ैर-क़ानूनी ठहरा दी गई थी। जिसके बड़े-बड़े सदस्य और स्वयं कॉङ्ग्रेस के राष्ट्रपति इस सरकारी स्वेच्छाचारिता के विरोध करने के अपराध में जेल भेज दिए गए थे। ख़ैर, अब बातें बदल गई हैं और न्यूनाधिक परिमाण में हम फिर से एक असाधारण समय से निकल कर साधारण समय में आ गए हैं। विराम-सन्धि के बाद से देश विश्राम लेने लग गया है और एक बार उसने फिर से प्रस्ताव पास करने का पुराना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। शायद ऐसा होना स्वाभाविक ही था। कॉङ्ग्रेस के अधिवेशन में पुराने साल भर के कार्यों का सिंहावलोकन होना और आगामी साल के लिए नए कार्यों को निर्धारित करना आवश्यक ही है। कराची कॉङ्ग्रेस ने पहले के निर्धारित रास्ते से मुड़ कर महात्मा गाँधी के नेतृत्व में एक नया ही अध्याय आरम्भ कर दिया है। जो कुछ कॉङ्ग्रेस ने किया है, वह ठीक है या ग़लत, अब इस विवाद से कोई लाभ नहीं। गाँधी-इर्विन समझौते पर कॉङ्ग्रेस ने अपनी स्वीकृति की मुहर लगा दी है; अब इस विषय पर कुछ कहने-सुनने की आवश्यकता नहीं रही।

स्वागतकारिणी के सभापति डॉ० चोइथराम गिडवानी तथा कॉङ्ग्रेस के सभापति सरदार बल्लभभाई पटेल, दोनों ही ने अपने भाषणों में समझौते का समर्थन किया है। सम्भव है, इन भाषणों से कुछ लोग समझें कि देश को समझौते के औचित्य पर आवश्यकता से अधिक बतला दिया गया है। इस अत्युक्ति के लिए वे विवश थे, क्योंकि देश के कुछ अत्यन्त प्रमुख कॉङ्ग्रेस वालों तक के दिलों में भी समझौते के औचित्य के विषय में सन्देह था। परन्तु चूँकि गाँधी जी उससे सन्तुष्ट हैं, इसलिए देश ने भी उसे वैसे का वैसा ही मान लिया है। दो व्यक्ति समझौते के विरोधी जान पड़ते थे, परन्तु अपनी ओर लोकमत की कमी देख कर उन्होंने प्रकट विरोध नहीं किया। ऐसा उचित ही था, क्योंकि यह समय दलबन्दी का नहीं है। हिन्दुस्तान ने गोलमेज़ द्वारा बातचीत करके देश की समस्या सुलझाने का विचार कर लिया है। निस्सन्देह कॉङ्ग्रेस पूर्ण स्वाधीनता का ध्येय नहीं छोड़ेगी। उसको ऐसा करने की आवश्यकता भी नहीं है। यह उच्च ध्येय तो हमारे सामने सदैव ही रहना चाहिए, चाहे उसकी प्राप्ति में, जिसका भार हमीं पर निर्भर है, देर लगे या जल्दी।

निराशावादिता

जो हो, कोई भी इस बात को देख सकता है, कि कॉङ्ग्रेसी नेताओं के विचार गोलमेज़-सम्मेलन के परिणामों के विषय में निराशाजनक हैं। पण्डित जवाहरलाल ने गोलमेज़ में जाने वाले दल के साथ जाने से इन्कार कर दिया है। इङ्गलैण्ड का वातावरण पक्ष में नहीं है। इङ्गलैण्ड की नीति व्यापार पर निर्भर रहती है, जो कि आजकल बहुत गिरा हुआ है।

इङ्गलैण्ड को शायद आशा थी कि हिन्दुस्तान से ऑर्डरों का आना शुरू हो जायगा, लेकिन बात ऐसी नहीं हुई, जिससे लङ्काशायर की मिलें तबाह हो रही हैं। चर्चिल यद्यपि अपनी पार्टी के नेता बनने के प्रयत्न में अभी सफल नहीं हुए, फिर भी उनकी गति दृढ़ ही होती चली जा रही है। लिबरलों में फूट पैदा हो गई है और साइमन-दल उससे अलग हो गया है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अभी हो या कुछ देर बाद वे भारत-विपक्षियों से मिल कर मज़दूर तथा लिबरलों की संयुक्त स्कीमों का विरोध करेंगे। मि० लॉयड जॉर्ज कुछ ऐसे बेपेंदी के लोटा, सनकी और सिद्धान्तहीन व्यक्ति हैं, जिनका विश्वास नहीं किया जा सकता कि वे मज़दूर-दल का बराबर साथ देते रहेंगे। यहाँ तक कि स्वयं मज़दूर-दल में भी विभिन्न मत के लोग मौजूद हैं। अगर उसमें एक ओर कट्टर साम्राज्यवादी जे० एच० टॉमस हैं, तो दूसरी ओर घोर कम्यूनिस्ट मि० मैक्सटन हैं। रहे मि० मैकडॉनल्ड, इनसे यह विश्वास नहीं कि ये सदैव भारत के प्रति उचित नीति का ही पालन करेंगे। तमाम चतुर राजनीतिज्ञों की तरह उन्होंने अपने उन सब सिद्धान्तों को भुला दिया है, जिनसे उनकी परिस्थिति में कठिनाई उत्पन्न हो सकती है। राजनीतिज्ञ ज्यों-ज्यों उम्र में बढ़ता जाता है, त्यों-त्यों उसके उत्साह और सिद्धान्त में नरमी आने लगती है। एक बार शक्ति हाथ में आ जाने पर वे अब उससे पृथक होना नहीं चाहते। सारांश यह कि इङ्गलैण्ड की परिस्थिति इस देश के लिए आशाजनक नहीं है।

ब्रिटिश राजनीतिज्ञों के दिलों में भारत के स्वाधीनता-संग्राम वालों से कोई प्रेम नहीं पैदा हो गया, जिससे विवश होकर उन्होंने इस देश की राजनीतिक हालत पर फिर से विचार करने की बात स्वीकार कर ली है। उन्होंने इस देश और अपने देश की दशा पर विचार करके ही ऐसी स्वीकृति दी है। बहिष्कार के प्रभाव को पार्लामेण्ट ने स्वयं ही स्वीकार किया है। यह वही असर है, जिसके कारण मज़दूर-दल की बात और दलों ने मान ली है। बहिष्कार अब भी मौजूद है। यद्यपि अब उसने राजनीतिक अस्त्र के बदले आर्थिक रूप धारण कर लिया है। कोई भी सरकार, जैसा कि मि० बेन ने कहा था, तलवार के बल से किसी को किसी की वस्तु ख़रीदने के लिए बाध्य नहीं कर सकती। यद्यपि ब्रिटिश वस्त्र को छोड़ कर अन्य ब्रिटिश वस्तुओं पर के बहिष्कार को हटा लिया गया है, फिर भी सब से आवश्यक बहिष्कार तो बना ही हुआ है। इसके साथ ही साथ इस देश के मिल-मालिकों ने कॉङ्ग्रेस का साथ देकर उस बहिष्कार को और भी स्थायी और मज़बूत बना दिया है।

क्रुद्ध युवक

एक-दो महीने पहले इन बातों पर विचार करने की कोई आवश्यकता न पड़ती। क्योंकि देश तीव्र गति से अपने ध्येय की ओर बढ़ा चला जा रहा था। लेकिन अब वे सब बातें स्थगित कर दी गई हैं और एक नया ही रास्ता अख़्तियार किया गया है। इस सम्बन्ध में यह प्रश्न हो सकता है कि क्या गोलमेज़ की बातचीतों से ध्येय की प्राप्ति हो सकती है? स्वयं गाँधी जी ने स्वीकार किया है कि यह क्षणिक सन्धि है और वह तभी तक के लिए है, जब तक कुछ इस तरफ़ या उस तरफ़ निर्णय न हो जाय। निकट भविष्य में क्या होगा, यह एक प्रश्न है। काफ़ी संख्या में नवयुवकगण इस समझौते से नाराज़ हैं। लेकिन वे क्या करना चाहते हैं, यह नहीं मालूम।

प्रश्न यह है कि क्या ये युवक कोई रचनात्मक स्कीम बना सकते हैं? जहाँ तक मेरा ख़्याल है, उनके पास न तो कोई स्कीम है और न उसको कार्यान्वित करने की प्रबल प्रेरणा ही है। असन्तोष मात्र से कोई लाभ नहीं, जब तक उनके सामने ध्येय-प्राप्ति का कोई रचनात्मक उपाय न हो। यद्यपि कहने में कठोर मालूम होता है, परन्तु वास्तव में बात यह है कि कुछ समय बाद यह सब असन्तोष और विरोध दूर हो जायगा। थोड़े से नवयुवक गाँधी जी तथा अन्य नेताओं की संयुक्त शक्ति को नहीं हटा सकते। एक बात और है। देश में इस समय कोई ऐसा नेता नज़र नहीं आता, जो इन तमाम बिखरे हुए असन्तुष्टों को एक सूत्र में बाँध सके। यह कहना कठिन है कि ऐसा नेता अभी मिलेगा या नहीं, यद्यपि इसमें सन्देह नहीं कि परिस्थितियाँ नेता उत्पन्न कर देती हैं, लेकिन इस समय तो कोई नहीं दिखाई पड़ता। यद्यपि श्री० सुभाष बोस और पं० जवाहरलाल भी मौजूद हैं।

झूठे अभियोग

मज़दूर-दल अलग गाँधी जी पर अभियोग लगा रहा है। उस दल में यद्यपि नेता अवश्य हैं, परन्तु वे बातें अधिक करते हैं और काम कम, हालाँकि उस दल में काम की ही बड़ी आवश्यकता है। यह कह देना बहुत सरल है कि गाँधी जी पूँजीपतियों से मिल गए हैं। हो सकता है, गाँधी जी पूँजीपतियों से मिल गए हों, परन्तु उससे यह मतलब नहीं कि उन्होंने मज़दूरों को धोखा दिया है। साल भर के राष्ट्रीय आन्दोलन को इन पूँजीपतियों ने अपनी पूरी मदद से चलाया है। यूरोपीय मुल्कों तक में मज़दूर अपने ध्येय से अभी बहुत दूर हैं। रूस को छोड़ कर हर जगह मज़दूर अब भी पूँजीपतियों के अधीन ही हैं। हड़तालों से विशेष लाभ नहीं होता। सब प्रकार के सङ्गठन, ट्रेड यूनियन, कोष और मज़दूरों के हित के लिए बनाए गए क़ानूनों के

रहते हुए भी यूरोप के मज़दूर पूँजीपतियों के विरुद्ध बहुत अधिक विजय प्राप्त नहीं कर सके हैं, फिर इस देश में, जहाँ मज़दूर और पूँजीपति दोनों ही अभी विदेशी शासन के आधिपत्य में हैं, आपस ही में लड़ना कहाँ तक उचित होगा? किसानों और मज़दूरों को कोई अधिकार-वञ्चित नहीं करना चाहता। निस्सन्देह वे अनेक ऐसी बातों से अलग रक्खे गए हैं, जिनसे उनका घोर सम्बन्ध है और जिन पर उनका अधिकार होना चाहिए। लेकिन बात यह है कि जब तक विदेशी शासन के पञ्जे से लोग बाहर नहीं हो लेते, तब तक वे वस्तुएँ और वे अधिकार उन्हें नहीं मिल सकते। जब तक यह विदेशी जुआ उतार कर नहीं फेंका जाता, तब तक न मज़दूर रक्षित हैं, न पूँजीपति। तब तक न किसी को अपना न्यायोचित भोग ही मिल सकता है और न अपने ध्येय की प्राप्ति ही हो सकती है। मज़दूर नेताओं को चाहिए कि मज़दूरों की शक्ति का इधर-उधर अपव्यय न करके उनका दृढ़ सङ्गठन करें।

काँङ्ग्रेस का समर्थन करो

इस समय सब से अच्छा उपाय यही है कि रचनात्मक कार्य करते हुए भविष्य की प्रतीक्षा की जाय, जैसा कि काँङ्ग्रेस कर रही है। वास्तव में काँङ्ग्रेस ने तो बहुत समय पहले से लोगों को रचनात्मक कार्य के लिए आदेश दे रक्खा था, परन्तु लोगों ने उसका पालन बहुत कम किया था। यहाँ तक कि खादी का काम भी बहुत पिछड़ा हुआ था। परन्तु एक ही साल के आन्दोलन ने इस कार्य को बहुत आगे बढ़ा दिया। जो कुछ साल भर में हुआ है, उतना कई सालों में भी नहीं हुआ था। बारडोली के बाद देश सो गया था, लेकिन पिछले साल के अप्रैल मास से धीरे-धीरे उठ कर वह दानव-रूप होकर आगे बढ़ा। जो बात देश एक बार कर चुका है, वह दूसरी बार भी कर सकता है। देश ने प्रतिज्ञा कर ली है। गाँधी जी ने समझौते का पालन करने का सङ्कल्प कर लिया है। देश का परम कर्तव्य है कि वह शक्ति भर उनकी सहायता करे। अगर इसके अतिरिक्त कोई और मार्ग होता, तो देश ने स्वीकार कर लिया होता, लेकिन देश के सामने दूसरा कोई रास्ता नहीं है। जो अपने ध्येय तक पहुँचने के लिए अधीर हों, उन्हें अपने को क़ाबू में रखना चाहिए। हम लोगों को काँङ्ग्रेस की आज्ञा पालन करनी चाहिए। काँङ्ग्रेस देश की सामूहिक तथा उसकी उच्च से उच्च बुद्धि की प्रतिनिधि है। जो काँङ्ग्रेसमैन हैं या जो काँङ्ग्रेसमैन न होते हुए भी आन्दोलन के अनुगामी हैं, जिनकी संख्या बड़ी है, उन सबका कर्तव्य है कि वे काँङ्ग्रेस की आज्ञा पूर्ण रूप से मानते चलें। सम्भव है, गोलमेज़ से कोई परिणाम न निकले या कम से कम ऐसा परिणाम न निकले, जिसको हम लोग चाहते हैं। परन्तु सफलता के लिए हमें संयुक्त रहना आवश्यक है। हमें अपने ध्येय को सामने रखते हुए बराबर काँङ्ग्रेस का साथ देना चाहिए। अगर हम ऐसा न कर सकें तो कम से कम ऐसा भी कुछ वचन या कार्य से न करें, जिससे काँङ्ग्रेस की शक्ति में धक्का लगता हो। हमें गाँधी जी की शक्ति को बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए। अगर गाँधी जी विफल हुए तो विफलता राष्ट्र की होगी। तब राष्ट्र का कर्तव्य होगा कि पूरी शक्ति के साथ वह अपने ध्येय की ओर फिर से बढ़े। इस बीच में हमें व्यर्थ वाद-विवाद की अपेक्षा उतना तो अवश्य ही करना चाहिए, जितना करने के लिए हमें काँङ्ग्रेस की तरफ़ से आज्ञा हुई है।

* * *

स्वदेश के लिए !

[१६वें पृष्ठ का शेषांश]

८

राजद्रोही अपराधियों के विचार के लिए जेल की चहारदीवारी के भीतर ही न्यायालय था।

उस दिन न्याय का नाटक आरम्भ हुआ। विचाराधीश के पद पर प्रिन्स रूडोविच विराजमान थे।

बन्दिनी फ़्लोरा लाई गई।

विचारक ने पूछा—तुम्हारा नाम ?

"फ़्लोराइना।"

"कहाँ रहती हो ?"

"मेडलिन स्ट्रीट में।"

"तुम्हारे ऊपर जो अभियोग है, उसे जानती हो ?"

"क्या ?"

"ड्रोवेस्की को पहिचानती हो ?"

"हाँ।"

"वह कहाँ है ?"

"मालूम नहीं।"

"उस दिन वह तुम्हारे घर गया था ?"

"हाँ"

"वह निहिलिस्ट है, यह भी जानती हो ?"

"नहीं।"

"झूठ कहती हो—अवश्य जानती होगी !"

"........"

"गुप्त समिति की बैठक कहाँ होती है—बताओ ?"

"मुझे नहीं मालूम।"

"बदमाश—तेरा भी उनसे संसर्ग जान पड़ता है—तुझे भी दण्ड मिलना चाहिए !"

"मैं निर्दोष हूँ।"

"एक राजद्रोही को तुमने अपने यहाँ आश्रय दिया, यह अपराध क्या कम है ?"

"अन्यायी शासक की आज्ञा का और उसके राज-नियमों का उल्लङ्घन करना प्रत्येक देश-भक्त का कर्त्तव्य है।"

"ड्रोवेस्की का पता बतला देने पर तुम छोड़ दी जा सकती हो।"

"प्राण रहते मैं ऐसा पाप न करूँगी।"

"एक बार सोचो मिस ! अभी तुम बिल्कुल नादान हो, मुझे तुम्हारी अवस्था पर दया आती है।"

"प्रिन्स ! तुम्हारी उस दया से मृत्यु की यातना अधिक श्रेयस्कर है।"

"समय देता हूँ—क्या तुमको जीवन का बिल्कुल मोह नहीं है ?"

"देशद्रोही बन कर जीने की अपेक्षा देश के लिए प्राण दे देना सौ गुना अच्छा है।"

"हठीली लड़की ! जा अपने कर्मों का फल भोग—प्राणदण्ड—२७ जुलाई को।"

"धन्यवाद !"

"ले जाओ इसे।"

सिपाहियों ने फ़्लोराइना को ले जाकर जेल की एक अँधेरी बदबूदार कोठरी में बन्द कर दिया। उस दिन २२ तारीख़ थी—अभी पाँच दिन शेष थे !

फ़्लोराइना ने एक ठण्डी साँस ली—क्या ड्रोवेस्की से अन्तिम भेंट न हो सकेगी ?

९

वही भयानक तारीख़ थी।

शाम के पाँच बजे होंगे।

एक खम्भे के चारों ओर लकड़ियों का ऊँचा ढेर लगा हुआ था। उसी ढेर पर हाथ-पैर बँधी हुई फ़्लोराइना खड़ी थी। दो जल्लाद उसके शरीर को मोटी ज़ञ्जीरों से खम्भे से बाँध रहे थे।

चारों ओर सशस्त्र सैनिकों का पहरा था, प्रिन्स रूडोविच राज-अधिकारियों सहित इस अमानुषिक कृत्य को देखने के लिए सपरिवार पधारे थे। सामने एक ऊँचे चबूतरे पर उनके बैठने का स्थान था।

जनता के लोगों को उस स्थान पर आने की मनाही थी। जेल के फाटक पर उनका एक समुद्र-सा उमड़ता चला आ रहा था। अधिकारियों ने आत्म-रक्षा का समुचित प्रबन्ध किया था—डर कर ! केवल उस निर्दोष बालिका से ! उस छोटे से शरीर को नष्ट कर देने के लिए इतनी सतर्कता !

प्रिन्स ने अन्तिम बार पूछा—फ़्लोराइना ! अब भी निहिलिस्ट-दल का पता बतला दो—छूट सकती हो।

बालिका ने घृणा से अपना मुँह दूसरी ओर फेर लिया।

आज्ञा पाकर लकड़ियों के ढेर में आग लगा दी गई !

फ़्लोरा हँस रही थी।

स्वदेश-वन्दना का गीत उसके मुँह से धीरे-धीरे निकल रहा था !

ऐसी दृढ़ता किसी ने न देखी थी !

इतने में राजकर्मचारियों में से एक युवक चुपचाप आगे बढ़ कर उधर ही लपका, जिधर चिता जल रही थी। किसी ने उसे न देखा।

उसने प्रिन्स के सामने जाकर ज़ोर से पुकारा—ईवान ड्रोवेस्की को मैं पकड़ लाया हूँ—मुझे इनाम मिलना चाहिए !

सबका ध्यान उसकी ओर आकर्षित हो गया।

प्रिन्स ने पूछा—कहाँ है ?

"पकड़ोगे ?"

"हाँ।"

"तो पकड़ लो—ड्रोवेस्की जीता-जागता तुम्हारे सामने है।"

सिपाही दौड़े, किन्तु इसके पहले ही ड्रोवेस्की के हाथ के पिस्तौल से निकली हुई चार गोलियों ने प्रिन्स रूडोविच की खोपड़ी को जर्जर कर दिया था ! प्रिन्स का मृत शरीर गिर पड़ा। सब लोग देखते रह गए !

"क्रान्ति चिरजीवी हो"—ड्रोवेस्की ने कहा—जनता चिल्ला उठी—"क्रान्ति चिरजीवी हो।"

जेल का फाटक टूट चुका था ! ड्रोवेस्की दौड़ कर फ़्लोरा के पास पहुँचा।

"प्रिये !"

"प्रियतम !"

आग की लपटें ऊँची हो रही थीं, दोनों अन्तिम बार मिल गए।

राजसैनिकों की बन्दूक़ों ने एक बार गरज कर उन दोनों प्रेमियों का गोलियों से स्वागत किया !

ड्रोवेस्की और फ़्लोराइना दोनों मृत्यु की गोद में सो गए !

केवल—"स्वदेश के लिए !"

जनता ने इस बलिदान को आँखें फाड़-फाड़ कर देखा और देखा राजसत्ता ने, जिसकी नींव को इन दो प्राणियों के रक्त ने हिला दिया था !

सुना जाता है कि प्रजातन्त्र की स्थापना होने पर इन दोनों शहीदों का एक दिव्य स्मारक मास्को नगर में निर्माण किया गया है, जिस पर लिखा है—"स्वदेश के लिए !"

* * *

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

अङ्क—२ ; दृश्य ३ का शेषांश

(संसारीनाथ सामने टहलता है, फिर भी ऐन मौक़ों पर अपना मुँह छिपा लेता है।)

साहित्यानन्द—(घबड़ा कर) एँ ! कुत्ता ? कहाँ ? कहाँ ? मूर्ख कहीं का, यहाँ कुत्ता कहाँ है बे ?

टेसू—यही तो मुझे भी अब ताज्जुब है। मगर तब यह भूँकने की आवाज़ कहाँ से आ रही थी ? मैंने इस कान से अच्छी तरह से सुना था।

साहित्यानन्द—ओहो ! वह कान—उहुँक—कर्ण तो तेरा प्रथम ही से भ्रष्ट है, तभी।

टेसू—तो क्या आप ही कुत्ते की बोली बोल रहे थे ?

साहित्यानन्द—(चिढ़ कर) कुत्ते की बोली नहीं बे। तनिक उच्च स्वर से स्वरचित कविता पाठ कर रहा था। जिसको सुनने के लिए उच्च अट्टालिकाओं पर न जाने कितनी ही साहित्यिक रमणियाँ लालायित होंगी।

टेसू—वह कविता थी ? राम ! राम !

साहित्यानन्द—हाँ-हाँ, कविता थी ? हम-ऐसे उच्च कवि-श्रेष्ठों की ऐसी ही कविता होती है।

टेसू—कैसी ?

साहित्यानन्द—देख ऐसी। फिर से सुन ले—

मत्त तरङ्गिणि !
वृत्तहीन-दिक्काल-विक्रीड़ित
तरलित तुङ्ग-तमाल-विचुम्बित
नभ-वन शिखर विहारिणि
कब आओगी ?

टेसू—(अलग) वाह ! वाह ! भौं भौं भौं भौं कब आओगी ? (प्रकट) इसके क्या मतलब ?

साहित्यानन्द—मतलब ? आहाहाहा ! अरे मूर्ख, मतलब भी उहुँक-अर्थ भी भला हम सरीखे कवि-सम्राटों की कविता का कहीं समझ में आ सकता है ? वह कविता ही क्या, जिसका अर्थ समझ में आ जाए ? यदि कविता सभी की समझ में आ जाए, तब उसके अर्थ-गौरव का महत्व क्या रह जायगा ? इसको केवल साहित्यिक व्यक्तिगण समझते हैं।

टेसू—यह बात है ? अच्छा, तो आपकी इस कविता का मतलब वह क्या समझेंगे ?

साहित्यानन्द—समझेंगे नहीं बे ! समझेंगी कह। जिनको समझना है वह बड़ी विदुषी और बड़ी पण्डिता हैं। अपने लेखों में तीन-तीन सतर के एक-एक शब्द प्रयोग करती हैं। वह बड़ी देर से दूरबीन लिए मेरी प्रतीक्षा कर रही होंगी। तभी तो मैंने कहा है, हे नभ-वन-शिखर विहारिणी अर्थात् अपनी उच्च अट्टालिका पर विहार करने वाली और अट्टालिका भी (ज़ोर से राग में पढ़ता हुआ)—

वृत्तहीन दिक्काल-विक्रीड़ित
तरलित तुङ्ग-तमाल-विचुम्बित—

टेसू—(राग मिला कर) चना जोर गरम.........

साहित्यानन्द—यह क्या ?

टेसू—मैं समझा इसके बाद आप यही कहेंगे।

साहित्यानन्द—(बहुत बिगड़ कर मारने को झपटता हुआ) ठहर तो बदमाश ! तेरी ऐसी-तैसी करूँ !

(टेसू भाग कर संसारीनाथ के पीछे छिपता है और उसको ढकेल कर अच्छी तौर से साहित्यानन्द के सामने कर देता है। अब साहित्यानन्द संसारीनाथ को सर से पैर तक देखता है और उसके मत्थे पर हरा टीका देख कर एकाएक सटपटा जाता है। संसारीनाथ लापरवाही से वहाँ से हट कर फिर टहलने लगता है)

साहित्यानन्द—अयँ ? यह भी हरा टीका लगाए हुए है।

टेसू—(पास आकर) क्या आप मुझे मारना भूल गए ?

साहित्यानन्द—चुप रह, सब गड़बड़ हो गया। अरे ! टेसू।

टेसू—कहिए-कहिए, मैं तो यहीं हूँ।

साहित्यानन्द—वह भी हरा टीका लगाए हुए है।

टेसू—जी हाँ। और आप से अच्छा।

साहित्यानन्द—(संसारीनाथ की ओर घूम-घूम कर देखता हुआ) यह तो वही पाजी संसारीनाथ है।

टेसू—और घण्टों से वह यहीं चक्कर लगा रहे हैं।

साहित्यानन्द—क्या कहा, घण्टों से ? हाय ! तब तो सब चौपटाध्याय हो गया, अब क्या करूँ ?

टेसू—क्या हुआ क्या ?

साहित्यानन्द—(अपनी धुन में) और यहाँ टहल—उहुँक—भ्रमण किस प्रकार कर रहा है, मानो मुझे जानता ही नहीं। ऐसी धृष्टता, ऐसी उद्दण्डता, ऐसी दुष्टता ?

टेसू—किस पर आप इतना बिगड़ रहे हैं ?

साहित्यानन्द—(अपनी धुन में) और उस पर हरा टीका लगा कर आया है। इस दुष्ट को हरा टीका लगा कर यहाँ आने की क्या आवश्यकता थी ?

टेसू—तो उन्हें आप बुला कर पूछते क्यों नहीं ?

साहित्यानन्द—आह ! उससे बोलना तो और भी अपने को अपमानित करना है। क्या करूँ, कहीं वह धोखा न खा जाएँ ?

टेसू—कौन ?

साहित्यानन्द—कुछ नहीं।

(जदुनाथ और रमाकान्त का भेष बदल कर आना)

जदुनाथ—(बुड्ढे के रूप में संसारीनाथ को घूर कर देखता हुआ) अल्ला आप ही हैं।

रमाकान्त—(गँवार के रूप में) हाँ सरकार, (संसारीनाथ को बता कर) यही होयँ। जस तिलोत्तमा रानी बताइन हैं वइसे देखो यह हरियर टीका लगाए है।

साहित्यानन्द—(ताज्जुब में, अलग) यह क्या ? तिलोत्तमा रानी। हरियर टीका ?

जदुनाथ—(चश्मा लगा कर, ग़ौर से देखता हुआ) हाँ-हाँ, आप ही हैं। मैं तिलोत्तमा का पिता हूँ।

रमाकान्त—अउर हम सरकार के नौकर इन।

साहित्यानन्द—(अलग) तिलोत्तमा के पिता और नौकर ? इन लोगों को उस पाजी संसारीनाथ से क्या प्रयोजन ?

टेसू—(साहित्यानन्द से) वह लोग आप ही को समझ कर उनसे बोल रहे हैं। आपने देखा नहीं, इन लोगों ने टीका ही देख कर उन्हें पहचाना है ? सुनिए, सुनिए, उनकी बातें तो सुनिए !

(जदुनाथ और संसारीनाथ कभी चुपके-चुपके, कभी ज़ोर से बातचीत करते हैं और साहित्यानन्द और टेसू छिप कर इन लोगों की बातचीत सुनने की कोशिश करते हैं।)

जदुनाथ—(ज़ोर से) जी हाँ, मुझे तो आपके दर्शनों की तभी से लालसा थी, जब से आपने उसके लेखों को प्रकाशित कर साहित्य में उसका उत्साह बढ़ाया।

(संसारीनाथ चुपके-चुपके उत्तर देता है।)

साहित्यानन्द—(अलग) हाय ! हाय ! यह तो सचमुच मेरा भ्रम उस पाजी पर कर रहे हैं।

जदुनाथ—तिलोत्तमा ने शायद आपका चित्र किसी पत्र या पत्रिका में देखा होगा। तभी तो उसने कोठे पर से देखते ही आपको पहचान लिया। और जल्दी से आकर मुझे बताया कि वह देखिए, सम्पादक जी हरा टीका लगाए पार्क में टहल रहे हैं। बस वैसे ही आपकी सेवा में लपका।

साहित्यानन्द—(अलग) अररररर ! तिलोत्तमा को भी इसी मूर्ख पर मेरा भ्रम हुआ। हाय ! हाय ! बड़ा अनर्थ हो गया।

टेसू—आपका टीका दिखाई न पड़ा होगा। कैसे दिखाई पड़े ? एक तो बेचारे बुड्ढे आदमी, दूसरे ऐनक लगाए हुए।

साहित्यानन्द—(घबड़ा कर) हाय ! क्या करूँ ? इस भ्रम को कैसे मिटाऊँ ?

टेसू—मैं बताऊँ, आप एक के बदले दो तीन टीका लगा लीजिए, जिसमें कोई न कोई तो उन्हें दिखाई पड़ जाए।

साहित्यानन्द—हाँ-हाँ, यह युक्ति ठीक होगी।

(जल्दी से रङ्ग की डिब्बी निकाल कर अपनी पेशानी पर दो-चार टीका लगाता है और जदुनाथ और रमाकान्त की तरफ़ मुँह बढ़ा-बढ़ा कर सामने करता है। मगर वह लोग ऐन मौक़ों पर दूसरी ओर मुँह फेर लेते हैं। तब साहित्यानन्द दूसरी तरफ़ जाता है। मगर उधर भी यही हाल होता है।)

रमाकान्त—अब सरकार घर न चला जाय। तिलोत्तमा रानी जलपान के लिए आसरा देखत हुइहैं।

जदुनाथ—हाँ-हाँ। (संसारीनाथ से) आइए, अपनी चरण-धूलि से मेरी कुटी को पवित्र कीजिए। पास ही है।

साहित्यानन्द—(अलग) हाय ! हाय ! यह पाजी अब मेरा ही सब आनन्द लूटने जा रहा है। क्या करूँ ? यह अनर्थ अब नहीं देखा जाता।

टेसू—घबड़ाने से काम न चलेगा। जल्दी से आप और टीके लगा लीजिए। अभी उन्हें दिखाई नहीं पड़ा।

साहित्यानन्द—अच्छा ! अच्छा ! मेरी तो बुद्धि इस समय कुछ काम नहीं करती, ले मैं अपने मुख भर में टीका ही टीका लगाए लेता हूँ। अब तो इन अन्धों को दिखाई पड़ेगा।

(जदुनाथ, रमाकान्त और संसारीनाथ एक तरफ़ जाने लगते हैं। साहित्यानन्द अपने चेहरे भर में बीसों टीका लगाए पागलों की भाँति दौड़ कर उन लोगों के सामने जाता है। वैसे ही वे लोग उधर से पलट कर दूसरी ओर हो जाते हैं। साहित्यानन्द दौड़ कर उधर जाता है। उधर भी यही हाल होता है। इसी बीच में टेसू के इशारे पर कुछ लड़के आ पड़ते हैं और साहित्यानन्द को देख-देख कर हँसते हैं, और उसे आगे जाने नहीं देते हैं। जदुनाथ वग़ैरह चल देते हैं।)

साहित्यानन्द—हाय ! हाय ! वह लोग चले गए ! अरे दुष्टो ! अरे पाजियो मेरा मार्ग छोड़ो। आह !

(साहित्यानन्द झौंखला कर दूसरी ओर भाग जाता है और लड़के उसके पीछे ताली पीटते और लू-लू करते जाते हैं।)

पट-परिवर्तन

(क्रमशः)

* * *

गाँधी जी से मिलने के पहले ब्रिटेन को तैयार हो जाना चाहिए

सैनिक व्यय कम करने के लिए ; भारतीय ऋण की जाँच करने के लिए ; आर्थिक नीति का समर्पण कर देने के लिए और देशी राज्यों की प्रजा के अधिकार संरक्षित करने के लिए !

मि० ब्रेल्सफ़र्ड की चेतावनी

कराची कॉङ्ग्रेस ने महात्मा गाँधी को लन्दन के गोलमेज़ सम्मेलन में शामिल होने का अपना आदेश-पत्र दे दिया है। इसके द्वारा उन्हें गोलमेज़ सम्मेलन की सम्पूर्ण कारंवाई में अपने इच्छानुकूल निर्णय देने का अधिकार मिल गया है। उनके साथ आने वाले दूसरे प्रतिनिधि केवल सहायक और सलाहकार के रूप में रहेंगे। लन्दन के विचित्र रङ्गमञ्च पर इस अनोखी मौलिक मूर्ति के प्रवेश करते ही सम्पूर्ण सभ्य संसार की दृष्टि उस ओर खिंच जायगी। एक बार सारा संसार दर्शक बना हुआ, शासक जाति की तलवार के साथ रक्तपात-रहित विप्लव का द्वन्द युद्ध देखेगा।

कराची कॉङ्ग्रेस के पास किए हुए प्रस्ताव सहज ही समझ में आ सकते हैं। पूर्ण स्वाधीनता वाले ध्येय को दुहराने के साथ ही साथ कॉङ्ग्रेस ने अपने प्रतिनिधि महात्मा जी को गोलमेज़ सम्मेलन से अधिक से अधिक स्वाधीनता ले आने की आज्ञा दी है। इतना तो सभी समझ सकते हैं कि वे, अब तक जो कुछ गोलमेज़ में मिल चुका है उससे अधिक ही लेने के लिए लन्दन आएँगे। संरक्षणों का कुछ न कुछ अंश अवश्य ही निकाल देना पड़ेगा और जो कुछ रहेगा भी, वह हिन्दुस्तान की स्वीकृति से ही रह सकेगा।

ठोस वस्तु

गोलमेज़ सम्मेलन की बातचीतों में ग़लतफ़हमियों के पैदा हो जाने का डर है, अगर अभी से ही हम उस पुरुष के विषय में, जिसके साथ हमें बातें करनी हैं, पूरी जानकारी न प्राप्त कर लें। वे अत्यन्त रहस्यमय प्रकृति के होते हुए भी बिल्कुल ठोस ढङ्ग से सोचने-विचारने वाले व्यक्ति हैं। वे कोई शासन-विधान के विशेषज्ञ नहीं हैं। वे एक उघारे बदन रहने वाले मनुष्य हैं। आडम्बरहीन एक साधारण कोठरी उनका निवास-स्थान है, और शुष्क द्राक्ष तथा बकरी का दूध उनका भोजन है। उनकी आँखें सदैव आसपास के भूखे तथा पीड़ित किसानों की ओर लगी रहती हैं। उनकी ग़रीबी दूर करने के उपाय हम लोगों के विचारों से चाहे जितने ही भिन्न क्यों न हों, परन्तु उन्हें समझ लेने से कम से कम हमें उस पुरुष की विचार-धारा का पता लग जाता है।

वे गोलमेज़ में किसी प्रकार के शाब्दिक उलझन में पड़ने नहीं आएँगे। वे कुछ निश्चित, ठोस बातें चाहते हैं, जिनको वे अपने सरल परन्तु ज़ोरदार शब्दों में पहले ही प्रकट कर चुके हैं। आप सैनिक व्यय, सरकारी वेतन तथा भूमि-कर के आधा कर देने की माँग पेश कर चुके हैं। भारत का एक साधारण ग्रामीण तक इन शर्तों को जानता है, वह इन शर्तों के शब्दों में ही बातें करता है। यह लिखते समय मेरे सामने वह दृश्य उपस्थित हो जाता है, जबकि एक विशालकाय शिक्षित सिक्ख किसान ने मुझे उन शर्तों का मर्म समझाया था। सेना और अर्थ पर भारतीयों के नियन्त्रण की चर्चा करते समय मि० गाँधी उस विषय को अधिकारों और संरक्षणों की दृष्टि से विचार नहीं करेंगे, वे सेना के बचे हुए व्यय को किसानों के लिए उतना मन अधिक ग़ल्ला समझ कर उस पर विचार करेंगे। कारण कि किसानों के लिए दिन में एक बार भी भरपेट भोजन मिल जाना सौभाग्य की बात है। सम्भवतः विवाद का विषय यह न होगा, कि सैनिक व्यय के लिए एक निश्चित रक़म भारत की आय में से अलग कर दी जाय या नहीं।

सैनिक व्यय का भार

मुख्य प्रश्न यह होगा कि सैनिक व्यय कितना कम से कम किया जा सकता है। यदि गोलमेज़ में भारत सन्तुष्ट हो गया तो निस्सन्देह सैनिक व्यय में बहुत बड़ी कमी हो जायगी। तब सोमा प्रान्त की जङ्गली जातियों का दृष्टिकोण भारत के प्रति वही न रहेगा, जो कि आज विदेशी शासकों के प्रति है। अभी ज़्यादा दिन नहीं हुए, जब कि अफ़्रीदियों ने अपनी सन्धि की शर्तों में पहली शर्त गाँधी के छुटकारे की रक्खी थी। लोकमत का प्रभाव भारत में बहुत ही दृढ़ है। यह ठोक है कि अभी तक उसका उपयोग शासन के कार्यों में नहीं किया गया। परन्तु स्वराज्य के अधिकार मिल जाने पर अवश्य ही उसका उपयोग किया जायगा।

गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के आगामी अधिवेशन के लिए सबसे उत्तम और पहली तैयारी यह हो सकती है, कि यहाँ के लोग भारत के सैनिक व्यय के कम करने तथा सेना के शीघ्र से शीघ्र भारतीयकरण के उपाय सोच डालें। लेकिन इस बात के सोचने में हमें, भारतीय सेना के साम्राज्य सम्बन्धी महत्व को न भूल जाना चाहिए। पूर्वीय देशों में ब्रिटिश साम्राज्य की जो नीति है, उसमें भारतीय सेना का महत्वपूर्ण स्थान है। इस बात को साइमन कमीशन ने भी अपनी रिपोर्ट में स्वीकार किया था। जहाँ तक पूर्वीय देशों की साम्राज्य-नीति का भारतीय सेना से सम्बन्ध है, वहाँ तक सेना साम्राज्य नीति के अधीन रहनी चाहिए। रूस की ओर सावधान रहना आवश्यक है। सैनिक विषयों पर विचार होने के साथ ही साथ भारतीय ऋण की समस्या भी हल हो जानी चाहिए। ऋण की समस्या बहुत विचारणीय है। उदाहरणार्थ क्या बर्मा जीतने का व्यय भी भारत के ऋण में जोड़ा जा सकता है?

व्यापारिक अधिकार

भारतीय समस्या मुख्य में आर्थिक है। सैनिक व्यय के बाद जो दूसरा जटिल विषय गोलमेज़ के सामने उपस्थित होगा, वह ब्रिटेन और भारत का व्यापारिक सम्बन्ध होगा। इस सम्बन्ध में पहली गोलमेज़ का निर्णय बहुत अनिश्चित और अस्पष्ट है। कॉङ्ग्रेस ने ब्रिटेन और भारत के व्यापारिक अधिकार की बराबरी का घोर विरोध किया है। भारतीय अपने उद्योग-धन्धों की रक्षा हर प्रकार से करेंगे, इसे स्वीकार कर लेने के लिए हमें तैयार हो जाना चाहिए। लङ्काशायर ने बङ्गाल के आश्चर्यजनक बुनाई के उद्योग को बिल्कुल नष्ट-भ्रष्ट कर दिया था। परन्तु अब भाग्य का चक्र फिर से भारत के अनुकूल हुआ है। हम भारत को उसे अपना जहाज़ी बेड़ा क़ायम करने में भी कोई रुकावट नहीं डाल सकते। अन्य उपनिवेशों की भाँति उसे भी अपना जहाज़ी बेड़ा रखने का अधिकार है।

जो हो, अब किसी न किसी प्रकार से भारत, ब्रिटिश जहाज़ी कम्पनियों, ब्रिटिश बैङ्कों तथा ब्रिटिश एलेक्ट्रिक कम्पनियों के व्यापारिक एकाधिकार को छीनने का प्रयत्न करेगा। यदि ब्रिटिश व्यापारियों की व्यापार-रक्षा के लिए कोई क़ानून बनाना आवश्यक समझा जाय तो अवसर पड़ने पर उस क़ानून पर विचार करने का अधिकार न्यायालयों के अधीन रहना चाहिए, किसी गवर्नर के अधीन नहीं! हमें अब पहले की तरह किसी विशेषाधिकार को कम से कम भारत के अर्थ-शोषण के काम में प्रयोग करने का साहस न करना चाहिए।

गोलमेज़ के अव्यवस्थित निर्णय

यहाँ तक राष्ट्रीय आन्दोलन का साथ दिया जा सकता है। इसमें सन्देह नहीं कि इतना हो जाने पर भो भारत में अन्य देशों की तरह भिन्न-भिन्न श्रेणियों का प्रतियोगिता-युद्ध चलता ही रहेगा। परन्तु भावी शासन-विधान का निर्माण करते समय हमें इस बात पर ध्यान रखना होगा कि तराज़ू के पलड़े जहाँ तक सम्भव हो, बराबरी पर रहें। जब हम इस दृष्टि से गोलमेज़ के अब तक के निर्णयों को देखते हैं, तो हमें पता चलता है कि देशी राज्यों के सम्बन्ध में ग़लती की गई है। सङ्घ-शासन-परिषद में देशी राज्यों के प्रतिनिधि जनता द्वारा निर्वाचित होकर न जायँगे, बल्कि नरेशों द्वारा नियुक्त किए जायँगे। ये प्रतिनिधि लोक-प्रतिनिधि न होकर नरेशों के प्रतिनिधि होंगे। इन प्रतिनिधियों तथा ब्रिटिश भारत के प्रतिनिधियों को मिलाने से सङ्घ-शासन-सभा में बहुमत पूँजीवादियों का ही रहेगा। ब्रिटिश भारत में केवल दस प्रति-शत जन-संख्या को वोट देने का अधिकार रहेगा। इसका परिणाम यह होगा कि प्रतिनिधियों का चुनाव प्रायः ज़मींदार, महाजन और वकीलों की श्रेणियों में से हुआ करेगा।

इस प्रकार की व्यवस्था से भारत का कोई हित न होगा। ग़रीबी बनी ही रहेगी। कारण कि भूमि-कर, नमक-कर, विदेशी जहाज़ों के बेड़े तथा व्यापारिक एकाधिकारों की अपेक्षा पूँजीपतियों के अत्याचार और बेगार, भारत की ग़रीबी के कहीं अधिक ज़बरदस्त कारण हैं। ग्रामीण कर देते हैं, परन्तु राज्य की तरफ़ से उसका लाभ, उन्हें बहुत कम मिलता है। केवल स्कूलों, सड़कों, अस्पतालों, नहरों और अकाल की सहायताओं के रूप में कुछ प्राप्त हो जाता है। परन्तु ज़मींदार से तो किसान कुछ भी नहीं पाता। ज़मींदार अपनी आमदनी का कोई भी हिस्सा किसान की या खेती की उन्नति में नहीं व्यय करता।

मतलब यह कि पहलो गोलमेज़ की कार्रवाइयों में देश के सब प्रकार के हितों की रक्षा का ध्यान नहीं किया गया। कहने के लिए तो यह सिद्धान्त ज़रूर स्थिर कर लिया गया था कि विधान में प्रत्येक अल्प जाति की हित-रक्षा का ध्यान रक्खा जायगा, परन्तु वास्तव में सिवा साधारण जनता के हित की रक्षा के और सबके हितों की रक्षा कर दी गई है। देशी राज्यों की प्रजा को कोई अधिकार हो नहीं दिया गया। वहाँ के प्रतिनिधि नरेशों के नियुक्त प्रतिनिधि हुआ करेंगे। आश्चर्य की बात तो यह है कि ऐसे अव्यवस्थित विधान की रचना मज़दूर-सरकार के शासन-काल में हो रही है।

* * *
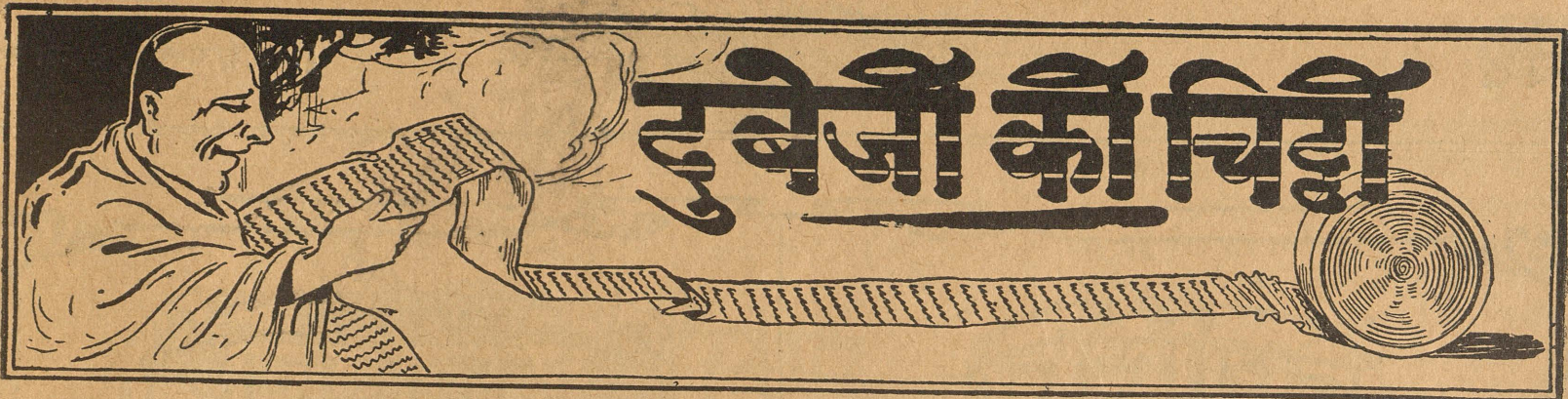
अजी सम्पादक जो महाराज,

जय राम जी की !

लङ्काशायर के मिल-स्वामी आजकल बेतरह परेशान हैं। भारतवर्ष के बॉयकॉट से बेचारों की नींद हराम हो गई है। अपने राम की समझ में यह बॉयकॉट बिल्कुल नियम-विरुद्ध है; क्योंकि कहावत है कि "पीठ की मार दे ले, परन्तु पेट की मार न दे।" इस कहावत के अनुसार यह बॉयकॉट सोलहो आने बेजा है। विशेषतः जब कि उपरोक्त कहावत एक हिन्दुस्तानी कहावत है। हिन्दुस्तानियों को अपनी कहावतों का अक्षरशः पालन करना चाहिए। यदि वह ऐसा नहीं करेंगे, तो उनकी कहावतों का कोई मूल्य नहीं रह जायगा। इसके अतिरिक्त इस समय लङ्काशायर का बॉयकॉट करना गुरुद्रोह के समान है। जिस लङ्काशायर ने भारत को ऐसे-ऐसे बढ़िया कपड़े पहनाए, जिस लङ्काशायर ने भारतवर्ष को कपड़ा बनाना सिखाया, जिस लङ्काशायर ने अपने हानि-लाभ का ख़्याल न करके, भारत के मिलों को कपड़े की मैशीनें सप्लाई कीं, उस लङ्काशायर से ऐसा व्यवहार ! इस कृतघ्नता का भी कोई ठिकाना है !! यदि विलायत वाले मैशीनों का आविष्कार न करते, तो भारत के मिलों की क्या दशा होती ? भारतवर्ष के हित के लिए लङ्काशायर ने क्या नहीं किया ? नई-नई मैशीनें बनाईं, रङ्ग-बिरङ्गे कपड़े बनाए, उतनी दूर से जहाज़ पर लाद कर भेजे और भगवान जाने कौन-कौन से काया-कष्ट सहे। बेचारे ने सब कुछ किया, कुछ भी उठा नहीं रक्खा। भला बताइए तो सही, विलायत में धोती जोड़े कौन पहनता है ? साड़ियों की खपत विलायत में कितनी है ? परन्तु फिर भी बेचारा लङ्काशायर ये चीज़ें पूर्ण निस्स्वार्थ भाव से केवल हिन्दुस्तान के लिए बनाता रहा। जो व्यक्ति स्वयम् मर-खप कर ऐसी वस्तु बनावे, जो उसके किसी काम की न हो, उस व्यक्ति को आप क्या कहेंगे ? अपने राम तो उस आदमी को दो ही उपाधि दे सकते हैं—या तो प्रथम श्रेणी का बेवक़ूफ़ या प्रथम श्रेणी का परोपकारी। कुछ लोग इस पर कह सकते हैं कि यह तो उसने अपने आर्थिक लाभ के लिए किया—यह तो व्यापार था; इसमें परोपकार की कौन सी बात है। ऐसे लोगों के लिए अपने राम का यह उत्तर है कि आर्थिक लाभ तथा व्यापार के सैकड़ों रास्ते हैं। यदि लङ्काशायर धोती जोड़े न बना कर पतलूनें बनाता, तो क्या उसे लाभ न होता ? जैसे हिन्दुस्तान धोतियाँ ख़रीदता रहा है, यदि उसी तरह अन्य देश लङ्काशायर की पतलूनें ख़रीदते तो अवश्य लाभ होता। अब यह बात ही दूसरी है कि कोई ख़रीदे ही नहीं। इसे बेचारा लङ्काशायर क्या करे ?

हिन्दुस्तान के बॉयकॉट के कारण लङ्काशायर को इतनी घबराहट क्यों है ? इसका कारण यह नहीं है कि वह कोई ऐसी चीज़ नहीं बना सकता जो दूसरे देशों में खप सके। वह अभी ऐसी-ऐसी चीज़ें बना सकता है कि अन्य देश वाले तुरन्त उसकी नक़ल कर लें; परन्तु बात केवल यह है कि उसे धोती जोड़े और छींट बनाने की आदत पड़ गई है। कहावत भी है कि अभ्यास क्रमशः स्वभाव हो जाता है। अतएव इतने दिनों का अभ्यास अवश्य स्वभाव बन गया होगा। इधर आदमियों का अभ्यास हुआ उधर मैशीनों के पुर्ज़े भी सदा एक चीज़ बनाते रहने के कारण इस करवट से घिसे कि अब उनमें कोई दूसरी चीज़ बन ही नहीं सकती। अब आप ही बताइए, ऐसी दशा में बेचारा लङ्काशायर क्या करे ? उधर मिल के कर्मचारी अन्य कोई वस्तु बनाना नहीं चाहते, इधर मैशीनें बना नहीं सकतीं। न कहिएगा, कितनी बड़ी मजबूरी है। भगवान ऐसी मजबूरी किसी बाल-बच्चे वाले पर न डाले। इसमें सारा अपराध हिन्दुस्तान का है। पहले तो उसने बेचारे से अपने मतलब की चीज़ें बनवा कर आदत ख़राब कर दी और अब जब कि वह अन्य किसी के काम की चीज़ बनाने के काम का न रहा तब अब बॉयकॉट कर रहे हैं। क्या भगवान इस अन्याय को न देखेगा ? लोग कहते हैं कि लङ्काशायर का व्यापार सुदृढ़ बनाने के लिए हिन्दुस्तान का उद्योग-धन्धा नष्ट किया गया। यह भी बिल्कुल नासमझी की बात है। जिसे हिन्दुस्तानी उद्योग-धन्धा नष्ट होना बताते हैं वह न नष्ट था न भ्रष्ट। वह तो हिन्दुस्तान को आराम पहुँचाने की बात थी। यदि हिन्दुस्तानियों के हाथ से काम छुड़ा कर अङ्गरेज़ स्वयम् वह काम करने लगें तो आराम किसे मिला ? अङ्गरेज़ लोग उन राजाओं में नहीं हैं जो स्वयम् तो मख़मली गद्दों पर लोटा करें और प्रजा मेहनत-मज़दूरी करे। अङ्गरेज़ स्वयम् मेहनत-मज़दूरी करते हैं और अपनी प्रजा को आराम पहुँचाते हैं। हिन्दुस्तानियों में बुद्धि तो है ही नहीं, जो इन बारीक बातों को समझ सकें। जब से महात्मा जी ने खद्दर तथा चर्ख़े का प्रचार किया, तब से हिन्दुस्तानियों को कितना कष्ट हो रहा है। रुई इकट्ठी करो, उसे धुनको, फिर कातो, तत्पश्चात बुनो तब कहीं कपड़ा पहनना नसीब हो; और वह भी ऐसा कि बदन छिल जाय। पहले यह दिक़्क़त कहाँ थी ? आराम से बाज़ार गए, खट से रुपए फेंके, चट से कपड़ा ले आए, झट सिलवाया और फट पहन लिया। न चर्ख़े से मतलब था न धुनकी से। रही यह बात कि रुपए अधिक देने पड़ते थे और रुपया सब विदेश चला जाता था। सो जनाब, रुपए अधिक देने की बात तो यह है कि या तो आराम ही उठा लिया जाय या रुपया ही बचा लिया जाय—दोनों काम साथ-साथ नहीं हो सकते। लोग नौकर क्यों रखते हैं ? आराम ही के लिए न ! यदि अपने हाथ से काम कर लिया जाय तो नौकर की तनख़्वाह का रुपया बचे या नहीं ? तो क्या वे लोग बेवक़ूफ़ हैं जो रुपए ख़र्च करके नौकर रखते हैं ? दूसरी बात रुपया विदेश जाने की है—सो चला जाय, हमारी बला से। उसके बदले में आराम तो मिलता है और बढ़िया-बढ़िया डिज़ाइनों के दर्शन तो होते हैं। और रुपया तो निमित्त मात्र है—असली चीज़ तो अन्न-वस्त्र है। सो अन्न भी भूमि से उत्पन्न होता है और कपास भी। सो जनाब, अङ्गरेज़ कुछ भूमि तो उठा नहीं ले जा सकते। भूमि तो रहेगी ही और जब भूमि रहेगी तो अन्न-वस्त्र भी मिलता ही रहेगा—रुपया चाहे रहे चाहे भाड़ में जाय। बल्कि रुपया जितना कम रहे उतना अच्छा—चोर-डाकुओं का भय न रहेगा। सम्पादक जी, ये बातें सर्वसाधारण नहीं समझ सकते। यह बात अर्थ-शास्त्री ही समझ सकते हैं। और अर्थ-शास्त्री भी कैसे ? अपने राम जैसे, जो अर्थ-शास्त्र को कोई चीज़ ही नहीं समझते। ऐसी दशा में यदि लङ्काशायर वाले यह कहते हैं कि हिन्दुस्तानियों को कपड़ा ख़रीदने के लिए मजबूर किया जाय, तो क्या बेजा कहते हैं ? कुछ लोगों का कहना है कि अङ्गरेज़ों की समस्त फ़ौजें भी हिन्दुस्तानियों को लङ्काशायर का कपड़ा ख़रीदने के लिए मजबूर नहीं कर सकतीं। अपने राम को यह बात फूटी आँखों भी नहीं सुझाई देती। क्यों नहीं मजबूर कर सकतीं ? आख़िर लोग जेल क्या अपनी ख़ुशी से चले जाते हैं, फाँसी क्या अपनी इच्छा से लटक जाते हैं। सरकार ही तो उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर करती है। इसी प्रकार कपड़ा ख़रीदने के लिए भी मजबूर कर सकती है। अजी जनाब, सरकार बहादुर चाहे तो यह प्रबन्ध कर सकती है कि प्रत्येक महीने प्रत्येक घर में, उस घर की आवश्यकतानुसार कपड़े के थान पुलिस द्वारा पहुँचवा दिया करे और उनके घर से मूल्य के रुपए मँगवा लिया करे। लोग ख़ुशी से रुपए न दें तो पुलिस ज़बरदस्ती छीन लाया करे। यदि रुपए न मिलें तो मेज़, कुर्सी, बर्तन—जो कुछ मिले, ले आया करे। म्यूनिसिपैलिटी पुलिस का टैक्स वसूल करने में जब रुपए के बदले मेज़, कुर्सियाँ ली जा सकती हैं तो कपड़े के मूल्य के बदले में भी ये चीज़ें ली जा सकती हैं। लोग रुपए छिपा सकते हैं, ज़ेवर छिपा सकते हैं, परन्तु मेज़, कुर्सी इत्यादि नहीं छिपा सकते ! जिसके घर में कुछ भी न मिले, उसे सरकार जेल में भिजवा सकती है। जब यह दशा होगी तब लोग झख मारेंगे और लङ्काशायर का कपड़ा ख़रीदेंगे। और फ़िलहाल तो सब से सरल युक्ति यह है कि जब तक मर्दुमशुमारी के हिसाब से हिन्दुस्तान का प्रत्येक आदमी इस बात का वादा न कर ले कि वह प्रत्येक महीने में लङ्काशायर का कम से कम एक थान अवश्य ख़रीदेगा तब तक स्वराज्य दिया ही न जाय। वादा ख़ाली ज़बानी न हो—पक्की लिखा-पढ़ी करा ली जाय—हिन्दुओं से गङ्गामाई की और मुसलमानों से क़ुरान-मजीद की क़सम खिलवा ली जाय—तब स्वराज्य दिया जाय। यदि लङ्काशायर वाले यह युक्ति खेल जायँ तो देखिए उनका कपड़ा इस तरह बिकने लगे जैसे लावारिस का माल। सम्पादक जी, कृपा करके मेरी ओर से यह युक्ति लङ्काशायर वालों के कानों तक पहुँचा दीजिए। मुझे यह विश्वास है कि इसके बदले में वे मुझे रायबहादुर या दुबे बहादुर की उपाधि अवश्य देंगे, परन्तु अपने राम को किसी उपाधि की आवश्यकता नहीं है। अपने राम तो केवल परोपकार के लिए यह सब कर रहे हैं। अधिक से अधिक लङ्काशायर वाले इतनी कृपा करें कि अपने राम को कपड़ा ख़रीदने से मुस्तसना कर दें; क्योंकि यदि उन्होंने अपने राम के यहाँ कपड़े के थान भिजवा कर ज़बरदस्ती रुपया वसूल किया तो बड़ी थुक्काफ़ज़ीहती होगी। रुपया अपने राम के पास है नहीं—यदि तवा-कड़ाही ले गए तो लल्ला की महतारी घर में न बैठने देगी, इसलिए अपने राम पर कृपा रक्खें—बस अपने उपकार के बदले में अपने राम केवल इतना ही चाहते हैं।

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। मूल्य केवल ३) रु०

दाढ़ी वालों को भी प्यारी है बच्चों को भी,
बड़ी मासूम बड़ी नेक है लम्बी दाढ़ी।
अच्छी बातें भी बताती है, हँसाती भी है।
लाख दो लाख में बस एक है लम्बी दाढ़ी॥

ऊपर की चार पंक्तियों में ही पुस्तक का संक्षिप्त विवरण "गागर में सागर" की भाँति समा गया है। फिर पुस्तक कुछ नई नहीं है, अब तक इसके तीन संस्करण हो चुके हैं और ९,००० प्रतियाँ हाथों-हाथ बिक चुकी हैं। पुस्तक में तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर के अलावा पूरे एक दर्जन ऐसे सुन्दर चित्र दिए गए हैं कि एक बार देखते ही हँसते-हँसते पढ़ने वालों के बत्तीसों दाँत मुँह से बाहर निकलने का प्रयत्न करते हैं। मूल्य केवल २॥); स्थायी ग्राहकों से १॥॥=) मात्र!

बाल-रोग-विज्ञानम्

इस महत्वपूर्ण पुस्तक के लेखक पाठकों के सुपरिचित, 'विष-विज्ञान', 'उपयोगी चिकित्सा', 'स्त्री-रोग-विज्ञानम्' आदि-आदि अनेक पुस्तकों के रचयिता, स्वर्ण-पदक-प्राप्त प्रोफ़ेसर श्री० धर्मानन्द जी शास्त्री, आयुर्वेदाचार्य हैं, अतएव पुस्तक की उपयोगिता का अनुमान सहज ही में लगाया जा सकता है। आज भारतीय स्त्रियों में शिशु-पालन सम्बन्धी समुचित ज्ञान न होने के कारण सैकड़ों, हज़ारों और लाखों नहीं, किन्तु करोड़ों बच्चे प्रति वर्ष अकाल मृत्यु के कलेवर हो रहे हैं। इसमें बालक-बालिका सम्बन्धी प्रत्येक रोग, उनका उपचार तथा ऐसी सहज घरेलू दवाइयाँ बतलाई गई हैं, जो बहुत कम ख़र्च में प्राप्त हो सकती हैं। इसे एक बार पढ़ लेने से प्रत्येक माता को उसके समस्त कर्त्तव्य का ज्ञान सहज ही में हो सकता है और वे शिशु-सम्बन्धी प्रत्येक रोग को समझ कर उसका उपचार स्वयं कर सकती हैं। मूल्य २॥) रु०

दक्षिण अफ़्रिका के मेरे अनुभव

जिन प्रवासी भाइयों की करुण स्थिति देख कर महात्मा गाँधी; मि० सी० एफ़० एण्ड्रयूज़ और मिस्टर पोलक आदि बड़े-बड़े नेताओं ने ख़ून के आँसू बहाए हैं; उन्हीं भाइयों की सेवा में अपना जीवन व्यतीत करने वाले पं० भवानीदयाल जी ने अपना सारा अनुभव इस पुस्तक में चित्रित किया है। पुस्तक को पढ़ने से प्रवासी भाइयों की सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक स्थिति तथा वहाँ के गौराङ्ग प्रभुओं की स्वार्थपरता, अन्याय एवं अत्याचार का पूरा दृश्य देखने को मिलता है। एक बार अवश्य पढ़िए और अनुकम्पा के दो-चार आँसू बहाइए!! मूल्य २॥) रु०

चुहल

पुस्तक क्या है, मनोरञ्जन की अपूर्व सामग्री है। केवल एक चुटकुला पढ़ लीजिए, हँसते-हँसते पेट में बल पड़ जायँगे। काम की थकावट से जब कभी जी ऊब जाय, उस समय केवल पाँच मिनट के लिए इस पुस्तक को उठा लीजिए, सारी उदासीनता काफ़ूर हो जायगी। इसमें इसी प्रकार के उत्तमोत्तम हास्यरस-पूर्ण चुटकुलों का संग्रह किया गया है। कोई चुटकुला ऐसा नहीं है, जिसे पढ़ कर आपके दाँत बाहर न निकल आवें और आप खिलखिला कर हँस न पड़ें। भोजन के पश्चात् मनोरञ्जन के लिए ऐसी पुस्तकें पढ़ना स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त लाभदायक है। बच्चे-बूढ़े, स्त्री-पुरुष—सभी के काम की चीज़ है। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय। सजिल्द पुस्तक का मूल्य केवल लागत-मात्र १); स्थायी ग्राहकों से ॥|); केवल थोड़ी सी प्रतियाँ और शेष हैं, शीघ्रता कीजिए, नहीं तो दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

उपयोगी चिकित्सा

इस महत्वपूर्ण पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक सद्गृहस्थ के यहाँ होनी चाहिए। इसको एक बार आद्योपान्त पढ़ लेने से फिर आपको डॉक्टरों और वैद्यों की ख़ुशामदें न करनी पड़ेंगी—आपके घर के पास तक बीमारियाँ न फटक सकेंगी। इसमें रोगों की उत्पत्ति का कारण, उसकी पूरी व्याख्या, उनसे बचने के उपाय तथा इलाज दिए गए हैं। रोगी की परिचर्या किस प्रकार करनी चाहिए, इसकी भी पूरी व्याख्या आपको मिलेगी। इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपकी वे सारी मुसीबतें दूर हो जायँगी। भाषा अत्यन्त सरल। मूल्य १॥)

चित्तौड़ की चिता

पुस्तक का 'चित्तौड़' शब्द ही उसकी विशेषता बतला रहा है। क्या आप इस पवित्र वीर-भूमि की माताओं के महान साहस, उनका वीरत्व और आत्मबल भूल गए? सतीत्व-रक्षा के लिए उनका जलती हुई चिता में कूद पड़ना, आपने एकदम बिसार दिया? याद रखिए! इस पुस्तक को एक बार पढ़ते ही आपके बदन का ख़ून उबल उठेगा! पुस्तक पद्यमय है, उसका एक-एक शब्द साहस, वीरता, स्वार्थ-त्याग और देश-भक्ति से ओत-प्रोत है। मूल्य केवल लागत मात्र १।); स्थायी ग्राहकों से १=) रु०

☞ व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद
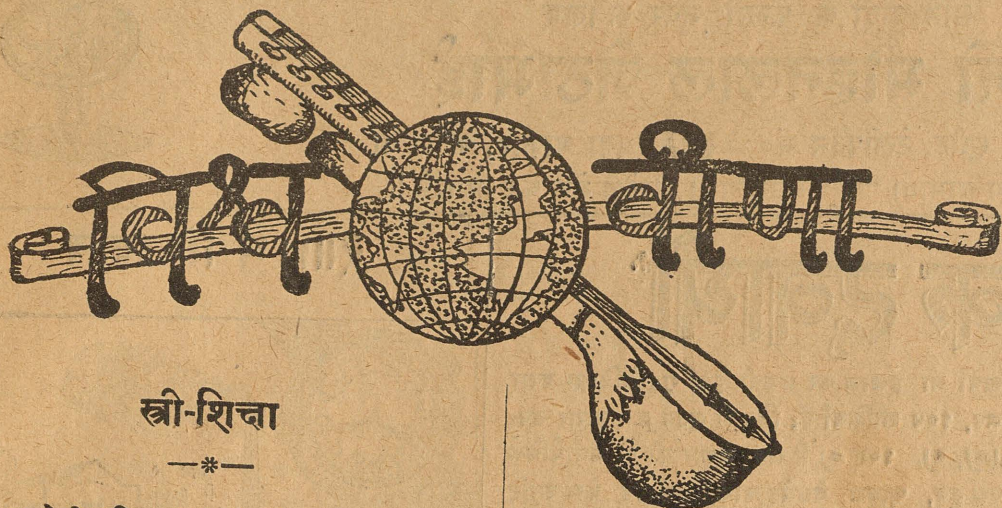
स्त्री-शिक्षा

—*—

सहयोगी 'ट्रिब्यून' में स्त्रियों की शिक्षा का रूप कैसा होना चाहिए, इस पर एक महत्वपूर्ण अग्र-लेख प्रकाशित हुआ है। पाठकों के लाभार्थ उसका भावानुवाद नीचे दिया जाता है :—

प्रोफ़ेसर कर्वे ने भारत में स्त्री-शिक्षा के प्रचार में बड़ा उद्योग किया है। लन्दन के ईस्ट इण्डिया एसोसिएशन में आपने अपने मनोवाञ्छित विषय पर एक व्याख्यान दिया है। उक्त संस्था में प्रकट किए गए विचारों में मतभेद होना स्वाभाविक है। उदाहरण-स्वरूप अङ्गरेज़ी को शिक्षा का माध्यम बनाने अथवा उसे एक महत्वपूर्ण अनिवार्य विषय मान कर उसके स्थान पर कोई आधुनिक भारतीय भाषा के रखने के विषय पर बहुत कुछ कहा जा सकता है। इसी प्रकार आजकल स्त्री-शिक्षा को भारतीय समाज के अनुरूप बनाने के बदले उन्हें पुरुषों की भाँति शिक्षा देने के विषय में दो विचार न केवल सम्भव ही हैं, वास्तव में ऐसा है भी। दूसरे प्रश्न के विषय में हमारा विचार है कि स्त्रियाँ स्वयं ही निर्णय कर लें कि उन्हें किस प्रकार की शिक्षा दी जाय। उनसे यह आशा करना ठीक नहीं कि वे सदा के लिए ही इस प्रश्न को हल कर लें, जब तक कि शिक्षा और अधिक प्रचार उनमें न हो जाय। पहले प्रश्न के विषय में विद्वानों की सम्मति से जान पड़ता है कि यह प्रश्न स्वयं ही हल हो जायगा, जैसा कि पुरुषों के विषय में हुआ है। हाँ, एक बात निश्चय है। साधारण जनता की दृष्टि में और अन्त में स्वयं स्त्रियों की ही दृष्टि में स्त्री-शिक्षा को पतित किए बिना और दोनों—स्त्री और पुरुष—के पब्लिक और प्राइवेट अथवा ऊँची नौकरियों में अधिकार के प्रति उलझन पैदा किए बिना आप लड़कों की शिक्षा के लिए एक माध्यम और लड़कियों के लिए दूसरे माध्यम की व्यवस्था नहीं कर सकते।

जहाँ दो विचार नहीं है अथवा नहीं हो सकता है, वैसा विषय है जैसे 'स्त्री-शिक्षा के प्रचार के लिए एक अत्यन्त साहसपूर्ण मसविदे के बनाने की अत्यधिक आवश्यकता।' प्रोफ़ेसर कर्वे ने कहा है कि भारत में स्त्री-शिक्षा की उन्नति सुस्ती से नहीं, किन्तु शीघ्रतापूर्वक करनी चाहिए, ताकि वर्तमान शिक्षित पुरुषों और स्त्रियों की संख्या में जो असमानता है वह दूर हो जाय। यदि इस असमानता को हम दूर करना चाहें, तो एक बात जो अत्यन्त आवश्यक है वह यह है कि सरकार लड़कियों के स्कूल में उससे अधिक सहायता दे, जितनी कि अभी तक उसने दी है। स्त्रियों और पुरुषों की शिक्षा में कितना अन्तर है अर्थात् स्त्रियाँ कितनी पिछड़ी हुई हैं, इसका पता तभी लग सकता है जब शिक्षितों की संख्या से जन-संख्या का मिलान किया जाय।

शिक्षित-पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की निकटतम पहुँच बर्मा ने किया है, जहाँ कि १९२५-२६ की स्त्रियों की जन-संख्या में २.२७ शिक्षिता हैं और शिक्षित पुरुषों की संख्या ३.७९ फ़ी सदी है। उसी साल में दूसरे बड़े प्रान्तों में शिक्षितों की संख्या इस प्रकार है:—

प्रान्त	स्त्री	पुरुष
मद्रास ...	२.२७ ...	... ८.४
बम्बई ...	२.१५ ...	... ८.२७
बङ्गाल ...	१.७ ...	... ७.४
यू० पी० ...	.५१ ...	... ४.६२
पञ्जाब ...	.८२ ...	... ७.९२
बिहार-उड़ीसा	.६७ ...	... ५.५२

तीन वर्षों से अधिकांश प्रान्तों की दशा कुछ बदल गई है। किन्तु सारांश में अभी ज्यों की त्यों है।

और हमें कहना पड़ता है कि शिक्षा के विषय में स्त्री और पुरुषों में यह गम्भीर असमानता, देश की मानसिक और नैतिक उन्नति के लिए न केवल एक महान बाधा है, किन्तु दोनों जातियों के उस अविच्छिन्न सम्बन्ध पर, जिस पर कि समाज और उसके सदस्यों का सुख निर्भर करता है, यह विपत्ति है। यदि समूचे भारत को लिया जाय तो ३१ मार्च १९२७ को ३.५ मिलियन स्त्री और २२.७ मिलियन पुरुष शिक्षित हैं, जहाँ कि जन-संख्या स्त्रियों की १५९ मिलियन और पुरुषों की १६९ मिलियन है। यह कहना कठिन है कि दोनों में कौन अधिक हृदय-द्रावक है। वह भयङ्कर अज्ञान और निरक्षरों का समूह वा स्त्री-पुरुषों की संख्या में वह महान अन्तर। देश में रहने वाले ३२८ मिलियन जनता में ३०० मिलियन से अधिक एकदम ही निरक्षर भट्टाचार्य हैं, और उन २६ मिलियन में स्त्रियाँ केवल ३.५ मिलियन हैं, जो कि साधारण भाषा में यह कहा जा सकता है कि ⅞ शिक्षित मनुष्यों से अधिक को निरक्षर स्त्रियों से ही सन्तुष्ट रहना पड़ता है। और जो यह जानते हैं कि स्त्रियों का बच्चों के चरित्र और मस्तिष्क पर कितना बड़ा प्रभाव है, वे भविष्य में होने वाले नागरिकों के लिए उनकी मानसिक, सामाजिक और राजनैतिक भलाई के लिए समाज में व्यवस्था कर सकते हैं। वे यह भी समझ सकते हैं कि वास्तव में भारत का स्थान सभी प्रकार से आज कितना ऊँचा होता, यदि अन्तिम ४० वर्षों में शिक्षा का यहाँ उतना ही प्रचार हुआ होता है जितना कि उदाहरण-स्वरूप जापान में हुआ है, और स्त्री और पुरुष दोनों जाति के बीच इस विषय में समानता आ जाती।

यदि हम इस असन्तोषजनक अवस्था का कारण जानना चाहें तो हमें कहना पड़ता है कि यह भारत के राजनैतिक भाग्य-विधाताओं की असहानुभूति है—वह असहानुभूति जो मिल के शब्दों में, एक स्वाभाविक वस्तु है, जब कि एक जाति दूसरी जाति के शासन के अन्तर्गत है। कठोर हदबन्दियों के होते हुए भी जिसके अन्दर मिनिस्टरों को सभी जगह काम करना पड़ता था, उत्तरदायी शासन में भारत ने जो उन्नति की है, वह स्वराज्य और राजनैतिक दासत्व में अन्तर का अन्तिम प्रमाण है।

* * *

सोने-चाँदी के फ़ैन्सी ज़ेवर के लिए

सोनी मोहनलाल जेठाभाई

३२ आरमनी स्ट्रीट, टेलीफोन नं० ३१४३, बड़ा बाज़ार, कलकत्ता

"बी" केटलॉग दाम ।ı) "सी" केटलॉग ı) पोस्टेज भेज कर मँगाइये !
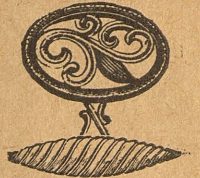
"होमियोपैथीक दवायीं"

५ पैसे फ़ी ड्राम किताब देख कर थोड़ी पढ़ी-लिखी स्त्रियाँ भी इलाज कर सकती हैं। गृहचिकित्सा बक्स असली अमृत तुल्य दवाइयों से भरी १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४, १०४ शीशियाँ हैं; जिनका मूल्य क्रमानुसार उपयोगी हिन्दी पुस्तक तथा ड्रापर सहित २), ३), ३॥), ४।), ६।=), ८), १०॥=) है सब प्रकार की होमियोपैथिक सम्बन्धी पुस्तकें बायोकैमिक दवाएँ ग्लोबिल्स, सुगर आफ़ मिल्क ट्यूब, फ़ायल, वेलवेट कार्क, कार्डबोड केस आदि सस्ते दाम में मिलते हैं। सकूस सनेरेरिया मेरीटेमा बी० टी० मोतियाबिन्द व जाला की शर्तिया दवा, दाम २॥) फ़ी ड्राम।

बी० सी० धार एण्ड ब्रादर्स नं० ८१, क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता

कलकत्तेकी आढ़त

देशी तथा विलायती सब जगहका और सब किस्मका माल भेजा जाता है। बाहरका आया माल यहां बिक्री किया जाता है। आढ़त खरचा मालके मुताबिक लिया जाता है, आर्डरके साथ कुछ दाम पहिले भेज देना होगा दाम पानेके बाद आर्डरके माफिक सब माल ठीक भाव अच्छी चीज वो ठीक समय पर हिफाजतके साथ कम खर्चसे भेज दिया जाता है। माल थोक या खुदरा दोनों तरहसे ही भेजते हैं, जवाबके लिये -) टिकट भेजना होगा।

कमीशन एजेण्ट—भारत भैषज्य भण्डार

नं० ९, मल्लिक स्ट्रीट, (बड़ाबाजार) कलकत्ता।

२॥।) में रिस्टवाच

निकल लीवर रिस्टवाच सिर्फ़ स्टॉक ख़ाली करने के लिए फ़ैक्टरी के दाम में १ महीना के लिए दी जायगी। यह घड़ी देखने में सुन्दर, कल-पुर्ज़े की निहायत मज़बूत, समय बताने में बिल्कुल ठीक, इस दाम में रिस्टवाच आपने सुनी भी न होगी; क़ीमत सिर्फ़ २॥।); गारण्टी ५ साल। डाक-ख़र्च ।=) अलग।

साथ में ख़ूबसूरत बक्स मय एक रेशमी फ़ीता के मुफ़्त मिलता है। स्टॉक थोड़ा है। घड़ी अच्छी तरह देख-भाल कर, पार्सल करने के पहले, भेजी जाती है। ३ घड़ी मँगाने से डाक-ख़र्च माफ़।

ईस्टइण्डिया वाच को० पो० बीडन स्ट्रीट (भी) कलकत्ता

कम क़ीमती और छोटा केमरा ख़रीदना रुपया बर्बाद करना है।

फ़ोटोग्राफ़ी सीख कर

२००) मासिक कमा लो

यह नई डिज़ायन का रॉयल हैण्ड केमरा अभी आया है। इसमें असली जर्मनी लैंस न्यू फ़ाइण्डर और स्प्रिङ्ग शटर लगा है तथा ३।×४। इञ्च के बड़े प्लेट पर टिकाऊ और मनोहर तस्वीर खींचता है। फ़ोटो खींचने में कोई दिक़्क़त नहीं, स्प्रिङ्ग दबाया कि तस्वीर खिच गई। फिर भी शर्त यह है कि—

यदि केमरे से तस्वीर न खिंचे तो

१००) नक़द इनाम

साथ में कुछ ज़रूरी सामान, प्लेट, सैल्फ़ टोनिङ्ग काग़ज़, प्लेट धोने के तीन मसाले, फ़ोटोग्राफ़िक लालटेन, २ तश्तरी, तस्वीर छापने का फ़्रेम, सरल विधि व स्वदेशी बेबी चर्ख़ा मुफ़्त दिया जाता है। मूल्य केवल ४) डाक-ख़र्च ॥)

पता—माधव ट्रेडिङ्ग कम्पनी, अलीगढ़ नं० ४१

गृहस्थों का सच्चा मित्र

३० वर्ष से प्रचलित, रजिस्टर्ड

बालक, वृद्ध, जवान, स्त्री, पुरुषों के शिर से लेकर पैर तक के सब रोगों की अचूक रामबाण दवा। हमेशा पास रखिए। वक़्त पर लाखों का काम देगी। सूची मय कलेण्डर मुफ़्त मँगा कर देखो।

क़ीमत ।॥) तीन शीशी २) डा० म० अलग

पता :—चन्द्रसेन जैन वैद्य, इटावा

उस्तरे को बिदा करो

हमारे लोमनाशक से जन्म भर बाल पैदा नहीं होते। मूल्य १) तीन लेने से डाक-ख़र्च माफ़।

शर्मा एण्ड को०, नं० १, पो० कनखल (यू० पी०)

सुन्दर केलेण्डर

महात्मा गाँधी, पं० मोतीलाल नेहरू, पं० जवाहरलाल नेहरू के रङ्गीन चित्र सहित बिना मूल्य मँगाइए।

पता :—सुधावर्षक प्रेस, अलीगढ़

बिलकुल मुफ़्त

आरोग्य, दौलत और आबादीका सरल रास्ता बतानेवाली "वैद्यविद्या" मुफ़्त मिलती है। आज ही मँगाइये।

राजवैद्य नारायणजी, केशवजी ४

हेड आफिस जामनगर (काठियावाड़)

भूत, भविष्य, वर्त्तमान बताने वाला जादू का

प्लानचेट

मैस्मेरिज़्म विद्या से भरा हुआ यह प्लानचेट गुप्त प्रश्नों का (जैसे रोग, यात्रा, परीक्षा का परिणाम, चोरी, खोए मनुष्य या गड़े धन का पता, व्यापार, रोज़गार में हानि या लाभ। इस वर्ष फ़सल अच्छी होगी या बुरा, विवाह होगा या नौकरी लगेगी कि नहीं, गर्भ में लड़का है कि लड़की। फ़लाँ काम सिद्ध होगा कि नहीं, इत्यादि) ठीक-ठीक उत्तर पेन्सिल द्वारा जिस भाषा में चाहो, लिख देता है। अभ्यास की तरकीब सहित मूल्य २॥) ; डाक-ख़र्च ॥)

पता—दीन ब्रादर्स अलीगढ़, नं० ११

६।) रु० में हर एक घड़ी (गारण्टी ५ वर्ष)
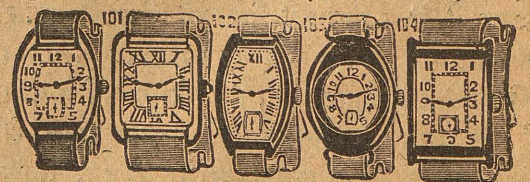
हर एक घड़ी सुन्दर, मज़बूत और नए डिज़ाइन की है। सच्चा समय बताने में अच्छी, क़ीमती घड़ियों के कान काटती है। इसके फ़ीते और बॉक्स को देखकर दिल फड़क उठेगा। १॥।=) में जेब घड़ी गारण्टी ३ वर्ष। सोते को जगानेवाली घड़ी दाम ३।) गारण्टी ५ वर्ष; डा०-ख़०पृथक।

पता—रॉयल स्वीज़ वाच कम्पनी, मुरादाबाद (यू० पी०)

दवाइयों में

ख़र्च मत करो

स्वयं वैद्य बन रोग से मुक्त होने के लिए "अनुभूत योगमाला" पाक्षिक पत्रिका का नमूना मुफ़्त मँगा कर देखिए।

पता—मैनेजर "अनुभूत योगमाला" ऑफ़िस, बरालोकपुर, इटावा (यू० पी०)
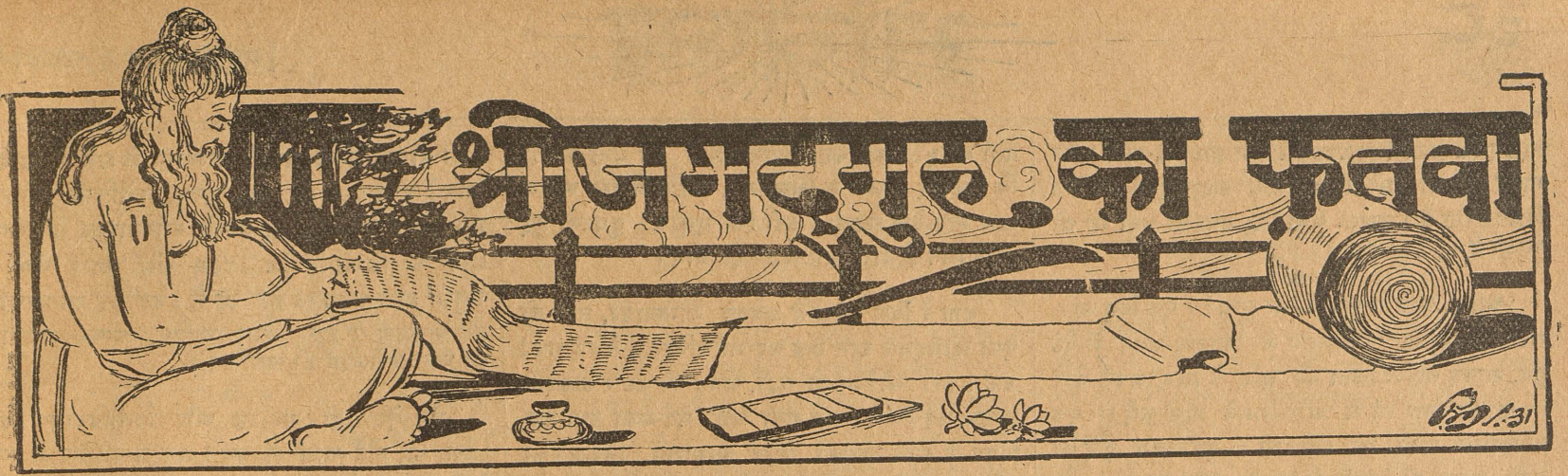
[हिज़ होलीनेस्स श्री० वृकोदरानन्द विरुपाक्ष]

बाबा शाह मदार की दया से बङ्गाल के विख्यात विश्व-प्रेमी दार्शनिक-प्रवर कवि-सम्राट डॉक्टर सर रवीन्द्रनाथ ठाकुर (नहीं, 'टैगोर' क्योंकि 'ठाकुर' शब्द में ठेठ भारतीयता की बदबू भरी है, इसलिए वह विश्व-प्रेम का विघातक है) महोदय की ७०वीं वर्ष गाँठ साङ्गोपाङ्ग एवं निर्विघ्न सम्पन्न हो गई, इसलिए कवि-सम्राट को श्रीजगद्गुरु की ओर से बहुत-बहुत बधाई और महाकवि ग़ालिब के शब्दों में, यह शुभकामना है कि—

तुम सलामत रहो हज़ार बरस,
हर बरस के हों दिन पचास हज़ार !

❀

इस शुभ अवसर पर कविवर के भक्तों ने उन्हें बधाई दी है, इसलिए कविवर ने भी, 'मन तोरा हाजी बगोयम तू मरा हाजी बगो' की प्राचीन नीति के अनुसार, उन्हें अपना एक छोटा सा अलहामी सन्देश देने की कृपा की है। क्योंकि बक़ौल मियाँ नज़ीर अकबराबादी—

कलजुग नहीं, कर-जुग है यह,
यहाँ दिन को दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़द है,
इस हाथ दे उस हाथ ले।
यह सौदा दस्तबदस्ती है !

❀

यद्यपि सौजन्यता के दुर्वह भार से दब कर विश्व-प्रेमी ने कहा है कि "मैं दार्शनिक अथवा पैग़म्बर नहीं हूँ" परन्तु श्रीजगद्गुरु (अगर फाँसी पर लटका दिए जाएँ तो भी) यह बात मानने को तैयार नहीं हैं। क्योंकि आपकी वह श्रीजगद्गुरु की सी तुषार-शुभ्र दाढ़ी, आपाद विलम्बित अरबानी चोग़ा, नवोढ़ा-विनिन्दित व्रीडावनत मुखभङ्गिमा और ग़ुलाम देश में जन्म लेकर भी विश्व-प्रेम की बाँग, बाप क़सम, चिल्ला-चिल्ला कर कह रही है कि आप पैग़म्बर हैं !

❀

और, फिर पैग़म्बर के सिवा किस के बाप की मजाल है जो कह दे, कि चर्ख़े और खद्दर से कुछ नहीं होगा, राष्ट्रीय पताका कोई चीज़ नहीं और अब से 'बन्देमातरम्' न कह कर 'बन्देभारतम्' कहा जाए ? हमारी तो दृढ़ धारणा है, कि पैग़म्बर होने के कारण ख़्वाजा ख़िज़्र या जिब्राइल ने ही ये बातें श्रीमान को बताई होंगी अथवा शान्ति-निकेतन के शीतल-स्निग्ध लता-कुञ्ज में थिरक-थिरक कर, विकासोन्मुखी किशोरियों को नृत्य-कला सिखाते-सिखाते 'अलहाम' हुआ होगा। ऐसी दशा में हम कैसे मान लें कि श्रीमान पैग़म्बर नहीं हैं !

❀

आपके पर-पदानत पर-पददलित पराधीन देश-वासी देश और विदेश में ठोकरें खाते हैं ; विश्व उन्हें पराधीन—ग़ुलाम—समझ कर उनसे घृणा करता है और आप उन्हीं में से एक होकर विश्व-प्रेम के गीत गाते हैं, आपके करोड़ों देश-भाई भूखों मर रहे हैं और आप शान्ति-निकेतन के उपवन परिवेष्टित बँगलों में 'बीसवीं' सदी की सभ्यतानुमोदित महन्ती के मज़े लेते हैं, बेचारे ग़रीब अपने देश को आर्थिक अधःपतन से बचाने के लिए खद्दर और चर्ख़े का आश्रय ले रहे हैं और आप उसकी निन्दा कर रहे हैं, आपके पराधीनता-पीड़ित देश-वासी मातृ-भूमि को बन्धन-मुक्त करने की चेष्टा में फाँसी पर लटक रहे हैं, लाठियों से सिर फुड़वा रहे हैं, जेलों में सड़ रहे हैं और अपने सारे सुखों को छोड़ कर दरिद्रता का आलिङ्गन कर रहे हैं और उन्हें भावुकतापूर्ण प्रदर्शन-कारी समझ रहे हैं। ऐसी दशा में भला बताइए तो सही, हम कैसे मान लें कि आप पैग़म्बर नहीं हैं ?

❀

आप मानिए या न मानिए, अपने राम तो डङ्के की चोट कहेंगे, कि आप पैग़म्बर हैं। क्योंकि आप नाचते हैं, गाते हैं, कविता लिखते हैं, एम्पायर थिएटर में 'एक्टिङ्ग' करते हैं, शान्ति-निकेतन में वसन्तोत्सव और ग्रीष्मोत्सव मनाते हैं, छात्रों और छात्रियों को देशोद्धारिणी ललित कलाओं की शिक्षा देते हैं, व्याख्यान देते हैं, भारत को ग़ुलाम बनाने वालों ने 'रवीन्द्र' होने पर भी आपको "नाइट" (रात ?) की पदवी से विभूषित किया है और इसके सिवा कभी-कभी आप 'दाल-भात में मूसरचन्द' की तरह करघे और चर्ख़े में भी टाँग अड़ा दिया करते हैं। यह सब पैग़म्बरी औसाफ़ नहीं हैं तो क्या हैं ?

❀

जिस चर्ख़े और करघे ने मान्चेस्टर और लङ्काशायर की मोटी तोंदों में भूकम्प मचा दिया है, जिसका आश्रय पाकर देश में लाखों बेकार 'सा-कार' हो गए हैं और अनाथाएँ विधवाएँ जिसकी बदौलत सूखी रोटियाँ पा जाती हैं, उसके सम्बन्ध में, कौन कम्बख़्त आप जैसे कोरे कवि से पूछने गया था कि 'वह अच्छा है या बुरा ?' कौन यह जानना चाहता था, कि बन्देमातरम् कहना उचित है या बन्देपितरम् ? किसे आपसे यह उपदेश ग्रहण करने का ख़ब्त सवार था कि राष्ट्रीय प्रतीक का सम्मान किया जाए या नहीं ? यह सम्पूर्ण अयाचित भाव से ग़रीब देश पर 'रहमत की बारिश' आपने पैग़म्बर होने के कारण ही तो किया है ! वरना, इस बेवक़्त की शहनाई की आवश्यकता ही क्या थी ?

❀

इतने पर आप कहते हैं कि "मैं पैग़म्बर नहीं हूँ !" आह प्रभो ! क्यों इस तरह की बातें कह कर अज्ञानान्धकार में फँसे हुए प्राणियों को भुलावे में डाल रहे हैं ? विश्व-नियन्ता की रची हुई भव-भ्रान्ति ही क्या कम थी, जो दयामय एक नवीन भ्रान्ति-जाल में बेचारों को जकड़ रहे हैं ? यह तो कहिए कि पैग़म्बरों की रग पहचानने वाले श्रीजगद्गुरु अभी जीते हैं, वरना ये 'आँख के अन्धे नाम नयनसुख' सचमुच मान बैठते कि आप पैग़म्बर नहीं हैं। भला श्रीमुख से निकली हुई वाणी पर कौन कमबख़्त अविश्वास कर सकता था ?

❀

सचमुच ये देशोद्धार के लिए ज़हमतें उठाने वाले कोरे भावुक हैं और "अपनी सब शक्तियों को भावुकता-पूर्ण प्रदर्शनों में ही ख़र्च" किए डालते हैं और "उनको कार्यरूप में परिणत" नहीं करते। इसका कारण यह है कि ये श्रीमान की तरह 'रियलिस्ट' नहीं हैं। इसीसे इन्हें चन्द्रमण्डल में 'रमणी-मुख' नहीं दिखाई देता और न वायु-विताड़ित शाल्मली शाखा की मर्मर-ध्वनि में मियाँ तानसेन का धम्मार तथा निर्झरिणी के कल-निदान में बैजू बावड़ा का ध्रुपद ही सुनाई देता है।

❀

काश, महात्मा गाँधी, स्व० लाला लाजपतराय, स्व० लोकमान्य, स्व० देशबन्धु, स्व०पं० मोतीलाल और पण्डित मालवीय जी आदि निरे भावुक न होकर सर रवीन्द्र की भाँति ही 'यथार्थवादी' होते, तो माशा अल्लाह बड़ा मज़ा रहता। सारा देश हवा के झोंके में विरह-वेदना का हाहाकार सुना करता, कोयल की कूक में विहाग के मज़े मिलते, हिमालय की बर्फ़ीली चोटियाँ शुभ्र किरीटधारी किन्नरों के रूप में दिखाई देतीं और कलकत्ते के चिड़ियाख़ाने में बङ्गालियों की 'कन्सर्ट पार्टी' का मज़ा मिलता।

❀

और सुनिए, प्रत्येक प्रान्त में एक-एक 'शान्ति-निकेतन' और उनकी दुमों में 'विश्व-भारतीयाँ' होतीं। कभी 'चन्दन के गोल तिलक' पर पुस्तक लिख कर मालवीय जी सवा लाख का 'नोबुल प्राइज़' फटकारते और घेलुए में 'सर' बन जाते और कभी 'नारायण' मासिक पत्र में वैष्णव धर्म की प्रशंसा करने के कारण श्री० देशबन्धु को अमेरिका से निमन्त्रण मिलता। कहीं कविता की मन्दाकिनी प्रवाहित होती और कहीं पूर्वी हवा में सङ्गीत की मूर्च्छना सुनाई देती। बस, फिर क्या ? देश एकदम उन्नति के सातवें आसमान पर पहुँच जाता और दादा मुग्धानन्द देव एक ख़रीते में स्वराज बन्द करके रवीन्द्र बाबू के पास भेज देते।

❀

मगर यहाँ तो इस लँगोटी वाले ने मुनक्क़े खाकर ऐसा रङ्ग जमाया है, कि विश्व-प्रेम का गीत गाए बिना ही सारा विश्व उसके चरणों में नत-मस्तक हो रहा है, इसलिए उसके कामों में नुक़्ताचीनी करके—जिस क्षेत्र में सम्मान प्राप्त करने की योग्यता, साहस और अधिकार नहीं है, उसमें भी टाँग अड़ा कर—थोड़ी सी सुख्याति झटक लेने में बुराई ही क्या है ? और न होगा तो 'मान न मान, मैं तेरा मेहमान' वाली कहावत ही चरितार्थ हो जाएगी।

❀

अन्यथा, हमें जहाँ तक मालूम है, कविवर श्रीजगद्गुरु की तरह बूटी भी नहीं छानते जो नशे के झोंक में बहक गए होंगे। हाँ, यह बात ठीक है कि बेचारे कल्पना-जगत् के जीव हैं, कल्पना कर लिया होगा, कि चर्ख़े की घरघराहट कविता की बाधक है। इसलिए कभी-कभी चौंक उठते हैं और प्रसङ्ग-अप्रसङ्ग की परवाह न करके उसके सम्बन्ध में कुछ कह देते हैं। क्योंकि हमें जहाँ तक याद है, इस सम्बन्ध में यह आपका तीसरा या चौथा स्तुत्य-प्रयत्न है। इसलिए उन्हें समझ लेना

चाहिए कि चर्ख़ा "साऊण्डलेस" भी होता है और 'मौन भाषा' में भी ग़रीबों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित किया करता है। फलतः बेचारे पर दया ही बनी रहे तो अच्छा है।

❀

आइए, आपको एक क़िस्सा सुनाएँ। एक दिन कवि-सम्राट अपने शान्ति-निकेतन के 'आनन्द-भवन' में बैठे हुए, शायद तपोज्ज्वलता की वृद्धि के लिए, अपने चेहरे पर पाइडर लगा रहे थे और सामने वाले कुएँ से एक पनिहारिन पानी भर रही थी। संयोगवश कुएँ की पक्की जगत की ठोकर से उसका घड़ा फूट गया और सारा जल ज़मीन पर फैल गया।

❀

कविवर का कोमल हृदय भला यह दारुण दृश्य कैसे देख सकता? आप सिर थाम कर झुक पड़े और बड़ी देर तक बेहोशी की हालत में पड़े रहे। अन्त में ईश्वर के अनुकम्पा की! विश्व के भाग्य से आपकी मूर्च्छा भङ्ग हुई तो आपने करुण-कोमल स्वर में अपने किसी पारर्व-वर्ती को बुला कर कहा—पनिहारिनों को मना कर दो कि इस कुएँ से जल न लिया करें, क्योंकि मैं ऐसा भीषण दृश्य नहीं देख सकता। कहीं फिर ऐसी ही दुर्घटना हुई तो सम्भव है, मेरा 'हार्ट-फ़ेल' हो जाए।

❀

वाह रे विश्व! बेटा है प्रचण्ड भाग्यवाला, तभी तो ऐसा लोमहर्षण दृश्य देख कर भी कविवर जीते रह गए! उफ़! ज़रा सोचिए तो सही, जगत की कठोर ठोकर से मासूम घड़े का पेट फट गया और मेद-मज्जा तथा हृत्-पिण्ड के साथ उसका सारा आमाशय, निकल कर पृथिवी पर फैल गया। ठोकर लगने के समय उसके मुँह से जो करुण-कातर ध्वनि निकली होगी, वह कितनी हृदय-विदारिणी रही होगी, उसे, हे चर्ख़े की घरघराहट में दिन-रात रहने वाले कठोर-हृदय प्राणी, तुम नहीं समझ सकते!!

❀

श्रीजगद्गुरु के 'तोंद-फ़ेलो' अर्थात् मौलाना मद ज़िल्लहू आजकल कलकत्ते में 'ठण्डा शर्बत' और फ़ौज-दारी बालाख़ाने के अम्बूरी तम्बाकू के मज़े ले रहे हैं। आपके उद्योग से जो वहाँ पृथक निर्वाचिनी मुस्लिम मजलिस होने वाली है, उसके स्वागताध्यक्ष ने मुसल-मानों को लिखा है कि—"हम लोग चारों ओर से शत्रुओं द्वारा आक्रान्त हो रहे हैं। इसलिए आत्मरक्षार्थ हमें प्राणपण से जङ्ग करना चाहिए, अन्यथा इस्लाम का ध्वंस अनिवार्य ही समझिए।"

❀

ठीक ऐसा ही भयावह और विभीषिकापूर्ण पत्र लिखा था, पोर्ट आर्थर के बन्दी जनरल स्टोसेल ने रूस के ज़ार को! परन्तु अपने राम का तो कहना है कि ख़ौफ़ज़दा होने की कोई बात नहीं, क्योंकि अकेले एक लाख गाँधियों से लड़ने वाले घटोत्कचोपम उदर धारी मौलाना तो मौजूद ही हैं। जहाँ इन्होंने भारतव्यापी साम्प्रदायिक दङ्गे की धमकी दी, कि बस, क़िला फ़तह! मुशुण्डि के मुँह के सामने किसकी मजाल है जो ठहर सकेगा?

* * *

धोखा साबित करनेवालेको ५००) रु० ईनाम ।

नीचे लिखी दवाओंमें एकही या मिलाकर १२ शीशी लेनेसे मजबूत टाईमपीस, २४ लेनेसे असली रेलवे पाकेट ३६ लेनेसे सुनहरी कलाई घड़ी मुफ्त ईनाम । प्रत्येक घड़ीकी गारन्टी ३ वर्ष । डाक खर्च अलग देना होगा ।

[नोट—अर्क कपूर ।) पुदीना ।=) का ।), सुरमा ॥) का, कामिनी तैल ॥।) का ॥), कीमत कम करके भी पूरी ईमानदारीके साथ असली घड़ियां ईनाममें दी जा रही हैं । २७००० से ज्यादा ग्राहक और एजेन्ट हो चुके हैं । व्यापारियों-को खास दर, सूचीपत्र मुफ्त मंगाकर देखिये, जरूर सन्तुष्ट होंगे ।]

अर्क कपूर—हैजेकी शर्तिया दवा	कीमत ।)	**दादका मलहम**—२४ घंटेमें शर्तिया फायदा कीमत	।)
अर्क पुदीना सब्ज—अजीर्ण व पेट दर्द आदिमें	„ ।)	**प्राणदा**—सब तरहके बुखारोंमें अक्सीर	„ ।)
अर्क पीपरमेन्ट (तैल)—खाने व लगानेका	„ ।)	**सप्तगुण तैल**—जला, चोट, वाय-दर्द आदिमें	„ ।)
सुरमा—भीमसेनी कपूरसे बना हुआ	„ ।)	**अग्निमुख चूर्ण**—अत्यन्त्य स्वादिष्ट पाचक	„ ।)
नमक सुलेमानी—पेट रोगोंमें मशहूर	„ ।)	**कामिनी विलास तैल**—सुगन्ध की खान	„ ॥)

पता—श्रीवैद्यनाथ आयुर्वेद भवन, हेड आफिस १०६, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, पोष्टबक्स ६८३५, कलकत्ता ।

हिन्दी हैण्ड प्रेस

हिन्दी भाषा प्रेमियो ! आप इसमें कार्ड, लिफ़ाफ़ा, चैक, रोज़-मिती के पर्चे, छोटे-छोटे इश्तहार आदि छोटे काम स्वयं तुरन्त छाप कर काम में लाइए । बड़े काम की चीज़ है । शीशा धातु के अक्षर, मात्राएँ व स्पेस मिला कर ४०० टाइप हैं । प्रेस का साइज़ ७ इञ्च लम्बा और ४ इञ्च चौड़ा है । छापने के अन्य सामान, स्याही की डिब्बी और छापने की विधि साथ में मौजूद है । मूल्य ५), डा० म० १) इसके लिए अधिक टाइप और स्याही भी हमारे यहाँ बिकती है ।

पता—मैनेजर देशबन्धु कार्यालय,
मु० बिहारघाट, पो० राजघाट, ज़ि० बुलन्दशहर

[illegible]

पढ़ कर गुप्त विद्या द्वारा जो चाहोगे बन जाओगे जिस की इच्छा करोगे मिल जावेगा मुफ़्त मंगवाओ पता साफ़ लिखो ।

गुप्त विद्या प्रचारक आश्रम, लाहौर

डॉ० डब्लू० सी० राय, एल० एम० एस० की

पागलपन की दवा

५० वर्ष से स्थापित

मूर्च्छा, मृगी, अनिद्रा, न्यूरस्थेनिया के लिए भी मुफ़ीद है । इस दवा के विषय में विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ कहते हैं कि :—"मैं डॉ० डब्लू० सी० राय की स्पेसिफ़िक फॉर इन्सेनिटी (पागलपन की दवा) से तथा उसके गुणों से बहुत दिनों से परिचित हूँ ।" स्वर्गीय जस्टिस सर रमेशचन्द्र मित्र की राय है—"इस दवा से आरोग्य होने वाले दो आदमियों को मैं ख़ुद जानता हूँ ।" दवा का दाम ५) प्रति शीशी ।

पता—एस० सी० राय एण्ड कं०,
१६७ ३ कार्नवालिस स्ट्रीट,
या (३६ धर्मतल्ला स्ट्रीट) कलकत्ता !
तार का पता—"Dauphin" कलकत्ता

ऐसा कौन है जिसे फ़ायदा नहीं हुआ ?

तत्काल गुण दिखाने वाली ४० वर्ष की परीक्षित दवाइयाँ

शरीर में तत्काल बल बढ़ाने वाला, क़ब्ज़, बदहज़मी, कमज़ोरी, खाँसी और नींद न आना दूर करता है । बुढ़ापे से कारण होने वाले सभी कष्टों से बचाता है । पीने में मीठा स्वादिष्ट है । क़ीमत तीन पाव की बोतल २) छोटी १) रु०, डाक-ख़र्च जुदा ।

बच्चों को बलवान, सुन्दर और सुखी बनाने के लिए सुख-सञ्चारक कम्पनी मथुरा का मीठा **"बालसुधा"** पिलाइए ! क़ीमत ॥।) आना डा० ख़० ॥)

सब दवा बेचने वालों के पास मिलती हैं । धोखे से नक़ली दवा न ख़रीदिए !

पता—सुख-सञ्चारक कम्पनी, मथुरा

सफल माता

शिशु-पालन-सम्बन्धी सैकड़ों अङ्गरेज़ी, हिन्दी, बङ्गला, उर्दू, मराठी, गुजराती तथा फ्रेन्च पुस्तकों को पढ़ कर लिखा गया प्रामाणिक ग्रन्थ-रत्न ! इसे प्रत्येक ऐसे माता-पिता को मनन करना चाहिए, जिसे अपनी सन्तान से प्रेम है ! मूल्य केवल २) 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, २८ एडमॉन्स्टन रोड, इलाहाबाद

हमारे दोस्त सफल हुए

बाबू परमेश्वरप्रसाद, गुदरी बाज़ार दारजिलिङ्ग से १६ ता० सितम्बर की चिट्ठी में इस प्रकार लिखते हैं—"कृपा कर एक जड़ी भेज दीजिए, हमारे मित्र को आपकी जड़ी से पूरा लाभ हुआ है ।"

तिब्बत व हिमालय की कन्दराओं में अनेक दिन खोज करते-करते घूमते-फिरते एक बार यह जड़ी एक लामा योगी से प्राप्त हुई है, जिसके धारण करने मात्र से नीचे लिखे सब काम पूरे होते हैं । इसमें सन्देह नहीं । मँगाते समय अपना नाम व काम ज़रूर लिखिए । एक जड़ी का मूल्य ३॥) डाक-ख़र्च ।=) अलग । ३ जड़ी एक साथ मँगाने वाले को ६।=) में मय डाक-ख़र्च के मिलेगी, जिन्हें विश्वास हो, वही मँगावें । शपथपूर्वक लिखने से क़ीमत वापिस दी जाती है ।

(१) वशीकरण—के लिए इससे ज़्यादा आज़माई हुई कोई चीज़ संसार में नहीं ; स्त्री-पुरुष दोनों के लिए मूल्य ३॥) (२) रोग से छुटकारा—पुराना ख़राब से ख़राब असाध्य कोई भी रोग क्यों न हो, शर्तिया आराम मूल्य ३॥) (३) मुक़दमा—चाहे जैसा पेचीदा से पेचीदा हो ; मगर इससे शर्तिया जीत होगी, मूल्य ३॥) (४) रोज़गार—तिजारत में लाभ न होता हो, हमेशा घाटा होता हो, उनका रोज़गार लगेगा, लाभ होगा मूल्य ३॥) (५) नौकरी—जिनकी नौकरी नहीं लगती हो, बेकार बैठे हों या हैसियत की नौकरी न मिलती हो, ज़रूर होगी मू० ३॥) (६) परीक्षा—प्रमोशन में इससे ज़रूर कामयाबी मिलेगी, विद्यार्थी और नौकरी-पेशा ज़रूर आज़माइश करें मूल्य ३॥) (७) शत्रु-विजय—दुश्मन सख़्त से सख़्त क्यों न हो, उसके ऊपर एक बार विजय ज़रूर मिलेगी मूल्य ३॥) (८) तन्दुरुस्ती के लिए यह अपूर्व है, थोड़े ही समय में स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव पड़ता है मू० ३॥) रु० ।

पता—विजय लौज, पोस्ट सलकिया, हवड़ा (बङ्गाल)

शीघ्रता कीजिए !
नहीं तो पछताना पड़ेगा !!
मूल्य लागत मात्र केवल ४) रु०
स्थायी ग्राहकों से केवल ३) रु०
व्यङ्ग-चित्रावली
यह चित्रावली भारतीय समाज में प्रचलित वर्तमान कुरीतियों का जनाज़ा है। इसके प्रत्येक चित्र दिल पर चोट करने वाले हैं। चित्रों को देखते ही पश्चात्ताप एवं वेदना से हृदय तड़पने लगेगा; मनुष्यता की याद आने लगेगी; और सामाजिक क्रान्ति की भावना प्रबल वेग से हृदय में उमड़ने लगेगी। प्रत्येक सामाजिक कुरीतियों का चित्रों द्वारा नग्न प्रदर्शन किया गया है। बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, छुआछूत, परदा-प्रथा, पण्डे-पुरोहितों तथा साधु-महन्तों के भयङ्कर कारनामे, अन्ध-विश्वास, पाखण्ड तथा आचरण सम्बन्धी नाना प्रकार की नाशकारी कुरीतियों का सजीव चित्र देखना हो तो इस चित्रावली को अवश्य मँगाइए। एकरङ्गे, दुरङ्गे, तथा तिरङ्गे चित्रों की संख्या लगभग २०० है। प्रत्येक चित्रों के नीचे बहुत ही सुन्दर पद्यमय पंक्तियों में उनका भाव तथा परिचय अङ्कित किया गया है। आज तक ऐसी चित्रावली कहीं से प्रकाशित नहीं हुई। मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)
स्मृति-कुञ्ज
नायक और नायिका के पत्रों के रूप में यह एक दुखान्त कहानी है। हृदय के अन्तःप्रदेश में प्रणय का उद्भव, उसका विकाश और उसकी अविरत आराधना की अनन्त तथा अविच्छिन्न साधना में मनुष्य कहाँ तक अपने जीवन के सारे सुखों की आहुति कर सकता है—ये बातें इस पुस्तक में अत्यन्त रोचक और चित्ताकर्षक रूप से वर्णन की गई हैं। आशा-निराशा, सुख-दुख, साधन-उत्सर्ग, एवं उच्चतम आराधना का सात्विक चित्र पुस्तक पढ़ते ही कल्पना की सजीव प्रतिमा में चारों ओर दीख पड़ने लगता है। मूल्य केवल ३); स्थायी ग्राहकों से २।)
मूर्खराज
यह वह पुस्तक है, जो रोते हुए आदमी को भी एक बार हँसा देती है। कितना ही चिन्तित व्यक्ति क्यों न हो, केवल एक चुटकुला पढ़ने से ही उसकी सारी चिन्ता काफ़ूर हो जायगी। दुनिया के झंझटों से जब कभी आपका जी ऊब जाय, इस पुस्तक को उठा कर पढ़िए, मुँह की मुर्दनी दूर हो जायगी, हास्य की अनोखी छटा छा जायगी। पुस्तक को पूरी किए बिना आप कभी न छोड़ेंगे—यह हमारा दावा है। इसमें किशनसिंह नामक एक महामूर्ख व्यक्ति की मूर्खतापूर्ण बातों का संग्रह है। भाषा अत्यन्त सरल तथा मुहावरेदार है। मूल्य केवल २)
अपराधी
सच जानिए, अपराधी बड़ा क्रान्तिकारी उपन्यास है। इसे पढ़ कर आप एक बार टॉल्सटॉय के "रिज़रेक्शन" विक्टर ह्यूगो के "लॉ मिज़रेबुल" इबसन के "डॉल्स हाउस" गोस्ट और ब्रियो का "डैमेज्ड गुड्स" या "मेटरनिटी" के आनन्द का अनुभव करेंगे। किसी अच्छे उपन्यास की उत्तमता पात्रों के चरित्र-चित्रण पर सर्वथा अवलम्बित होती है। उपन्यास नहीं, यह सामाजिक कुरीतियों और अत्याचारों का जनाज़ा है !!
सच्चरित्र, ईश्वर-भक्त विधवा बालिका सरला का आदर्श जीवन, उसकी पारलौकिक तल्लीनता, बाद को व्यभिचारी पुरुषों की कुदृष्टि, सरला का पतित किया जाना, अन्त को उसका वेश्या हो जाना, ये सब ऐसे दृश्य समुपस्थित किए गए हैं, जिन्हें पढ़ कर आँखों से आँसुओं की धारा बह निकलती है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल तथा मधुर है। मूल्य केवल लागत मात्र २।), स्थायी ग्राहकों से १॥।=)
व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Registered No. A—2085

ये बच्चे क्या चाहते हैं ?

हिन्दी में बालक-बालिकाओं के लिए यही सबसे अच्छा, सबसे सस्ता और सबसे सुन्दर सचित्र मासिक पत्र है।

सम्पादक—श्रीनाथसिंह

वार्षिक मूल्य २॥)

एक प्रति ।=)

बाल-सखा

बाल-सखा लड़कों का सखा है।

बाल-सखा लड़कियों की सहेली है।

यह चिट्ठी आपके लिए है

प्रिय महोदय,

यदि आपके घर में बच्चे हैं तो आपको यह ज़रूर चिन्ता रहती होगी कि वे पढ़-लिख कर होशियार हों और उनका जीवन सुखमय हो। इसके लिए आप उन्हें स्कूल भेजते होंगे, घर पर मास्टर रख कर पढ़ाते होंगे और भी बहुत कुछ करते होंगे। परन्तु इस युग में इतना ही काफ़ी नहीं है। यह प्रतिद्वन्द्विता का युग है। हर एक मनुष्य दूसरों से बाज़ी मार ले जाना चाहता है। इसलिए बच्चों के हाथ में वह सब साधन देना, जिनसे वे अपनी उन्नति के मार्ग में तेज़ी से बढ़ सकें, हर एक माता-पिता का कर्तव्य है।

अपने बच्चों के भविष्य-निर्माण में आप थोड़ी सी सेवा हमसे क्यों न लीजिए? गत १६ वर्षों से बाल-सखा द्वारा हम यही कार्य कर रहे हैं। हमारा यह अनुभव है कि बाल-सखा पढ़ने वाले बच्चे अन्य बच्चों की अपेक्षा बहुत तेज़ हो जाते हैं और हर बात को आसानी से समझ लेते हैं। उनका पढ़ना और लिखना तो दुरुस्त होता ही है, वे बिना मेहनत इतिहास, भूगोल, गणित, विज्ञान आदि विषय बड़े मज़े में सीख जाते हैं। यदि आप किसी ऐसे लड़के से बातचीत करें, जो बाल-सखा पढ़ता है, तो आप बिना उसकी तारीफ़ किए न रहेंगे। बाल-सखा में बालक-बालिकाओं की रुचि का बड़ा ख़्याल रक्खा जाता है। बाल-सखा में जो लेख निकलते हैं वे बाल-रुचि के अच्छे से अच्छे जानकारों के लिखे होते हैं। और फिर भाषा इतनी दिलचस्प और इतनी सरल होती है कि बालक इसे बिना पढ़े नहीं छोड़ते। आप स्वयं बाल-सखा के ग्राहक बन कर देख सकते हैं कि एक ही साल में आपके बच्चे क्या से क्या हो जाते हैं। आजकल इसकी इतनी माँग बढ़ गई है कि नए अङ्क बच ही नहीं पाते, परन्तु यदि आप देखना चाहें और हमें एक कार्ड लिखें तो आपको हम इसकी नई संख्या भेज सकते हैं। अब बाल-सखा और भी अच्छा निकल रहा है। पहले से बहुत अच्छा। पर इसका वार्षिक मूल्य प्रचार के ख़्याल से हमने सिर्फ़ २॥) ही रक्खा है। यानी सिर्फ़ ढाई रुपए में आपके बच्चे सालभर बाल-सखा पढ़ सकते हैं। यदि आप बाल-सखा मँगाना चाहें तो नीचे लिखे पते पर २॥) मनी-ऑर्डर द्वारा भेजें या लिखें हम वी० पी० भेज दें। इस सम्बन्ध में और कुछ जानना चाहें तो भी हमें ज़रूर लिखें।

आपका—मैनेजर बाल-सखा

मिस्टर गज्जू क्या भूल रहे हैं !

बताइए यह कौन जानवर है ?

मिलने का पता :—

मैनेजर बाल-सखा

इण्डियन प्रेस, लिमिटेड

इलाहाबाद

बाल-सखा पढ़ने वाले लड़के ऐसा हाथी बना कर उँगली पर झुला सकते हैं।
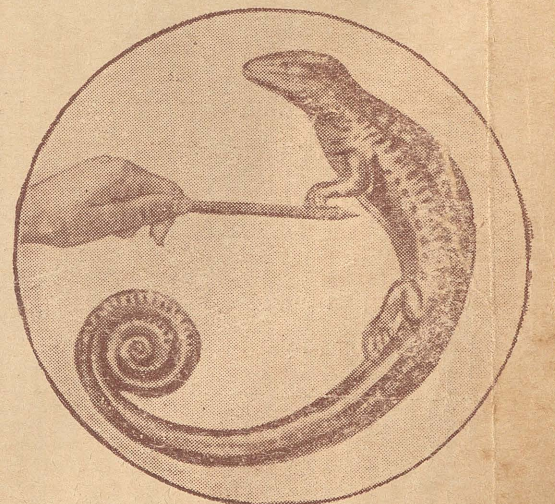
यह खेल भी लड़के बना लेते हैं। ऐसी बहुत सी बातें बाल-सखा में प्रति मास निकलती रहती हैं।

Printed and Published by Tribeni Prasad B. A.—Editor, at The Fine Art Printing Cottage
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad